भारत के तीन नेता

लेखक
यशपाल शर्मा
योगेन्द्र शर्मा

१६६६
साहित्य-प्रकाशन
मालीवाड़ा, दिल्ली

प्रकाशक साहित्य-प्रकाशन
१४५८, मालीवाडा, दिल्ली

मूल्य 3 50 रु०
प्रथम सस्करण १९६६

मुद्रक
रामाकृष्णा प्रेस
कटरा नील
दिल्ली

आदर्श वीरता के प्रमाण प्रस्तुत किए ।

अग्र`जी शासन-काल मे भी पजाब ने भारतोय इतिहास के पन्नो मे कुछ ऐसे नाम अकित किए जिनकी अमिट छाप भारतवासियो के हृदय-पटल पर सर्वदा अकित रहेगी । इन वीरो मे स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपतराय, सरदार भगत-सिह, राजगुरु और सुखदेव के नाम उल्लेखनीय है ।

इन वीरो मे से पजाब केसरी लाला लाजपतराय भारतीय जनता के उन नेताओ मे से थे जो सिह के समान निर्भीक, तपस्वी जैसे त्यागी, क्रातिकारी जैसे साहसी, किसान जैसे मर्मठ और नेपोलियन जैसे सेनानी थे । लाला लाजपत-राय ने आजीवन अग्रेजी साम्राज्यवाद से टक्कर ली और अन्त मे समर-भूमि मे आहत होकर ही प्राण-त्याग किया ।

लाला लाजपतराय भारत माता के उन सपूतो मे से थे, जिन्होने सीना तानकर अग्रेज शासको की डडो की मार के नीचे अपना सिर अडा दिया । पजाब केसरी लाला लाजपतराय भारतीय जनता के उन नेताओ मे से थे जिनके सकेत पर भारत के नौजवान अपने शीश वलिवेदी पर चढाने को सर्वदा उद्यत रहते थे ।

लाला लाजपतराय का नाम केवल भारतवर्ष मे ही नही वरन् विदेशो मे भी आपका यश फैलगया था । आपकी विद्वता के समक्ष विदेशी विद्वानो ने भी सिर झुकाया था । आपका नाम भारत मे सर्वदा श्रद्धा के साथ लिया जाएगा ।

लाला लाजपतराय का जन्म २८ जनवरी सन् १८६५ मे

लाला राधाकृष्ण के परिवार मे हुआ । लाला राधाकृष्ण फीरोजपुर जिले के ढोडि नामक ग्राम के निवासी थे । आप एक तहसीली स्कूल के शिक्षक थे ।

लाला लाजपतराय ने अपनी आरम्भिक शिक्षा गाँव के स्कूल मे आरम्भ की । छै वर्ष तक गाँव के स्कूल मे शिक्षा प्राप्त करके आपने लुधियाना मिशन स्कूल मे प्रवेश प्राप्त किया । जब आपके पिता की अम्बाले मे नियुक्ति हुई तो आप भी उनके पास अम्बाला चले गए ।

सन् १८८० ई० मे आपने मेट्रिक की परीक्षा पास की । इस परीक्षा मे आप इतने अच्छे अकों से पास हुए कि आपको वजीफा मिला । लडके की योग्यता पर मुग्ध होकर लाला लाजपतराय के पिताजी ने उन्हे गवर्नमेन्ट कॉलेज मे पढने के लिए भेजा । वही से आपने एफ० ए० की परीक्षा पास की ।

एफ० ए० पास करके आपने मुख्त्यारगोरी पास की । आप विद्यालय की शिक्षा मात्र तक ही सीमित नही रहे । आपने वास्तविक शिक्षा सार्वजनिक जीवन से प्राप्त की । उस समय के सार्वजनिक जीवन मे जो-जो विचारधाराएँ चल रही थी उन सभी का लाला लाजपतराय पर प्रभाव पडा ।

लाला लाजपतराय स्वभाव से ही परोपकारी और त्यागी मनोवृत्ति के थे । किसी के दुख को देखना आपको असहनीय हो उठता था । जब तक आप उसके दुख को बँटा नही लेते थे तब तक आपको चैन नही पडती थी । यह प्रवृत्ति आपके शिक्षा-काल मे भी आपके चरित्र मे विद्यमान थी ।

आपके विद्यार्थी-जीवन-काल मे ही पजाब का वातावरण स्वामी दयानन्द सरस्वती के सुधारवादी विचारो से गूज उठा था। सन् १८७७ मे लाहौर के आर्य समाज मे लाहौर मे आर्य समाज की स्थापना हुई। उन दिनो आर्य समाज ने भारतीय समाज के समक्ष क्रातिकारी विचारो को प्रस्तुत किया था। आर्य समाज ने लोक सेवा का मार्ग प्रशस्त किया।

इस विचार धारा ने पजाब के विचारको, विद्वानो तथा प्रतिभाशाली युवको को प्रभावित किया। लाला लाजपतराय ने भी आर्य समाज के लोक-सेवा कार्य-क्रम से प्रभावित होकर आर्य समाज के सेवको मे नाम लिखाया। प० गुरुदत्त विद्यार्थी और लाला हसराज ने भी आपके साथ ही नाम लिखाया। इन तीनो ने स्वामी दयानन्द सरस्वती से दीक्षाली और आर्य समाज का कार्य आरम्भ किया।

स्वामी दयानद सरस्वती के स्वर्गवास के अवसर पर लाला लाजपतराय ने लाहौर मे सार्वजनिक सभा आयोजित की। आपने बहुत ही मार्मिक शब्दो मे स्वामीजी के आदर्शो पर प्रकाश डालकर श्रद्धाजलि अर्पित की।

लाला लाजपतराय ने आर्य समाज का कार्य अपने शिक्षा-काल मे ही करना आरम्भ कर दिया था। इससे आपके अध्ययनकार्य मे विघ्न पडा। फलस्वरूप आपको वकालत पास करने मे तीन वर्ष लग गए।

लाहौर आर्य समाज की स्थापना के लिए आपने अपनी सारी बचत दान करदी थी। यह रकम केवल डेढ हजार

रुपया मात्र थी परन्तु इसमे आपका कितना वड़ा त्याग था। इसे वे ही लोग जान सकते थे जो आपकी आर्थिक स्थिति से परिचित थे। यानी आपने अपनी सब जमापूँजी भेट करदी थी। अपने परिवार का भविष्य ही आपने सकट मे डाल दिया था।

आपने हिसार मे एक सस्कृत-विद्यालय की नीव रखी। हिसार म्युनिसिपल-बोर्ड की अवैतनिक मत्री के रूप मे आपने तीन वर्ष तक सेवा की।

लाला लाजपतराय के हिसार चले जाने पर उनके लाहौर के मित्र उनका अभाव अनुभव करने लगे थे। लाला लाजपतराय के लिए भी हिसार का क्षेत्र बहुत सकुचित था। इसलिए अपने मित्रो की प्रेरणा से आप फिर लाहौर चले गए।

लाला लाजपतराय ने लाहौर जाकर लाला हसराज और पडित गुरुदत्त, जिन्होने ऐग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना की थी, उनसे भेट की। इस कॉलेज की स्थापना स्वामी दयानन्द के आदर्शो के प्रसार की भावना से स्थापित किया गया था। इस कॉलेज का सचालन बिना सरकार की सहायता से किया गया था। पजाब मे यह अपने ढग का प्रथम प्रयास था।

इस कॉलेज के लिए धन की आवश्यकता थी। बिना सरकार की सहायता के कॉलेज को चलाना खेल नही था। लाला लाजपतराय ने इसके लिए पंजाब के विभिन्न नगरो का दौरा किया और कॉलेज के लिए जनता से धन एकत्रित किया।

लाला लाजपतराय के भाषणो ने जनता को प्रभावित किया । आप जिस नगर मे भी जाते थे जनता आपका स्वागत करती थी । जनता आपकी भिक्षा की झोली को भर देती थी । इस यात्रा के द्वारा लाला लाजपतराय ने कॉलेज के लिए भी धन एकत्रित किया और आर्य समाज का प्रचार भी । आपका प्रचार केवल आर्य समाज का प्रचार मात्र नही होता था वरन् वह राष्ट्रीय चेतना का सदेश होता था ।

दयानन्द एग्लो वैदिक कॉलेज की स्थापना हुई और उसके आदर्श के अनुसार उसका संचालन बिना सरकारी सहायता के किया गया । आपने छै वर्ष तक इस कॉलेज के मत्री पद पर कार्य किया और लाला हसराज कॉलेज के प्रिंसिपल बने । ये दोनो ही कॉलेज के अवैतनिक कार्य-कर्त्ता थे ।

पच्चीस वर्ष की आयु मे ही पडित गुरुदत्त की मृत्यु हो जाने से लाला लाजपतराय का कार्य-भार बढ गया क्योकि गुरुदत्तजी आपके कार्य मे बहुत बडा सहयोग प्रदान करते थे । उनके सहयोग से वचित होकर सारा कार्य-भार आपके ही कधो पर आगया ।

दयानद एग्लो वेदिक कॉलेज का कार्य सुचारुरूप से सचालित हो जाने पर लाला लाजपतराय ने अपना ध्यान आर्य समाज के स्कूलो की ओर लगाया । आपने हर आर्य समाज के अन्दर कन्या विद्यालय खुलवाने की व्यवस्था की । आपने इस कार्य मे बडी सलग्नता से कार्य किया । आर्य समाज के इन स्कूलो ने नारी-समाज मे शिक्षा का प्रसार

किया। इस शिक्षा का माध्यम हिन्दी था। इसलिए हिन्दी के प्रसार मे भी आपका सहयोग सराहनीय रहा।

लाला लाजपतराय अपनी धुन के इतने पक्के थे कि जिस कार्य पर भी जुटते थे पूरी सलग्नता से जुटते थे। आप रात-को-रात और दिन-को-दिन नही देखते थे। तन-मन-धन से उस कार्य मे जुट जाते थे।

डी० ए० वी० कॉलेज के कार्य पर जुटे तो जब तक उसके सुचारु रूप से चलने की व्यवस्था न करदी तब तक उन्हे चैन नही आई। आर्य समाज के विद्यालयो के सचालन पर जुटे तो सेकडो स्कूल खुलवा डाले। शिक्षा मे इस योग-दान देने के फलस्वरूप आप भारत के प्रमुख शिक्षा-विशेषज्ञ माने जाने लगे थे। सन् १९०२ मे लार्ड कर्जन ने जो शिक्षा सम्बन्धी जॉच कमेटी नियुक्त की तो उसके सामने साक्षी देने के लिए आपको आदर पूर्वक आमन्त्रित किया गया। आपके इस कार्य की सरकारी तथा गैर सरकारी दोनो क्षेत्रो मे सराहना की गई।

शिक्षा कार्य मे आपने अपना अमूल्य समय देकर जो योग दान दिया उसके फलस्वरूप पजाब में शिक्षा सम्बन्धी महान् जाग्रति हुई। आपके अनथक परिश्रम के फलस्वरूप पजाब मे अनेको शिक्षा सस्थाये खुली। आपसे प्रेरणा प्राप्त करके अनेको उदार व्यक्तियो ने शिक्षा-सस्थाओ को दान दिया और नई सस्थाए खुलवाने मे सहयोग प्रदान किया।

लाला लाजपतराय का जीवन तपस्यापूर्ण था। आपके

हाथो से लाखो रुपया निकलता था परन्तु उसमे से एक कौडी भी अपने किसी व्यक्तिगत कार्य मे व्यय नही करते थे। आपके इस त्याग और तपस्यामय जीवन का जनता पर जादू जैसा प्रभाव था। इससे आपकी लोक प्रियता पजाब मे इतनी बढ गई थी कि लोग आपकी बात का आदर करते थे और जिधर भी आप निकल जाते थे जनता का भरपूर सहयोग आपको प्राप्त होता था।

: २ :

लोक सेवा के क्षेत्र में

लाला लाजपतराय का कार्य केवल शिक्षा-क्षेत्र तक ही सीमित नही रहा। आपका कार्य क्षेत्र बहुत व्यापक था। आपके अन्दर अपना कार्य-क्षेत्र सहसा बदल देने की प्रवृत्ति थी। आप किसी एक ही कार्य मे जुटकर उसे सफल बना देने के पश्चात् तुरन्त दूसरे कार्य मे कूद पडते थे। किसी एक सस्था को सफलता पूर्वक सचालित करके उसके मठाधीश बनकर बैठ जाना आपको पसद नही था। आप चाहते तो डी० ए० वी० कालेज को सफलता पूर्वक चला लेने के पश्चात वही जमकर बैठजाते और जीवन भर ऐश की छानते। लाला हसराज की तरह आप भी अपने जीवन को परिमित बना सकते थे परन्तु आपकी प्रकृति नित्य नवीन कार्य की ओर प्रवृत्त होती रहती थी। किसी सीमा मे बँधकर रहना आप को पसन्द नही था। आपकी दृष्टि असीम की तरफ रहती थी।

सन १८९६ मे उत्तर भारत मे भयकर दुर्भिक्ष पडा। हजारो लोग भूख से तडप-तडप कर मरने लगे। इतना दुर्भिक्ष था कि लोग अपने गाँवो को छोडकर निकल पडे। गाँव-के-गाँव खाली हो गए। गाँवो के लोग शहरो मे भीख माँगते फिरने लगे।

सन १८९९ तक यह दुर्भिक्ष बगाल, मध्य प्रदेश और राजपूताने मे भी फैल गया। भयकर सूखा पडी। नदी, तालाब सूख गए। जानवर प्यास से तडप-तडप कर प्राण देने लगे। खडी-खडी खेतियाँ सूख गई।

इस दुर्भिक्ष-काल मे विदेशी सरकार ने जो सहायता की वह उस भयकर स्थिति का सामना करने के लिए पर्याप्त नही थी। विदेशी सरकार को हमारे देशवासियो के दुख दर्द मे सहानुभूति भी क्या हो सकती थी ? ऐसी स्थिति मे देश के नेताओ ने उस गम्भीर स्थिति का सामना करने के लिए कदम बढाया। लाला लाजपतराय ने सर्व-प्रथम इस ओर ध्यान दिया। आपने अकाल पीडितो की सहायता के लिए रात दिन एक कर दिया। आपने एक बार फिर अपने गले मे भिक्षा की झोली डाली और द्वार-द्वार जाकर अकाल पीडितो की सहायता के लिए भिक्षा माँगी। जनता ने आपके इस कार्य मे हाथ बटाया और भरपूर सहयोग प्रदान किया।

देश की इस विकट परिस्थिति का लाभ उठाकर देश मे फैले पादरियो ने देश की अनाथ और निस्सहाय जनता को प्रलोभन दे-दे कर ईसाई बनाना आरम्भ किया। इसके फल स्वरूप हजारो गरीब और भूख से पीडित बच्चे ईसाई हो गए। इन पादरियो को अग्रेज सरकार ने भी भरपूर मदद दी। सरकार ने उन अनाथ बच्चो को जिनका कोई वारिस नही था पादरियो को सौप दिया। राजस्थान मे सरकार ने ऐसे लगभग सत्तर हजार बच्चे पादरियो को सौपे, जिन्होने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया।

लाला लाजपतराय की दृष्टि उस ओर गई तो उन्होंने उसे बहुत गम्भीर दृष्टि से देखा। उन्होंने सोचा कि यदि यही दशा रही तो हिन्दुओ की बहुत बडी सख्या ईसाई धर्मावलम्बी बन जाएगी। इससे हिन्दुओ की शक्ति क्षीण हो जाएगी।

इस गम्भीर समस्या का सामना करने के लिए लाला लाजपतराय ने आर्य समाज का सहारा लिया। क्योकि इसके लिए अपार धन और सुदृढ व्यवस्था की आवश्यकता थी। जिन बच्चो का कोई सरक्षक नही रह गया था उन्हे अनाथालयो मे रखा गया। कई अनाथालयो की स्थापना हुई। फीरोजपुर में सबसे बड़ा अनाथालय खुला, जिसका सचालन भार आपने स्वय सँभाला। लाला लाजपत राय ने समाज सेवा की दिशा मे यह बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किया।

सन १९०१ मे सरकार ने जो दुर्भिक्ष-कमीशन नियुक्त किया उसके समक्ष साक्षी देते हुए लाला लाजपतराय ने कमीशन से माँग की कि इस आपत्ति-काल मे जो बच्चे अनाथ हो गए है और सरकार की खोज द्वारा प्राप्त होते है उन्हे उनके सहधर्मियो के सुपर्द किया जाए न कि ईसाई पादरियो को। लाला जी के इस आग्रह पर सरकार को ध्यान देना पड़ा और भविष्य मे आपकी माँग को स्वीकार कर लिया गया। आपके इस कार्य ने हजारो बच्चो को धर्म-परिवर्तन से रोका।

इस दुर्भिक्ष के पश्चात् जिला काँगडा मे भयकर भूकप आया, जिसके फल स्वरूप बहुत बड़ी हानि हुई। बहुत लोग

मृत्यु को प्राप्त हुए तथा सम्पत्ति की वहुत बडी हानि हुई। पूर्व की ही भाँति निराश्रित जनो, विधवाओ और बच्चो की समस्या फिर सामने आई।

लाला जी इस आपत्ति का सामना करने के लिए फिर मैदान मे उतर पडे। आपने घटना स्थल पर जाकर वहाँ की समस्या का अध्ययन किया और निराश्रितो की सहायता का प्रवन्ध किया। आपने जनता से अभावग्रस्त-क्षेत्रो के लोगो के लिए धन और आवश्यक सामग्री की माँग की और जनता ने जी खोलकर दान दिया। आपने इस भूकम्प मे विनष्ट मकानो की खुदाई में भी सक्रिय योग दिया और दबे हुए आदमियो को निकलवाया। घायलो की मरहम पट्टी का भी प्रबन्ध किया। इन सब समस्याओ के समयानुकूल और उपयुक्त प्रबन्ध मे लाला लाजपत राय का योगदान सराहनीय है।

लाला लाजपतराय अपनी सेवाओ के कारण पजाब की जनता के दिलो पर छा गए। आपकी सभी लोग सराहना करने लगे। लाला लाजपतराय का कार्य-क्षेत्र अब केवल लाहौर पजाब तक ही सीमित नही रह गया था। आपकी ख्याति भी सारे भारत मे फैल चुकी थी।

सन् १९०७ मे मध्य प्रदेश और उडीसा मे अकाल पडा। लाला लाजपत राय को समाज सेवा की धुन थी। वह भारत के किसी भी प्रदेश को अकाल ग्रस्त नही देख सकते थे। मध्य प्रदेश और उडीसा की यह दशा देखकर आप फिर मैदान मे उतर पडे।

लाला लाजपतराय ने इस प्रकार शिक्षा और समाज-सेवा के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके अतिरिक्त आपकी दृष्टि भारत के दलित वर्गो की ओर भी गई। आपने उन लोगो के लिए, जिन्हे हिन्दू समाज मे अछूत माना जाता था बहुत बडा कार्य किया।

सन १९१२ मे आपके सभापतित्व मे काँगडी गुरुकुल के वार्षिक अधिवेशन के समय एक कान्फ्रेस हुई। इस समय तक महात्मा गाँधी का ध्यान भी इस ओर नही था और न ही उन्होने अपनी हरिजनोद्धार की योजना सचालित की थी। लाला लाजपत राय की दृष्टि सर्व प्रथम इस महत्वपूर्ण समस्या पर गई। आपके दिशा-दर्शन मे आर्य समाज ने महत्व पूर्ण कार्य किया। आर्य समाज का द्वार तो हरिजनो के लिए खुला ही हुआ था। लाला लाजपत राय ने हरिजनो मे शिक्षा का प्रचार किया।

लाला लाजपतराय केवल प्रचार मात्र से ही कभी सतुष्ट नही होते थे। आप केवल बौद्ध प्रवक्ता मात्र नही थे वरन् कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। शिक्षा की दिशा मे आपका ध्यान गया तो आपने कॉलिजो और स्कूलो की स्थापना की, समाज सेवा की दिशा मे बढे तो अनाथालय, विधवा आश्रम इत्यादि की ओर जब अछूतोद्धार की दिशा मे बढे तो आपने हरिजनो की शिक्षा के लिए आर्थिक प्रबन्ध किया। आपके इस कार्य के लिए भी जनता ने लाखो रुपया दान दिया।

लाला लाजपत राय का व्यक्तित्व ऐसा था कि जब आप

किसी भी कार्य के लिए झोली लेकर निकल पडते थे तो श्रीमान स्वय उनके पास आकर उनकी आवश्यकता की पूर्ति करने लगते थे। लाला लाजपतराय की कर्त्तव्य परायणता का डका सारे देश मे बज चुका था। आपने अनेको स्थानो पर अछूतो के लिए पाठशालाएँ खोलने का प्रवन्ध किया। आपने मानवता का प्रचार किया और उच्च वर्ग वालो को समझाया कि उनमे और अछूतो मे कोई अन्तर नही है। आपने उन्हे समझाया कि वे अछूतो को अपने समान अपना भाई और कलेजे का टुकडा समझे। इसी के लिए महात्मा गाँधी को अग्रेजी सरकार की एक चाल के विरुद्ध जिस के द्वारा सरकार दलित वर्गो को हमसे काट कर फेक देना चाहती थी, १५ दिन की भूख हडताल की थी।

लाला लाजपत राय ने समाज के समक्ष आदर्श प्रस्तुत किया। आपने हरिजनो के साथ बैठकर भोजन किया, उनके हाथ का बनाया भोजन खाया। इस प्रकार समाज की घातक रूढियो पर आपने भीषण आघात कर उसका नवीन मार्ग-दर्शन किया। आप उनके घरो मे गए और उनकी दशा देख-कर उनके सुधार की दिशा मे जुट गए।

शिक्षा और समाज-सेवा के क्षेत्र मे लाला लाजपतराय का कार्य सराहनीय है और महत्वपूर्ण है।

: ३ :

कांग्रेस के क्षेत्र में

सन १८८५ मे लार्ड डफरिन की सलाह से मि० ह्यूम ने 'इंडियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना की।" इंडियन नेशनल कांग्रेस' का प्रथम अधिवेशन बम्बई और दूसरा सन १८८६ मे कलकत्ता मे हुआ। इस अधिवेशन की अध्यक्षता दादा भाई नौरोजी ने की।

लाला लाजपतराय ने 'इंडियन नेशनल कांग्रेस' के चौथे अधिवेशन मे भाग लिया। यह अधिवेशन सन १८८८ मे प्रयाग मे हुआ था। यह आपका कांग्रेस मे सम्मिलित होने का प्रथम अवसर था। उस समय लाला लाजपतराय केवल २३ वर्ष के थे। इतनी कम आयु मे भी आपने कांग्रेस के मंच से भाषण दिया।

इस अधिवेशन मे लाला लाजपतराय ने कौंसिल मे सुधार करने का प्रस्ताव सभा के समक्ष प्रस्तुत किया। इसके पश्चात से आप कांग्रेस के मान्य कार्य-कर्त्ता की हैसियत से हर अधिवेशन मे भाग लेने लगे।

सन १८९२ मे कांग्रेस का अधिवेशन फिर प्रयाग मे हुआ इस अधिवेशन मे आपने एक परिपत्र वितरित किया जिसमे सर सय्यद अहमद के कांग्रेस विरोधी आन्दोलन की आलोचना और विरोध किया गया था। आरम्भ मे सर सय्यद

ने कांग्रेस के कार्य मे सहयोग प्रदान किया था परन्तु वाद मे आप सरकार के हाथो की कठपुतली वन गए थे और कांग्रेस के काम को धक्का पहुँचाने लगे थे।

लाला लाजपतराय आरम्भ मे सर सय्यद अहमद के विचारो की ओर आकर्षित हुए थे और आपने उनकी मुक्त कण्ठ से सराहना की थी परन्तु वाद मे जव उनकी दृष्टि सर सय्यद अहमद की साम्प्रदायिक कार्यवाहियो पर गई और उन्होने देखा वे कार्यवाहियाँ राष्ट्र हित के विरुद्ध थी तो आप ने उनका जमकर विरोध किया। लाला लाजपतराय ने धोखे बाजो की पोल खोलने की शिक्षा स्वामी दयानन्द सरस्वती से प्राप्त की थी। इसलिए सही वात को खुल्लम खुल्ला कहने मे उन्हे लेशमात्र भी सकोच नही होता था।

प्रयाग अधिवेशन मे दूसरा अधिवेशन लाहौर मे करने का निश्चय किया गया। पजाब प्रान्त मे इससे पूर्व कांग्रेस का अधिवेशन नही हुआ था। कांग्रेस के नेता डर रहे थे कि कही यह अधिवेशन सफल न हो क्योकि पजाब की जनता मे अभी राष्ट्रीय चेतना का अभाव था। पजाब के मुसलमानो ने सहयोग देने से स्पष्ट इकार कर दिया था। ऐसी दशा मे केवल आर्य समाज ही एक ऐसा प्रभावशाली वर्ग रह गया था जो इस कार्य मे सहयोग दे सकता था। उसी के सहयोग पर अब पूर्ण रूप से इस अधिवेशन की सफलता आधारित थी।

आर्य समाज ने कांग्रेस को सफल वनाने मे पूर्ण सहयोग दिया और उसके कार्यकर्त्ता पूर्ण सलग्नता के साथ इसमे

भाग लेकर इसे सफल बनाने पर जुट गए। यह कार्य लाला लाजपतराय ने अपने कधो पर सभाला। आपके खडे होते ही आर्य समाज के अन्य नेता और कार्य-कर्त्ता भी इस कार्य मे सलग्न हो गए। लाला लाजपतराय ने पजाब का दौरा करके अधिवेशन के लिए धन एकत्रित किया। आपके अनथक परिश्रम से यह अधिवेशन बहुत ही शानदार हुआ।

इस अधिवेशन से पूर्व पजाब सरकार लाला लाजपतराय के द्वारा सचालित हर कार्य मे सहयोग प्रदान करती थी और वह उनकी दृष्टि मे अहानिकारक व्यक्ति थे परन्तु इस अधिवेशन के पश्चात पजाब सरकार की दृष्टि उन पर कडी हो गई। सरकार आपको अपना कट्टर विरोधी ही नही वरन विरोधी गुट का नेता मानने लगी।

सन १८९७ मे पजाब सरकार ने रानी विक्टोरिया की हीरक जयन्ती मनाने का निश्चय किया। इस अवसर पर सरकार ने रानी विक्टोरिया की लाहौर मे एक प्रतिमा स्थापित करने का निर्णय किया। सरकार ने एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया और उसके समक्ष अपने इस निर्णय को समर्थन के लिए प्रस्तुत किया।

लाला लाजपतराय ने भी अपने मित्रो और सहकार्यकर्ताओ के साथ जाकर सभा मे भाग लिया। आपने स्पष्ट शब्दो मे सरकार के इस निर्णय का विरोध किया। आपने कहा, "मेरी राय मे यदि यह धन प्रतिमा स्थापित करने के स्थान पर पजाब के असहाय और निर्धन व्यक्तियो की सेवा

मे व्यय किया जाए तो रानी विक्टोरिया की आत्मा को अधिक शाँति मिलेगी और वही महारानी का सच्चा स्मारक होगा।"

सरकार आपके विरोध को समझ गई। इसलिए जब सरकार के कर्मचारियो और पिट्ठुओ ने देखा कि वहाँ लाला लाजपतराय के सामने उनकी दाल गलने वाली नही है तो वे धीरे-धीरे सभा से खिसक गए। स्थिति यह बनी कि प्रतिमा स्थापित करने का प्रस्ताव ही सभा के सामने न आया।

लाला लाजपत राय अब पूर्ण रूप से राजनीति मे प्रवेश कर चुके थे। उनकी राष्ट्रीय भावना तीव्र हो उठी थी और अग्रेजी सरकार के प्रति मन मे विद्रोह की भावना जाग्रत होती जा रही थी। उन्हे अब ऐसा लगने लगा था कि देश मे फैले समस्त अभावो और कुरीतियो का कारण विदेशी सरकार ही है।

उन दिनो काग्रेस मे गोखले और दादा भाई नौरोजी का जोर था। काग्रेस का सचालन इन्ही लोगो के हाथो मे था और लोग नर्मदल के थे। लाला लाजपत राय के विचार इन लोगो के विचारो से मेल नही खाते थे।

उन दिनो महाराष्ट्र के नेता लोकमान्य तिलक थे। उनके विचार उग्र थे और वह दृढतापूर्वक सरकार के निर्णयो का विरोध करते थे। विक्टोरिया की हीरक जयन्ती का आपने विरोध किया था। उसके फलस्वरूप सरकार ने आपको डेढ

वर्ष के लिए जेल भेज दिया था ।

जेल से लौटने पर लोकमान्य तिलक ने और भी उग्र रूप धारण कर लिया । लाला लाजपत राय के विचार आपके विचारो से मेल खाते थे । इसलिए दोनो का गठबन्धन हो गया । दोनो ने मिलकर काग्रेस की नीति मे परिवर्तन करने का निश्चय किया । दोनो मैदान मे कूद पडे । इनका नर्म दल के नेताओ ने कडा विरोध किया परन्तु विजय इनकी ही हुई । काग्रेस के नागपुर और पूना अधिवेशनो में आपने नर्म दल के नेताओ के विरोध का मुँह तोड उत्तर दिया । नर्म दल के नेताओ ने अपनी ओर से रासबिहारी घोष को काग्रेस का अध्यक्ष चुना । लोकमान्य तिलक ने लाला लाजपत राय का नाम रासबिहारी घोष के खिलाफ प्रस्तुत किया । लाला जी उस समय मॉडले से छै महीने का निर्वासन-दण्ड भुगत कर आए थे ।

सूरत अधिवेशन मे नर्म और गर्म दल का विरोध काग्रेस मे चरम सीमा को पहुँच गया । इसके पश्चात् आपस मे समझौते की बाते चली । लाला लाजपत राय अग्रेजो से लडकर राज्य प्राप्त करने के पक्ष मे थे । उन्हे मॉगना और गिडगिड़ाना पसद नही था ।

रानी विक्टोरिया की हीरक जयन्ती के अवसर पर लाला लाजपत राय ने सरकार की नीति का विरोध किया था । काग्रेस अधिवेशनो मे भी लाला लाजपत राय सरकार की कडी आलोचना करते थे ।

सन् १६०५ मे जब सरकार ने बगाल का विभाजन किया तो बगाल मे क्राति की लहर दौड गई । वहाँ क्रातिकारी दल उग्र हो गया । उसका प्रभाव सम्पूर्ण भारत की जनता पर पडा। सरकार ने बगाल मे अपने विरोधियो पर दमन-चक्र चलाया। हजारो देश वासियो को बन्दी बनाकर जेल भेज दिया।

बगाल मे सरकार के इस क्रूर दमन से सारे देश की जनता क्रुद्ध हो उठी। सारे देश मे विद्रोह की ज्वाला जलने लगी। ऐसी दशा मे पजाब सरकार ने भी अपने प्रान्त के देश भक्तो को बन्दी बनाना आरम्भ किया। इस दमन का प्रभाव लाला लाजपत राय पर भी पडा। सरकार ने लाला लाजपत राय को विद्रोही घोषित किया ।

उसी समय रावलपिडी के किसानो ने लगान-वृद्धि के विरुद्ध आदोलन आरम्भ किया। उनमे घोर असतोष फैल गया। लाला लाजपत राय ने मजदूरो के पक्ष मे वक्तव्य दिया। आप रावलपिडी गए और वहाँ के जिला मजिस्ट्रेट से भेट की। भेट मे दोनो की कुछ गर्म बाते हो गई । मजिस्ट्रेट का व्यवहार सभ्यता-पूर्ण न होने से लाला जी और भी गर्म हो गए। बात बढ गई और जिन वकीलो ने लाला जी का समर्थन किया उन्हे जेल जाना पडा।

लाला लाजपत राय को सरकार ने वहाँ गिरफ्तार नही किया परन्तु निगरानी कडी कर दी। सरकार किसी ऐसे कानूनी अधिकार की खोज मे थी कि जिससे लाला जी को

वन्दी वना सके परन्तु कारण उसे मिल नही रहा था। उधर सरकार ने रावलपिडी के जिन वकीलो को वन्दी वनाया था, मुकदमे मे वे भी मुक्त हो गए। उन्हे जब एक स्पेशल जज ने मुक्त कर दिया तो सरकार ने उनके केस का निर्णय करने के लिए मार्टेन्यू नामक अंग्रेज जज को नियुक्त किया। मार्टेन्यू ने वकीलो के केस को सुना तो वह भी उन्हे सजा न कर सका।

अव सरकार और भी झुँझला उठी। वह दाँत पीसकर लाला लाजपत राय के पीछे पड़ गई। जव कानून लाला जी को वन्दी न वना सका तो सरकार ने वगाल रेगूलेशन एक्ट की सहायता ली। इस एक्ट के अनुसार लाला जी को वन्दी वनाकर देश से निर्वासित कर दिया। लाला जी का यह निर्वासन किस अपराध मे हुआ इसका सरकार ने कोई व्यौरा प्रस्तुत नही किया। विना कोई अपराध वताइए ही आपको दण्डित कर दिया गया।

एक दिन लाला जी चीफ कोर्ट जा रहे थे। रास्ते मे ही पुलिस इस्पेक्टर आपकी गाडी पर सवार हो गए। उन्होने कहा, "डिप्टी कमिश्नर ने आपको याद फरमाया है।"

लाला जी डिप्टी कमिश्नर साहव के यहाँ पहुँचे तो आपको आज्ञा का वारट दिखाया गया। इस वारट पर वायसराय और उनकी कमेटी के सदस्यो के हस्ताक्षर थे। आपको वही पर वन्दी वना लिया गया और घर लौटकर जाने की भी आज्ञा नही दी। इस प्रकार आपको धोखे से वन्दी वनाया गया।

वही से आपको गोरे सेनिको की देख-रेख मे एक मोटर के अन्दर बिठाया गया। उसी मोटर से आप मियाँ मीर ले जाए गए। वहाँ से एक स्पेशल गाडी के डिब्बे मे सवार करा-कर आपको डायमड बन्दरगाह पर ले जाया गया। डायमड हारबर से आपको जहाज द्वारा रगून भेज दिया गया। रगून से १६ मई मन् १९०७ को आपको मॉडले भेजा गया।

आपको मॉडले जेल मे बन्द करके भी सरकार चुप नही बैठी। जेल मे आपको अनेको प्रकार के कष्ट दिए गए। उन्हे अपने किसी मित्र या सम्बन्धी से मिलने की आज्ञा नही थी। आपके भाई श्री धनपतराय जी आपसे भेट करने के लिये मॉडले पहुँचे परन्तु जेल अधिकारियो ने आज्ञा नही दी।

लाला लाजपत राय पर यह अन्याय जनता सहन न कर सकी। सारे पजाब मे तूफान मच गया। श्री गोखले ने वायस-राय की कमेटी मे हार्दिक खेद प्रकट किया। ब्रिटिश पार्लिया-मेट मे भी लेबर सदस्यो ने इस पर प्रश्न उठाया। लाला लाजपतराय ने भारत मत्री को इसके विरुद्ध विरोध-पत्र भेजा।

लाला जी का यह निर्वासन अग्रेजी कानून और सवैधा-निकता पर वह कलक का टीका था कि जिसे अग्रेज कभी धो नही सके। यह उनकी स्वेच्छाचारिता का स्पष्ट प्रमाण था। भारत-मत्री ने भारत सरकार से इसके विषय मे पूछ-ताछ की तो भारत सरकार उसका कोई सतोषजनक उत्तर न दे सकी।

तब भारत मत्री ने लाला लाजपतराय का मुक्ति-पत्र भेजा। उस समय सरदार अजीतसिह भी उसी जेल में थे परन्तु दोनो आपस मे भेंट नही कर सकते थे।

११ नवम्बर सन् १६०७ को सरकार को मजबूर होकर लाला लाजपत राय को मुक्त करना पडा। मॉडले जेल से आपको तथा सरदार अजीतसिह को साथ-साथ मुक्त करके रगून लाया गया और वहाँ से भारत लाकर एक स्पेशल गाडी द्वारा लाहौर भेजा गया।

लाला लाजपत राय की मुक्ति का किसी को पता नही था। सरकार ने किसी को इसकी सूचना नही दी थी। इस समाचार को सरकार ने एकदम गुप्त रखा था। परन्तु अचानक आपके लाहौर पहुँचते ही लाहौर मे आनन्द की सरिता वह चली। आपके प्रेमी हर्ष से उछल पडे। मिलने वालो का तॉता बँध गया।

लाला लाजपतराय के इस निर्वासन से लाला लाजपत राय का स्थान भारतीय नेताओ मे बहुत ऊँचा उठा दिया। यह निर्वासन ६ मास का था। अब आपका स्थान भारत के अग्रणीय नेताओ मे लिया जाने लगा था। आप भारतीय जनता के लोकप्रिय नेता वन गए।

: ४ :

विदेश यात्रा

लाला लाजपत राय को प्रसिद्धि मे मॉंडले के निर्वासन ने चार चॉद लगा दिए। एक प्रकार से सरकार ने आपकी प्रसिद्धि मे महत्वपूर्ण योग-दान दिया। अब भारत मे कोई ऐसा व्यक्ति नही था जिसके कानो तक लाला लाजपतराय का नाम नही पहुँचा था।

लाला जी ने जीवन मे शॉत बैठना तो सीखा ही नही था और न कभी थकान महसूस किया था। फिर मॉंडले जेल की यात्रा से वह क्या थकते ? जिस समय आप लौटे तो आपका स्वास्थ्य ठीक नही चल रहा था परन्तु फिर भी आप उत्तर भारत के दौरे पर निकल पडे। आप इस दौरे मे जिस नगर मे भी पहुँचे आपका लाखो की भीड ने स्वागत सत्कार किया।

मॉडले जेल की यात्रा ने आपके विचारो को और भी उग्रता तथा दृढता प्रदान कर दी थी। आपके मन मे स्वेच्छाचारिता के प्रति विद्रोह की भावना दृढ हो चुकी थी। अब आप विदेशी शासन को भारत भूमि से उखाडकर फेकने के लिए कटिबद्ध हो गए थे। आपके हृदय मे ज्वाला मुखी फूट रहा था। अब आपने निश्चय कर लिया कि आप अपना भावी जीवन देश की स्वतन्त्रता के लिए अर्पण करेगे। इसीलिए

आपने अपने वकालत के पेशे को उसी समय से नमस्कार कर लिया। इसका एक कारण यह भी था कि आपकी अग्रेजी अदालतो से न्याय की आस्था समाप्त हो चुकी थी और उन्हे कोई आशा नही रही थी कि उनसे कोई न्याय प्राप्त हो सकता है। इसलिए अन्याय की अदालतो मे जाकर वकालत करने को आपने अपना अपमान समझा।

लाला लाजपत राय मे आत्म सम्मान की मात्रा बहुत अधिक थी। उसकी रक्षा के लिये आप बडे-से-बडे बलिदान देने को उद्यत रहते थे। अपने व्यवसाय को लात मार देना लाला जी का साधारण त्याग नही था। उस समय आपकी कई हजार रुपये महावार की प्रेक्टिस थी। लाला लाजपत राय ने अपने जीवन-व्यवसाय को तृणवत त्याग दिया। इतना बडा त्याग करते हुये आपको किंचित मात्र भी सकोच नही हुआ।

अब आपका जीवन देश के लिये था। देश-सेवा ही आपका कार्य था और उसी की चिता मे रत रहना आपका ध्येय था। आपने अब काग्रेस की ओर ध्यान दिया। काग्रेस मे नर्म और गर्म दल का सघर्ष चल रहा था। गर्म दल के नेता होते हुये भी आप नर्म दल के नेताओ से सघर्ष करके नही चलना चाहते थे। इसलिये कुछ दिन को आप काग्रेस से उदासीन हो गए।

आप लाहौर म्युनिस्पिल बोर्ड के प्रमुख सदस्य की हैसियत से नगर-सुधार मे लग गए। आपके प्रयास के फलस्वरूप

ग्रनारकली बाजार की गन्दगी समाप्त हुई। वहाँ रहने वाली वेश्याग्रो को वहाँ से निकालकर बाहर कर देना ग्रापका ही काम था।

बाल गगाधर तिलक का विचार था कि देश को स्वतन्त्र करने के लिये केवल देश के ग्रन्दर ग्रान्दोलन करना मात्र ही पर्याप्त नही है। उसके लिए विदेश मे भी ग्रान्दोलन करना चाहिए। इसके लिए इग्लेड के लोकमत को ग्रपने पक्ष मे बनाना चाहिये।

ब्रिटिश पार्लियामेन्ट के बहुत से मजदूर दल के नेता भारत मे उत्तरदायी सरकार बनाने के पक्ष मे थे। रेमजे, मेकडनल्ड ग्रौर उनके मित्र पार्लियामेन्ट के सदस्य स्पष्ट घोपणा कर चुके थे वे भारत के हितैषी है ग्रौर भारत को ग्रौपनिवेशिक स्वराज्य दिलाना चाहते है। इन लोगो का मत था कि भारत के नेताग्रो को इग्लैड ग्राकर पार्लियामेन्ट के सदस्यो को प्रभावित करना चाहिये। यदि वे ऐसा न कर सके तो ग्रौपनिवेशिक सरकार भारत मे स्थापित होना कठिन न रहेगा।

लाला लाजपतराय लेबर पार्टी के इन सदस्यो की सलाह से इग्लेड गये। इग्लैड जाकर ग्रापने वहाँ के प्रमुख राजनीतिज्ञो से भेंट की। ग्रापने इग्लैड के राजनीतिज्ञो के साथ-साथ जनता को भी प्रभावित करने का प्रयास किया। ग्रापने वहाँ जाकर जो परिपत्र प्रकाशित किये उनको समुचित सम्मान मिला। ग्रापके भापणो को वहाँ की जनता ने बडे

ध्यान से सुना और वह प्रभावित हुई। इग्लेड की जनता को प्रभावित करने की दिशा मे लाला लाजपतराय ने महत्वपूर्ण कार्य किया।

इस बार लाला लाजपतराय अपनी व्यक्तिगत हैसियत से इग्लेड गए थे। आपने वहाँ जाकर वास्तविक स्थिति को समझा और देखा कि वास्तव मे उनका वहाँ जाना अपने देश के हित मे था। फिर आप कई बार इग्लैड गये। सन् १९१२ मे आपने तीसरी बार इग्लैड की यात्रा की। इस बार आप अपने पुत्र की बीमारी के लिए इग्लैंड गए थे। आपका यह बच्चा इग्लेड मे पढ रहा था। लाला जी उसे स्वदेश ले आए। परन्तु वह बच न सका। जवान पुत्र की मृत्यु से आपको अपार कष्ट हुआ।

लाला लाजपतराय ने चौथी बार कराँची काग्रेस के निर्णयानुसार एक शिष्ट-मडल मे इण्ग्लेड की यात्रा की। यह शिष्ट मंडल भारतीय विधान मे प्रस्तावित सुधारको के पक्ष मे आन्दोलन करने के लिए भेजा गया था। भारतीयो के साथ विदेशों मे होने वाले दुर्व्यवहारो के निराकरण के लिए इस शिष्ट मडल को ब्रिटिश लोकमत प्रभावित करना था। यह शिष्ट मंडल सन् १९१४ मे गया था।

यह शिष्ठ मडल अपना कार्य समाप्त करके भारत लौट आया परन्तु लाला लाजपतराय उसके साथ भारत नही लौटे। आपकी इच्छा भारत लौटने से पूर्व जापान जाने की थी। आपने जापान जाने की तैयारी की। जापान जाकर

जब आप भारत लौटने लगे तो योरोप का महायुद्ध छिड गया । ऐसी स्थिति में भारत सरकार ने भारत-मत्री से प्रार्थना की कि लाला लाजपतराय को भारत लौटने की आज्ञा दी जाय । भारत सरकार डरती थी कि यदि उन्हे भारत लौटने की आज्ञा न दी गई तो भारत की जनता विद्रोही हो उठेगी और उसे सदेह होगा कि सरकार ने लाला लाजपतराय को भारत नही आने दिया । परन्तु भारत-मत्री ने लाला लाजपतराय को भारत लौटने की आज्ञा नही दी और जब तक महायुद्ध चलता रहा तब तक लाला जी भारत न लौट सके । जापान से आप फिर इग्लेड लौट गए और वहाँ से सन् १९१४ मे अमेरिका चले गए ।

अमेरिका मे आपने वहाँ के लोक मत को प्रभावित किया महायुद्ध मे अमेरिका ब्रिटेन के साथ था । यदि अमेरिका इग्लेड को सहायता न देता तो वह जर्मनी के विरुद्ध सफल न होता । इसलिए ब्रिटेन को अमरीकी लोकमत का ध्यान रखना पडता था । लाला लाजपतराय अमरीका के इस बढते हुए प्रभाव को समझ रहे थे । इसीलिए आप अमरीकी लोक-मत को प्रभावित करने पर जुट गए ।

उस समय इग्लेड के पत्र अमेरिका मे भारत के विरुद्ध प्रचार कर रहे थे । वे अमेरिका मे भारत के प्रतिकूल वाता-वरण बना रहे थे । उनका कहना था कि भारत की जनता अपने देश पर अग्रेजी हकूमत को बना रहने देना चाहती है और वह अँग्रेजी सरकार से बहुत प्रसन्न है । उनका कहना

था कि भारत राष्ट्र मे राजनैतिक चेतना नही है। भारत-वासी जगली और असभ्य है। वे अपने देश का शासन-भार सँभालने मे सर्वथा असमर्थ है। वहाँ का हर पढा-लिखा व्यक्ति अंग्रेजी राज्य से सतुष्ट है और उसी को चाहता है कि वह वहाँ का शासन-भार सँभाले रहे।

लाला लाजपतराय ने अमेरिका मे होने वाले अंग्रेजो के इस जहरीले प्रचार का भडा-फोड दिया। लाला लाजपतराय ने एक लेख माला प्रकाशित की और स्थान-स्थान पर भाषण देकर अमेरीका की जनता मे फैलने वाली इस भ्राति को दूर करने मे महत्वपूर्ण योगदान दिया। आपके भाषणो को लाखो व्यक्तियों ने सुना और वे उनसे प्रभावित हुए। आपने 'तरुण-भारत' नाम से एक पुस्तक प्रकाशित की। उस पुस्तक मे आपने भारत की राष्ट्रीय चेतना का इतिहास प्रस्तुत किया। आपने उसमे स्पष्ट कर दिया कि भारत के नौजवान अपने देश की स्वतन्त्रता के लिए सघर्ष कर रहे है और वे भारत पर अंग्रेजी हकूमत को नही रहने देना चाहते। भारत के नौजवानो ने भारत की स्वतन्त्रता के लिए अनथक परिश्रम किया है और बलिदान दिये है।

लाला लाजपतराय ने अपनी इस पुस्तक की एक-एक प्रति ब्रिटिश पार्लियामेंट के सदस्यो को दी। जब यह पुस्तक उनके हाथो मे पहुँची तो भारतीय सरकार की भी दृष्टि उस पर गई और उनने इस पुस्तक को जप्त कर दिया।

अमेरिका मे इस पुस्तक का बहुत स्वागत हुआ। वहाँ

इसकी हजारो प्रतियाँ हाथो-हाथ विकी। इस पुस्तक ने लाला-लाजपतराय की अमेरीकी जनता मे ख्याति दोवारा कर दी। अमेरिका के पत्रो मे इस पुस्तक की शानदार समालोचना की और लाला लाजपतराय को भारतीय स्वतत्रता के प्रश्न पर लेख लिखने के लिए आमन्त्रित किया। लाला लाजपतराय ने अमेरीकी पत्र मे लेख लिखे और उन्हे उनका वहुत अच्छा पुरस्कार मिला। उसके बाद अमरीका की बहुत सी सस्थाओ ने आपको भाषण देने के लिए बुलाया।

लाला लाजपतराय ने अपने भाषणो मे भारत की स्थिति पर व्यापक प्रकाश डाला। आपने उस हर अवसर का अधिक-से-अधिक देश-हित मे उपयोग किया जो आपको प्राप्त हुआ। उन्होने अमेरीकी की उस महायुद्ध मे वन जाने वाली स्थिति का पूर्ण अध्ययन कर लिया था। इसीलिए आप तन-मन से अमेरीकी लोकमत को प्रभावित करने पर जुटे थे। आपने अमरीकी लोकमत के मस्तिष्क से इस भावना और विचार को उखाड फेकने का भरसक प्रयास किया कि अग्रेजी राज्य भारत मे लोक प्रिय है और भारतवासी उसे बने रहने देना चाहते है।

लाला लाजपतराय ने अमेरिका मे 'इडियन होम लीग' की स्थापना की। डा० हार्डिकर और डा० केशवशास्त्री ने आपके इस कार्य मे सहयोग प्रदान किया। उस लीग के लाला लाजपतराय अध्यक्ष और डा० हार्डिकर मत्री थे। इस कार्य के द्वारा आपको प्रचार करने मे वहुत वडी सहायता मिली।

इस कार्य का श्रीगणेश आपने अपने ही बल-बूते पर किया था परन्तु बाद मे लोक मान्य तिलक ने भी आपको बहुत सहयोग प्रदान किया ।

'होम रूल लीग' की स्थापना लोक मान्य तिलक ने डा० एमी बेसेन्ट की सहायता से की थी । इस लीग का काम ही यह था कि विदेशो मे भारतीय स्वराज्य के पक्ष मे लोकमत बनाया जाय । लोक मान्य तिलक ने आपको अमेरिका मे प्रचार के लिए सत्तर हजार रुपए भेजे । इस सहायता को प्राप्त करके लाला लाजपतराय ने लीग का कार्य बहुत ही तीव्र गति से आगे बढाया । आपने 'यग इडिया' नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित की । 'तरुण भारत' 'भारत का इग्लेड पर ऋण', 'भारत के लिए आत्मनिर्णय' आदि पुस्तके लिखकर प्रकाशित की। ये पुस्तके योरोप के अन्य देशो को भेजी । इटली, फ्रॉस, स्पेन, जर्मनी रूस इत्यादि देशो मे इनका खूब प्रचार हुआ । इनका योरोप की सभी भाषाओ मे अनुवाद हुआ ।

यह समय वह था जब लाला लाजपतराय को भारत सरकार ने भारत लौटने की अनुमति नही दी हुई थी । इस समय का लाला लाजपतराय ने ऐसा उपयोग किया कि जैसा शायद वह भारत मे रहकर न कर पाते । इस निर्वासन का कारण भी भारत सरकार ने अभी किसी को नही बताया । भारत की धारा-सभा मे प्रश्न आया, "लाला लाजपतराय को भारत आने से क्यो रोका जा रहा है ?"

इसके उत्तर मे कौसिल के मत्री बोले, "उनका भारत

आना सार्वजनिक हित के विरुद्ध है ।"

"उनका अपराध क्या है ?" प्रश्न पूछा गया ।

"इस प्रश्न का उत्तर देना भी सार्वजनिक हित मे नही है ।" यह उत्तर मिला ।

लाला लाजपतराय को स्वदेश लौटने की चिंता अब नही थी । वह एक महत्वपूर्ण कार्य कर रहे थे और जो कार्य उन्होंने विदेश रहकर किया वह महान् था । उससे विदेशो मे भारत का सम्मान बढा और विदेशी जनता को भारत की वास्तविक स्थिति को समझने मे सहायता मिली जिसने विश्व के लोकमत को भारत की वास्तविक स्थिति समझने का अवसर दिया ।

: ५ :

असहयोग आन्दोलन

महायुद्ध मे मित्रदल विजयी हुआ। उसमे भारत भी शामिल था। भारत की सेनाओ ने इस महायुद्ध मे भाग लिया था और महत्वपूर्ण योग दिया था। इस कार्य मे महात्मा गॉधी का सरकार को सहयोग प्राप्त था। गॉधी जी के साथ-साथ लाला लाजपतराय भी शामिल थे। आपने भी अग्रेजो की सहायता के लिए भारतीय सेना के सहयोग का समर्थन किया था। अग्रेजी राजनीतिज्ञो को इसका ज्ञान था।

यह कार्य नेताओ ने किसी आशा को लेकर किया था। उन्हे आशा थी कि महायुद्ध के पश्चात भारत को पूर्ण स्वतत्रता नही तो होमरूल अवश्य मिल जाएगा परन्तु युद्ध के बाद अग्रेजी सरकार ने जो रवैया अपनाया उससे उनकी आशाओ पर तुपारापात हो गया। मॉटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारो से भारतीय नेता सन्तुष्ट नही थे। इन सुधारो के फलस्वरूप भारतवासियो को जो अधिकार मिलरहे थे वे अधिकारो का उपहास मात्र थे। इनके अनुसार अतिम सत्ता गवर्नरो और वायसराय के ही हाथो मे रहती थी। जनसत्ता के प्रतिनिधियो की सरकार एक प्रकार से खिलौना मात्र थी। गवर्नरो और वायसराय के हाथो मे क्योकि सेना पर पूर्ण रूप से वायसराय का अधिकार था। वायसराय की कौसिल के आधे से अधिक सदस्यो की

नियुक्ति वायसराय के हाथो मे थी और महत्वपूर्ण विभाग भी उन्ही के हाथो मे थे ।

महात्मा गाँधी ने इन अधिकारो को ठुकरा दिया । उनके विचार से वे व्यर्थ थे और उनके बाद भी शासन मे कोई परिवर्तन होने की सम्भावना नही थी ।

तभी सरकार ने 'रौलट एक्ट' सामने रखा । इसका महात्मा गाँधी ने खुलकर विरोध किया और भारत के नगर-नगर मे इसके विरोध मे सभाएँ होने लगी । इस विरोध मे भारत के सभी नेता एकमत थे । परन्तु सरकार ने किसी की कोई बात न सुनी और एक्ट पास करके उसे कानून बना दिया । अग्रेजी सरकार ने भारतीय सहयोग का बदला इस चालबाजी और स्वेच्छाचारिता से दिया ।

महात्मा गाँधी ने सरकार की इस नीति से सघर्ष करने के लिए आन्दोलन जारी किया और रोलट एक्ट के विरोध मे भारतीय जनता को प्रदर्शन करने की आज्ञा दी । अमृतसर मे रोलट कानून के विरोध मे सभा आयोजित हुई । यह सभा जलियाँवाले बाग मे होरही थी । जालिम सरकार ने इस शाँतिपूर्ण सभा पर निर्दयता के साथ गोलियो की वर्षा की और निहत्थे लोगो को चने के दानो की तरह भून दिया । गोरे सैनिको ने अपनी निर्दयता का जलियाँवाले बाग मे जो सबूत दिया उससे सारे देश मे रोष फैल गया । सरकार के इस काले कारनामे का भारतीय जनता युग-युग तक कभी नही भूल सकेगी ।

इस तरह के अत्याचारो से जनता उत्तेजित हो उठी। भारतीय जनता के दिलो से ज्वाला की चिगारियाँ निकलने लगी। इस पर भी सरकार ने उसके जलते हृदय पर और नमक मलने के लिए सहानुभूति प्रकट करने के स्थान पर अत्याचार का समर्थन किया। इटर कमीशन ने जो तहकीकात की उसमे सरकारी कर्मचारियो को दोषी न ठहराकर उनकी कार्यवाही को उचित घोषित किया। उन गोरे अफसरो का जिन्होने शांतिपूर्ण जनता का खून बहाया था अपने पदो पर ज्यो-के-त्यो बने रहे, उनका बाल भी बाँका न हुआ। इससे जनता और भी उत्तेजित हो उठी।

उन दिनो लाला लाजपतराय अमेरिका मे ही थे। पजाब के हत्याकाँड की खबरे आपने पत्रो में पढी तो आपके दिल मे विद्रोह की भयकर ज्वाला जल उठी परन्तु वह कर कुछ नही सकते थे क्योकि उन्हे भारत लौटने की आज्ञा नही थी।

लाला लाजपतराय ने ब्रिटिश राजनीतिज्ञो को लिखा कि उनके ऊपर से अब वे पाबदियाँ जो युद्ध-काल मे लागू की गई थी, उठा ली जाएँ। बहुत प्रयत्न करने पर आपको स्वदेश लौटने की आज्ञा मिली।

जिस समय लाला लाजपतराय भारत लौटे उस समय तक वह रक्तपात हो चुका था। आपका मत था कि कुछ काल के लिए चेम्सफोर्ड शासन-सुधारो को कार्यान्वित करना चाहिए। वह समझ रहे थे कि ब्रिटिश सरकार वास्तव मे धीरे-धीरे भारत को आत्म-निर्णय का अधिकार देना चाहती

थी परन्तु भारत आकर और सरकार की नीति तथा शासन की स्वेच्छाचारिता को देखकर आपके विचारो मे परिवर्तन होगया। सरकार की सुधार-नीति का खोखलापन अपने खोखले रूप मे आपके सामने आगया। आपने समझ लिया कि उसका वहिष्कार करना ही उचित था।

सन् १६२० ई० मे कलकत्ते मे काग्रेस का अधिवेशन हुआ। इस अधिवेशन मे महात्मा गाँधी द्वारा प्रस्तावित असहयोग आन्दोलन पर विचार किया जाना था। यही वह अधिवेशन था जिसमे असहयोग-आन्दोलन पर सर्वप्रथम विचार किया गया। इस अधिवेशन मे असहयोग आन्दोलन के पक्ष और विपक्ष के सदस्यो की संख्या समान थी। बगाल के पुराने नेता श्री विपिन चन्द्रपाल इसके विरोधी थे। लाला लाजपतराय को भी इसके सफल होने मे सदेह था। आप भी पूरी तरह से सरकार के असहयोग से सहमत नही थे। परन्तु महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व इतना विशाल था कि यह प्रस्ताव भारी वहुमत से पास हो गया। लाला लाजपत राय ने बहुमत के सामने सिर झुकाकर इसे स्वीकार किया। इस अधिवेशन के सभापति लाला लाजपतराय ही थे।

प्रस्ताव के पास होते ही लाला लाजपतराय अग्रेजी सरकार के विरुद्ध मैदान मे कूद पडे। असहयोग का यह नया अस्त्र था जो महात्मा गाँधी ने दिया था। भारतीय जनता इसे चलाना भी अभी नही जानती थी। इसके लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता थी। इसका क्या मतलब है, यह भी जनता

को पता नही था। इसलिए सर्वप्रथम कार्य उस समय जो नेताओ के समक्ष था वह यही था कि जनता को असहयोग से परिचित कराएँ।

लाला लाजपतराय ने इसके लिए पजाब के नगरो का दौरा किया और अपने भाषणो द्वारा जनता को असहयोग का अर्थ समझाया। जहाँ-जहाँ भी आप गए लाखो की भीड़ ने आपका स्वागत किया। आपके भाषण पजाब की जनता मे आग फूँकते जारहे थे।

पजाब सरकार इससे दहल उठी। वह आपको बन्दी बनाने का रास्ता खोजने लगी। ३ सितम्बर सन् १९२१ ई० को राजद्रोही भाषण देने के अपराध मे आपको सरकार ने बन्दी बना लिया और डेढ वर्ष की सजा करदी।

जेल मे आपके साथ जो दुर्व्यवहार हुआ उससे आपका स्वास्थ्य दिन-पर-दिन गिरने लगा और अन्त मे आप रोग-ग्रस्त हो गए। धीरे-धीरे यह रोग क्षय रोग मे बदल गया। जब डाक्टर ने आपको क्षय-रोग घोषित कर दिया तो सरकार को चिता हुई कि कही उनकी जेल मे ही मृत्यु न हो जाए और सरकार के माथे पर कलक लग जाए। इसलिए १६ अगस्त १९२३ ई० को सरकार ने आपको मुक्त कर दिया।

जेल से छूटकर आपको उपचार के लिए सोलन जाना पडा। सोलन जाकर आपके स्वास्थ्य मे कुछ सुधार हुआ।

थोडा सुधार होते ही आप फिर मैदान में कूद पडे। आपने लाहौर आकर देखा कि वहाँ का युवक वर्ग राष्ट्रीय-

चेतना से शून्य है। आपने लाहौर मे 'तिलक-विद्यालय' की नींव रखी। उसके लिए आपने चालीस हजार रुपया एकत्रित करके दिया। इसके साथ-ही-साथ आपने अपना 'लाजपत भवन' भी विद्यालय को दे दिया। यह लाहौर की एक वहुत ही आलीशान इमारत थी।

अव आपने अपना समय कुछ राष्ट्रीय कार्य-कर्त्ता वनाने मे लगाया जो अपना पूरा समय राष्ट्र के कार्यो मे लगा सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आपने 'लोक-सेवा-सघ' की स्थापना की। यह सघ अभी भी भारत मे कार्य कर रहा है। लोक सेवा सघ के सदस्यो ने पजाव मे राष्ट्रीय चेतना जागृत की और साम्प्रदायिकता से सघर्ष किया। हिन्दू-मुसलमान दोनो को कधे-से-कधा भिडाकर राष्ट्रीय आन्दोलन मे भाग लेने को सघ के कार्य-कर्त्ताओ ने जागरूक किया। 'लोक-सेवा सघ' का पजाव मे राष्ट्रीय-चेतना पैदा करने मे प्रधान हाथ रहा।

सत्याग्रह का सघर्ष छिडने पर 'लोक सेवा सघ' का एक-एक सदस्य जेल गया। इन लोक सेवको ने जो वलिदान दिए वे भारतीय स्वतन्त्रता के इतिहास मे अपना विशेष स्थान रखते है।

: ६ :

साइमन कमीशन

पजाब मे महात्मागाँधी के सत्याग्रह आन्दोलन मे भाग लेने वाले प्राय सभी हिन्दू थे। मुसलमानो पर सरकार ने हाथ रखकर उन्हे अपनी ओर तोड लिया था और उनसे साम्प्रदायिक दगे कराने आरम्भ कर दिए थे।

ऐसी दशा मे सरकार का रुख मुसलमानो की ओर इतना अधिक हो गया था कि सरकारी काम-काजो की बागडोरे धीरे-धीरे हिन्दुओ के हाथो से लेकर मुसलमानो को दी जाने लगी थी। सरकार के सहारे से मुसलमान साम्प्रदायिक नेताओ को भारत की जनता मे साम्प्रदायिकता का विष फैलाने मे सहायता मिली। सरकार उनकी पीठ ठोक रही थी। इससे पजाब के हिन्दू सकट ग्रस्त हो गए।

चौरीचौरा के हत्याकाण्ड के फलस्वरूप महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह वापस ले लिया। महात्मा गाँधी उस समय जेल मे थे। उस समय देश सकट-काल से गुजर रहा था। जनता मे निराशा फैली हुई थी। इस स्थिति का लाभ उठाकर सरकार ने साम्प्रदायिकता को बढावा दिया। मुसलमान नेताओ ने यह समय अपने धर्म के प्रचार के लिए अच्छा देखा और गरीब हिन्दुओ को फुसलाकर और सरकारी

लालच देकर मुसलमान वनाना आरम्भ किया ।

लाला लाजपतराय ने मुसलमानो और सरकार की इस चाल को गम्भीर दृष्टि से देखा । उन्होने देखा कि यदि हिन्दुओ की सख्या कम होगई तो राष्ट्रीय चेतना का ह्रास होने लगेगा । सरकार इस साम्प्रदायिक आँधी के पीछे अपना शिकार खेल रही थी । वह हिन्दुओ को कमजोर करके अपने पक्ष मे मुसलमानो को सशक्त करना चाहती थी ।

भारत सरकार की इस चाल को लाला लाजपतराय ने तुरन्त समझ लिया । ऐसी दशा मे बिना इस बात को सोचे कि लोग उन्हे साम्प्रदायिक कहेगे, उन्होने हिन्दुओ की रक्षा का व्रत लिया । आपने अपनी सम्पूर्ण शक्ति हिन्दुओ के सगठन मे लगादी । आपका मत था कि हिन्दुओ को सगठित करके मजवूत बनाना राष्ट्रीय चेतना को बल देना है । इस लिए आपने अपना पूरा ध्यान इस कार्य की ओर लगा दिया ।

लाला लाजपतराय का समर्थन प्राप्त कर हिन्दू समाज का सगठन-कार्य तीव्र गति से चल पडा । इस क्षेत्र मे लाला-जी की पहले से ही धाक थी । आर्य समाज के सगठन मे आपका योगदान किसी को भूला नहीं था । आपके इस ओर पग बढाते ही हिन्दू सगठित होने लगे और उन्होने साम्प्र-दायिक मुसलमानो का मुहतोड उत्तर देना आरम्भ कर दिया ।

चौरीचौरा काण्ड पर सत्याग्रह स्थगित होने से राष्ट्र एकबार अधकार मे डूव गया । उस समय मोतीलाल-

नेहरू और चितरजन दास ने स्वराज्य-दल का आयोजन किया। नवीन सुधार-योजना के अनुसार प्रान्तो मे विधान सभाओ का निर्माण हो चुका था। उनमे क्योकि जनता के प्रतिनिधि नही थे इसलिए सरकारी नुमाइन्दे अपनी मनमानी कर रहे थे। वे जो कानून बनाते थे उनका विरोध इसलिए नही हो सकता था क्योकि महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह वापस ले लिया था और नया कोई आदेश जारी नही किया था। इसलिए उस समय सरकार के पिट्ठुओ की धाँधले बाजी को रोकने के लिए स्वराज्य-दल की स्थापना की गई। लाला लाजपतराय ने इस दल मे सहयोग दिया और प्रतिनिधि बनकर असेम्बली मे गए। आपने मोतीलाल नेहरू के साथ मिलकर सरकारी पिट्ठुओ के मनमानी करने का विरोध किया।

लाला लाजपतराय और मोतीलाल नेहरू की प्रकृति आपस मे नही मिलती थी। मोतीलालजी का स्वभाग उग्र था। आप अपने निर्णय को सब पर थोपने की चेष्टा करते थे। आप सामाजिक कार्यो से पृथक रहकर विशुद्ध राजनिति के पक्षपाती थे। लालाजी मोतीलालजी की इस विचारधारा से सहमति नही रखते थे। आप समाज सुधार-कार्यो को राजनीति से कम महत्वपूर्ण नही समझते थे। यही दोनो के मतभेद का कारण था जिसका कई बैठको मे प्रदर्शन हुआ। पारस्परिक-सघर्ष को लाला लाजपतराय कभी बढावा नही देते थे। इसलिए आपने दल से इस्तीफा दे दिया।

लाला लाजपतराय ने प० मदन मोहन मालवीय के साथ मिलकर स्वतत्र स्वराज्य-दल की स्थापना की। आप मोती-लालजी के विरुद्ध खडे हुए और सफल हुए।

लाला लाजपतराय काग्रेस के स्वराज्य-दल से अलग अवश्य हो गए थे परन्तु आपकी सहानुभूति सर्वदा काग्रेस के साथ रहती और काग्रेस के आदेशो का आप पालन करते थे।

मॉण्टेग्यू-चेम्सफोर्ड शासन सुधारो मे सुझाव था कि इनके देश मे लागू हो जाने के दस वर्ष पश्चात एक कमीशन सुधार-योजना की गतिविधि की जॉच करने के लिए नियुक्त किया जाएगा उसमे आशा व्यक्त की गई थी कि यदि उन सुधारो का अच्छा प्रभाव रहा तो भारत मे उत्तरदायी सरकार की स्थापना की जाएगी। उसमे यह भी व्यक्त किया गया था कि कमीशन मे आधे सदस्य भारतीय और आधे अग्रेज होगे।

साइमन की अध्यक्षता मे इस कमीशन की नियुक्ति हुई। इसीलिए इसका नाम साइमन कमीशन पडा। इस कमीशन मे एक भी भारतीय सदस्य नही था। इसलिए भारतीय नेताओ ने इसके प्रति असतोष प्रकट करते हुए इसमें भारतीय सदस्यता की मॉग की किन्तु ब्रिटिश सरकार ने भारतीय नेताओ की इस माँग को ठुकरा दिया।

अपनी इस न्याय सगत बात के ठुकराए जाने पर भारतीय नेता क्रुद्ध हो उठे। उन्होने साइमन कमीशन का वहिष्कार करने का निश्चय किया। निश्चय किया गया कि साइमन

कमीशन भारत के जिस नगर मे भी जाए उसे काले झंडे दिखाए जाएँ और उसका स्वागत साइमन गोबे के नारो से किया जाए।

परिणाम यही निकला कि यह कमीशन जिस शहर में भी पहुँचा इसका निरादर हुआ। स्कूल कॉलेजो तथा बाजारो मे हडताले हुई। जनता ने काले झँडे दिखाकर 'साइमन गोबे' का नारो से उसका स्वागत किया।

३० अक्टूबर सन् १६२८ को यह कमीशन लाहौर पहुँचा। हजारो की सख्या मे देशभक्त जनता काले झँडे लेकर स्टेशन पर उसका स्वागत करने के लिए पहुँची।

सरकार के भी प्रवन्ध मे कोई कमी नही थी। गोरी पलटन मय घुडसवारो के प्रवन्ध करने के लिए मौजूद थी। शहर मे पहले ही दिन से दफा १४४ लगादी गई थी। शहर मे सन्नाटा था। स्कूल कॉलेजो मे हडताल थी। बाजार बन्द था। जिस-जिस मार्ग से कमीशन के निकलने की सम्भावना थी, उसी-उसी मार्ग पर जनता काले झडे लिए अपने मेहमान का स्वागत करने के लिए खडी थी। 'साइमन गो बेक' के नारो से वायुमण्डल आच्छादित था

पजाब केसरी लाला लाजपतराय एक जुलूस बनाकर सरकार की दफा १४४ को भग करते हुए स्टेशन की ओर बढ चले। देशभक्त वीरो के नारो से आकाश गूँज रहा था। उनके हाथो के काले झडे हवा मे लहरा रहे थे। लगता था जैसे यह जलूस साइमन का मातम मनाने जारहा था, किसी

शवयात्रा की तय्यारी कर रहा था।

पुलिस-अधिकारियो ने आज्ञा दी, "जलूस तितर-बितर हो जाए वरना यह कार्य पुलिस को करना होगा।"

लाला लाजपतराय उन गोरी चमडी वालो की घुडकी मे भला कहाँ आने वाले थे। आप सीना तान कर बराबर आगे ही बढते गए। देशभक्त वीर आपके पीछे-पीछे थे।

पुलिस के अफसरो ने जब देखा कि जुलूस आगे बढरहा है और उनके भय का उसपर कोई प्रभाव नही पडरहा तो उन्होने अपने सिपाहियो को निहत्थी जनता पर डडे बरसाने की आज्ञा देदी। निहत्थे देश भक्तो पर लाठियाँ बरसने लगी। खून की नदी बह चली। निर्दोष देशभक्तो के सिर फूट गए, हाथ टूट गए, बदन चूर-चूर हो गया परन्तु फिर भी वायु मडल मे, 'साइमन गो बेक' शब्द गूँजते रहे।

लाला लाजपतराय पर साधारण सिपाहियो का हमला करने का साहस न देख सार्जेन्ट स्वय लाठी लेकर आगे बढा और उस हत्यारे ने लाला लाजपतराय पर घातक प्रहार किया। लालाजी गिरते-गिरते बचे। उनके इर्द-गिर्द के देश-भक्तो ने उन्हे सँभाल लिया और तुरन्त हॉसपिटल ले गए।

लालाजी के सिर और छाती पर घातक चोट लगी थी। घावो मे निरन्तर पीडा बढती गई। अन्त मे १५ नवम्बर सन् १९२८ के दिन पजाब केसरी के शरीर मे बहुत अधिक पीडा होगई। ज्वर भी तीव्र होगया और रात्रि मे बहुत अधिक दर्द होने लगा। उस रात को बहुत बेचैनी रही। दूसरे दिन

प्रात काल साढे छै बजे के लगभग आपका शान्त शरीर पूरा होगया ।

आपकी मृत्यु के समाचार से सारे पजाब मे शोक छा गया । आपकी शव-यात्रा मे लाखो लोगो ने भाग लिया । रावी नदी के तीर पर सध्या समय आपका दाहकर्म-सस्कार हुआ ।

लाला लाजपतराय के मरने से पजाब के अनेको बालक अनाथ हो गए । आप न जाने कितने बच्चो का पिता समान पालन-पोपण करते थे ।

लाला लाजपतराय की इस हत्या का बदला दस पन्द्रह दिन पश्चात ही क्रॉतिकारी वीर चन्द्रशेखर आजाद, सरदार भगतसिह और वीर राजगुरु ने उनके हत्यारे सॉडर्स को गोली से उडाकर किया । इसी अपराध मे इन तीनो वीरो को फॉसी के तख्ते पर झूलना पडा ।

लाला लाजपतराय इस देश की जनता के महान नेता थे । उन्होने अपना सारा जीवन जनता की सेवा मे व्यतीत किया । आपका कार्य क्षेत्र बहुत व्यापक रहा । समाज-सुधार और राजनीति मे आपका प्रभावशाली प्रवेश था । राष्ट्र को जब भी आपको जिस दिशा मे सेवा की आवश्यकता हुई, तभी आप सेवा के लिए सबसे आगे बढते हुए दिखाई दिये ।

लाला लाजपतराय ने लोक जीवन मे प्रवेश करने की प्रेरणा स्वामी दयानन्द सरस्वती से प्राप्त की । समाज सुधार का क्रान्तिकारी सदेश जो स्वामी दयानन्द ने राष्ट्र के लिये दिया उसे आपने एक सफल सैना नायक के समान भारतीय

जन-जन तक पहुँचाया। जब भारत को स्वतन्त्र देखने का प्रश्न आया तो लाला लाजपतराय प्रथम पक्ति के नेताओ मे खडे दिखाई दिये। लोकमान्य तिलक द्वारा प्रदत्त स्वराज्य के मत्र को ग्रहण कर देश-विदेश मे उसका प्रचार किया। लाला लाजपतराय केवल पजाब के शेर नही थे, भारत के शेर थे। जिन्होने निहत्थे आगे बढकर स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर अपने प्राणो को न्योछावर किया। उन्ही के बलिदान पर आज भारतीय जनता स्वतन्त्र भारत के वायु-मडल मे स्वास लेने योग्य बना है।

○

सुभाषचन्द्र बोस

सुभाषचन्द्र बोस

: १ :

आरम्भिक जीवन

सुभाष चन्द्र बोस भारतीय जनता के उन नेताओं में से एक हैं जिन्होंने नेता नाम को सार्थक किया है। आपके नाम के साथ 'नेताजी' शब्द रूढ़ि होगया है और जब तक भारतीय-इतिहास का एक भी विद्यार्थी रहेगा तब तक 'नेताजी' नाम सुभाषचन्द्र बोस के ही नाम से जुटा रहेगा।

२३ फरवरी सन् १८९७ ई० को सुभाषचन्द्र बोस का जन्म कटक में हुआ। आपके पिता रायबहादुर जानकीनाथ वसु सरकारी वकील थे। एक सम्पन्न परिवार के बालक होने पर भी आपके जीवन में बचपन से ही सादगी थी। आप

साधारण वस्त्र पहनते थे और फर्श पर सोते थे।

आरम्भिक शिक्षा के लिए आपको एक प्रोटेस्टेट यूरोपियन स्कूल मे भेजागया था। जिस समय आप केवल दस-बारह वर्ष के छात्र थे तो मामपुर परगने में हैजा फैला। आप मैडीकल छात्रो के साथ वहाँ चलेगए और दो महीने तक पीडितो की सेवा की।

प्रोटेस्टेट स्कूल मे आप कालेजिट स्कूल मे आगए। वहाँ के हेडमास्टर वेणी माधवदास का आपके जीवन पर बहुत प्रभाव पडा। वही से सन् १९१३ ई० मे आपने मैट्रिक पास किया। मैट्रिक पास करके आपने कलकत्ता के प्रेसीडेसी कालेज मे प्रवेश प्राप्त किया। वहाँ युवको की एक सस्था थी जिसमे वे ही युवक सदस्य वनते थे जो आजीवन अविवाहित रहकर देशसेवा का व्रत ले। सुभाषचन्द्र बोस उस सस्था के सदस्य बने।

सुभापचन्द्र बोस की बचपन से ही प्रवृत्ति आध्यात्म की ओर थी। १९१४ ई० मे रामकृष्ण मिशन के वार्षिकोत्सव पर आप गए। उसका आप पर इतना प्रभाव हुआ कि आप अपने एक साथी के साथ घर से खिसक गए। आप दिल्ली, मथुरा, आगरा, वृन्दावन, काशी, गया गए। छ महीने की यात्रा के पश्चात् आप फिर घर लौट गए। परीक्षा निकट थी। पढाई छोड़े काफी दिन होगए थे। फिर भी आपने एफ० ए० प्रथम श्रेणी मे पास की।

दो वर्ष पश्चात् आपने स्काटिश चर्च कालेज से बी० ए०

पास किया। इसी बीच आपने मिलिट्री कैडेट में शामिल होकर सैनिक शिक्षा प्राप्त की।

यही वह समय था जब रौलट बिल को लेकर देश मे तूफान उठा था। जलियाँवाले बाग का निर्मम हत्याकाण्ड भी उसी समय हुआ था। इससे सम्पूर्ण देश की जनता क्षुब्ध होउठी थी। नौकरशाही के दमन ने जनता के दिलो मे ज्वाला फूक दी थी। देश भर मे गिरफ्तारियो की धूम मचीहुई थी।

सुभाषचन्द्र बोस के पिता अपने बेटे के हृदय की भावनाओ को समझते थे। वह उसे उस आग में नही कूदने देना चाहते थे जो देश के कोने-कोने मे जलरही थी। इसलिए वह कलकत्ते पहुँचे और सुभाष को आई० सी० एस० की परीक्षा पास करने के लिए विलायत जाने को कहा, परन्तु सुभाष ने इकार कर दिया।

"सुभाष ने इन्कार क्यो किया ?" सुभाष की माता जी ने उनके पिता से पूछा।

पिता व्यग्यपूर्वक बोले, "वहाँ जाकर अग्रेज लडको से मुकाबला करने की हिम्मत हो, तब तो जाए।"

सुभाष ने अपने पिता की यह बात सुनली। वह बोला, "मै जाने को उद्यत हूँ। मैं कल ही रवाना हूँगा परन्तु पास करते ही त्याग-पत्र देदूँगा। मै वहाँ से गुलामी का नहीं, आजादी का सदेश लेकर लौटूगा।"

पिता ने अपने मन मे सोचा, जाने तो दो। वहाँ की तडक-भडक इसका दिमाग बदलदेगी।

सुभाष विलायत के लिए रवाना होगए। इग्लेड जाकर आपने एक स्वतन्त्र देश का वातावरण देखा और फिर उसका अपने देश के वातावरण से मिलान किया तो उनके दिल मे देश भक्ति की ज्वाला और अधिक प्रज्वलित होउठी। वहाँ आपने भारतीय मजलिस मे सरोजनी नायडू का व्याख्यान सुना तो उससे वह बहुत प्रभावित हुऐ।

सुभाष ने सिविल सर्विस की परीक्षा पास की। सव विद्यार्थियो मे आपका चौथा स्थान था। परीक्षा पास करके आपने भारत-मत्री माण्टेग्यू से भेट की और अपना त्याग-पत्र देदिया। मॉटेग्यू ने उन्हे बहुत समझाया परन्तु उन पर उसका कोई प्रभाव न हुआ। वह अपने निर्णय पर अटल रहे। उन्होंने जो सोचरखा था उससे उन्हे कोई प्रलोभन डिगा न सका।

इडिया आफिस मे सर विलियम ड्यूक सुभाप वावू के पिता के घनिष्ठ मित्र थे। उन्होने आपका त्याग-पत्र अपने पास रखकर आपके पिता को पत्र लिखा।

आपके पिता ने सर विलियम ड्यूक के पत्र के उत्तर मे लिखा, "मैं अपने पुत्र के इस कार्य को गौरव की दृष्टि से देखता हूँ। मैने उसकी इस शर्त को मजूर करके ही उसे विलायत भेजा था।"

इस पत्र को प्राप्त करके सर विलियम ड्यूक स्तब्ध रह-गए। उन्होने सुभाप से पूछा, "नौजवान! तुम अपने भोजन का क्या प्रवन्ध करोगे?"

"मैने बचपन से दो आने रोज मे गुजर करने की आदत डाली हुई है। दो आने मै पैदा करलूगा।" सुभाष ने उत्तर दिया।

सर विलियम सुभाप का मुँह देखते रहगए।

इग्लेड से लौटकर सुभाषचन्द्र बोस सीधे महात्मा गाँधी के पास गए परन्तु उस समय गाँधी जी के पास कोई निश्चित कार्यक्रम नही था। इसलिए आप कलकत्ता चले गए। कलकत्ता जाकर आपने देशबन्धु से वाते की। आपने सुभाष को देश-भक्ति के मत्र से दीक्षित किया।

: २ :

कॉंग्रेस में प्रवेश

महात्मा गॉंधी का असहयोग आन्दोलन आरम्भ होचुका था। असहयोग की भावना को राष्ट्रीय नेताओ ने भारतीय जनता मे कूट-कूटकर भरदिया था। माण्टेग्यू रिफार्म्स के विरुद्ध देश-व्यापी असहयोग आन्दोलन हुआ।

महात्मा गॉंधी ब्रिटिश शासन के विरुद्ध मैदान मे उतरे। वकीलो ने कचहरी, छात्रो ने स्कूल कॉलिजो और बहुत से सरकारी नौकरो ने अपनी नौकरियो को त्याग दिया और गॉंधी जी की रण-भेरी बजते ही मैदान में असहयोग का अस्त्र लेकर कूदपडे।

कलकत्ते में देशबन्धु दास ने नेश्नल कॉलेज की स्थापना की और उसका भार सुभापचन्द्र को सौपा। सुभाषचन्द्र बोस ने कॉलेज के छात्रो को देश-भक्ति के रग मे रगा।

इसी बीच यवराज के इग्लेड से भारत आने की चर्चा चली। काग्रेस ने उनका स्वागत काले झडो से किया। देश-व्यापी हडताले हुई। युवराज के कलकत्ता पहुँचने के दिन वहॉं सुनसान पड़ा था। उसे देखकर नौकरशाही के क्रोध का पारावार न रहा। देशबन्धु को उसने पहले ही गिरफ्तार करलिया था। इसलिए स्वय-सेवक-दल की अध्यक्षता का भार उस समय सुभाष बाबू के कधो पर था। सरकार ने

उन्हे भी वन्दी वना लिया और छ महीने की सजा का दण्ड दिया ।

सन् १९२१ ई० अप्रैल में आप छै महीने की सजा भुगत कर जेल से छूटे । उसी समय बगाल मे बाढ आई और सैकडो गॉव बहगए । सुभाप बाबू अपने स्वयसेवको के साथ बाढ-पीडितो की सहायता पर जुटगए । लार्ड लिटन ने सुभाषचद्र वोस के कार्य की बहुत सराहना की और सरकार की ओर से २०,००० रुपए की सहायता की ।

चोरी-चौरा की दुर्घटना के कारण महात्मा गॉधी ने सत्याग्रह स्थगित कर दिया था । इसका भारतीय जनता पर अच्छा प्रभाव नही पडा । उसका जोश ठडा होनेलगा था । सरकार ने महात्मा गॉधी को वन्दी वनाकर ६ वर्ष की कड़ी सजा दी थी ।

इसी वीच गया मे काग्रेस का अधिवेशन हुआ जिसमे काग्रेसी नेता दो दलों मे विभक्त होगए । एक वे जो काग्रेस की नीति मे परिवर्तन चाहते थे और दूसरे वे जो परिवर्तन नही चाहते थे । देशवन्धु चितरजनदास काग्रेस के अध्यक्ष थे और वह परिवर्तन चाहते थे । मोतीलाल नेहरू भी उनके साथ थे । उन्होने खिलाफत स्वराज्य-दल की स्थापना की । सुभाप भी आपके साथ थे । इसी समय आपने 'फारवर्ड' नामक अगरेजी दैनिक पत्र निकाला ।

स्वराज्य-दल ने कौंसिलो तथा कार्पोरेशनो इत्यादि के चुनाव लड़े । सुभाप वावू ने इस कार्य मे जी तोड परिश्रम

किया परन्तु स्वय उम्मीदवार न वने। कलकत्ता कार्पोरेशन मे स्वराज्य-दल का बहुमत होने पर आपको कार्पोरेशन का एग्जीक्यूटिव आफीसर बनाया गया। उस समय आपकी आयु केवल २७ वर्ष की थी। यह पद पहले कभी किसी भारतीय को नही मिला था इसलिए सरकार ने इसमे अडचन पैदा की। इस पद की नियुक्ति के लिए सरकारी अनुमति की आवश्यकता थी। बडी कठिनाई से यह अनुमति मिली। सुभाप बाबू ने यह कार्य बहुत योग्यता के साथ किया।

२५ अक्तूबर सन् १९२४ ई० को सरकार ने बगाल आर्डिनेन्स पास किया और उसी दिन सरकार ने सुभाप बाबू को बन्दी बना लिया। इस आर्डिनेन्स के बन्दी को उसका दोष बताने की आवश्यकता नही थी। यह आर्डिनेन्स सरकार ने बगाल में राष्ट्रीय चेतना को कुचलडालने के लिए पास किया था।

जनता ने जब सुभाष बाबू का दोष ज्ञात करने के लिए आवाज उठाई तो सरकार ने कहा, "यह क्रातिकारियो के सलाहकार है।" बाध्य होकर सरकार ने उनपर मुकदमा चलाया। सरकार अभियोग साबित न करसकी परन्तु फिर भी उसने आपको मुक्त नही किया। सुभाष बाबू को पहले अलीपुर जेल और फिर तीन माह पश्चात् मॉडले जेल मे भेज दिया गया।

सन् १९२६ ई० मे कौसिल का नया चुनाव हुआ। स्वराज्य-दल ने सुभाप बाबू को खडा किया। जेल मे रहने पर

भी आप सदस्य चुन लिए गए। फिर आपकी रिहाई का प्रश्न कौसिल मे रखा गया। सरकार की कौसिल तथा बाहर सभाओ मे निन्दा की गई परन्तु सरकार टस-से-मस न हुई।

जेल मे सुभाष बाबू का स्वास्थ्य इतना खराब हुआ कि ४० पौड वजन घट गया। आप चलने-फिरने के योग्य भी न रहे। अन्त मे सरकार ने उन्हे स्विटजरलेड जाने की अनुमति दी और कहा कि वह मार्ग मे कही नही ठहरेगे परन्तु सुभाष बाबू ने सरकार की शर्तो को ठुकराकर प्राणो की बाजी लगा दी। अन्त मे लाचार होकर सरकार को उन्हे विना शर्त छोडना पडा।

सुभाष बाबू ने जेल से आकर देखा कि बगाल देश-बन्धु जी की मृत्यु के पश्चात् अनाथ-सा हो गया था। आप अपने स्वास्थ्य की चिता छोडकर बगाल की विशृखलित शक्तियो को बटोरने पर जुटगए। उसी वर्प मद्रास-काग्रेस अधिवेशन मे आप पडित जवाहरलाल के साथ कॉग्रेस के जनरल सेक्रेट्री बने।

सुभाप बाबू न काग्रेस मे पडित जवाहर लाल के सहयोग से औपनिवेशिक स्वराज्य के स्थान पर पूर्ण स्वराज्य का नारा वुलन्द किया। लखनऊ मे वाम पक्षियो ने एक वैठक मे इण्डिपेण्डेन्स लीग की स्थापना की।

दूसरे वर्ष भारतीय शासन-विधान की जॉच के लिए साइमन कमीशन भारत आया। इसमे सब अग्रेज सदस्य थे।

काग्रेस ने इसमे आधे भारतीय सदस्य रखने की मॉग की परन्तु सरकार ने उसे ठुकरा दिया। फलस्वरूप काग्रेस ने साइमन कमीशन के बहिष्कार का निर्णय किया। इस वर्ष काग्रेस अधिवेशन कलकत्ते में हुआ। उसमे नेहरू-रिपोर्ट पेश हुई, जिसका सुभाषचन्द्र बोस और जवाहरलाल ने उग्र विरोध किया। महात्मा गाधी ने बीच मे पडकर समझौता कराया कि ब्रिटिश सरकार को एक वर्ष यानी ३१ दिसम्बर सन् १९२९ तक की मोहलत दीजाए। यदि इस बीच मे वह भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य न दे तो फिर काग्रेस पूर्ण स्वतन्त्रता के लिए युद्ध आरम्भ करदेगी। अन्य लोग महात्मा गॉधी के सुझाव से सतुष्ट होगए परन्तु सुभाष बाबू सतुष्ट न हुए। वह तुरन्त युद्ध आरम्भ करने के पक्ष मे थे।

एक वर्ष बीत चला। अगला अधिवेशन लाहौर मे हुआ। पडित जवाहर लाल उसके अध्यक्ष थे। तभी वायसराय इर्विन ने गोलमेज कान्फ्रेस की घोषणा की। काग्रेसी नेताओ ने उसका स्वागत करके मेनीफेस्टो जारी किया परन्तु सुभाष चन्द्र बोस ने उसपर हस्ताक्षर नही किए। वह पूर्ण स्वतन्त्रता की माँग पर अडिग थे।

लाहौर-काग्रेस मे स्वाधीनता प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास हुआ। इसी बीच लार्ड इरविन की गाडी को डायनामाइट से उडादेने का प्रयास हुआ जिसमे इर्विन बाल-बाल बच गए। महात्मा गॉधी ने वायसराय को बधाई प्रस्ताव भेजा। सुभाष बाबू ने उसका भी विरोध किया। लाहौर

अधिवेशन मे सुभाष बाबू की खूब धूम रही परन्तु हार उन्हे अपने हर प्रस्ताव पर खानी पड़ी क्योकि जवाहरलाल महात्मा गाँधी की ओर झुकजाते थे।

२६ जनवरी सन् १९३० को देश के हर नगर मे 'स्वाधीनता दिवस' मनाया गया। कलकत्ते मे चीफ कमिश्नर ने जुलूस पर रोक लगादी। उस समय सुभाष बाबू कलकत्ता के मेयर थे। आपने निश्चय किया कि जुलूस निकालाजाएगा और जुलूस कारपोरेशन-स्ट्रीट से होता हुआ आगे बढा। पुलिस ने उसे रोका। सुभाष सबसे आगे थे। गगनभेदी नारो से वायु-मडल गूँजरहा था।

पुलिस ने लाठी-वर्षा आरम्भ की। सुभाष बाबू के निकट खडे कारपोरेशन के शिक्षा अध्यक्ष श्री के० पी० चटोपाध्याय का सिर फटगया। सुभाष भी घायल हुए परन्तु अपने स्थान से हिले नही। अन्त मे पुलिस ने उन्हे बन्दी बनालिया। आपको अलीपुर जेल भेजदिया गया। जेल मे एक दिन आप को इतना मारा-पीटा गया कि आप दो घटे तक बेहोश रहे। इस घटना पर देश के कोने-कोने से विरोध प्रकट किया गया।

सितम्बर मास मे आप मुक्त हुए परन्तु जनवरी मे स्वतन्त्रता-दिवस का नेतृत्व करतेहुए आपको फिर बन्दी बना लिया गया। इस जूलूस पर भी लाठियो की वर्षा हुई थी जिसमे सुभाष बाबू बुरी तरह घायल हुए थे। आपको सजा तो लम्बी हुई परन्तु गाँधी-इर्विन समझौता होजाने के

कारण जल्दी ही मुक्त होगये ।

महात्मा गाँधी गोलमेज कांफ्रेंस मे इग्लंड गए परन्तु कोई लाभ न हुआ। उन्होने लौटते ही काग्रेस कार्य समिति बुलाई। सुभाष बाबू उसके सदस्य नही थे। आपको विशेष निमन्त्रण पर गाँधी जी ने बुलाया। सरकार ने काग्रेस को अवैध घोपित करके नेताओ को गिरफ्तार करलिया।

सुभाष बाबू को पहले ही यक्ष्मा को शिकायत थी। जेल मे जाकर शिकायत और बढगई। ऐसी दशा मे उन्हे सरकार ने मुक्त तो करदिया परन्तु देश मे नही रहने दिया। विदेश जाकर भी आपको जर्मनो जाने की आज्ञा नही थी। आपने वायना मे चिकित्सा कराई। आपने वायना के मेयर कार्लसीज से भेट की जिसने आपको समाजवादी प्रजातन्त्र के कामो से अवगत कराया। आपने शोम्ब्रम का सैनिक प्रदर्शन भी देखा। वही पर आपकी केन्द्रीय असेम्बली के अध्यक्ष श्री बिट्ठलभाई पटेल से भेट हुई। इन दोनो ने भारत मे साम्यवादी सघ स्थापित करने की योजना बनाई।

बिट्ठल भाई ने सुभाप चन्द्र बोस को विदेशो मे भारतीय विचार धारा का प्रचार करने के लिए एक लाख रुपया दिया। तभी लन्दन के भारतवासियो ने एक सर्वदल सम्मेलन आयोजित किया और सुभापचन्द्र बोस को सभापति पद के लिए बुलाया परन्तु ब्रिटिश सरकार ने आपको पासपोर्ट नही दिया। आपने अपना लिखित भापण वहाँ भेजा। इस भाषण मे आपने १९३१ के महात्मा गाँधी-इरविन समझौते और १९३ ३

के महात्मा गाँधी के आत्मसमर्पण को महात्मा गाधी की भयकर भूल बताया। आपने महात्मा गाँधी के नेतृत्व को असफल कहा। आपने कांग्रेस को उग्र नीति अपनाने की सलाह दी।

१० जौलाई को सुभाष बाबू प्रेग गए। वहाँ आपका शानदार स्वागत हुआ। इसी बीच आपके पिता इतने बीमार हुए कि बचने की आशा न रही। यह समाचार मिलते ही आप हवाई जहाज से भारत लौटे। भारतभूमि पर पैर रखते ही आपको सीधा अपने घर जाने की सरकारी आज्ञा मिली जिसके अनुसार आप घर से बाहर नही जासकते थे। आपके घर पहुँचने के कुछ देर पश्चात् ही आपके पिता का स्वर्गवास होगया।

पिता की मृत्यु के तुरन्त बाद आपको फिर विदेश जाने की सरकार ने आज्ञा दी। उस आज्ञा के विरोध मे आपने लिखा, "मैं विदेश मे स्वतन्त्र रहने की अपेक्षा अपने देश के बन्दीगृह मे रहना पसन्द करूँगा।" परन्तु सरकार राजी न हुई। आपका स्वास्थ्य अभी ठीक नही था। आपके डाक्टरो ने भी आपको दुबारा वियाना जाने की अनुमति दी। १० जनवरी सन् १९३४ को आप वियाना के लिये रवाना हो गए।

सुभाष बाबू ने योरोप का भ्रमण करते हुए 'इण्डियन-स्ट्रगिल' पुस्तक लिखी जो भारत मे जब्त करली गई। आपने रोम मे अफगानिस्तान के भूतपूर्व सम्राट अमानुल्ला खाँ से

भेट की। जिनेवा मे बिट्ठल भाई पटेल की मूर्ति का उद्घाटन किया। आयरलेड मे आपका शाही स्वागत हुआ । इससे भारत और आयरलेड मे मित्रता बढी।

इसी बीच लखनऊ मे कांग्रेस अधिवेशन हुआ जिसके अध्यक्ष प० जवाहरलाल थे। जवाहरलाल ने सुभाप बाबू को इस अधिवेशन में आमत्रित किया परन्तु सरकार ने आपपर भारत न आने का नोटिस सर्व कर दिया। सुभाष बाबू सरकारी नोटिस की परवाह न करके भारत के लिए चल पडे।

अप्रैल १६३६ मे आप भारत आगए। लाखो नर-नारी आपके स्वागत के लिए एकत्रित थे परन्तु आपको भारत-भूमि पर पैर रखते ही बन्दी बनाकर यर्वदा जेल मे भेज दिया। सरकार के इस कार्य से सारे देश मे भयकर क्रोध की लहर दौड गई। पडित जवाहरलाल ने कहा, "भारत की नौकर-शाही भारतीय जनता की नागरिक स्वतन्त्रता का अपहरण कितना निर्दयता के साथ कररही है, इसका इससे ज्वलत उदाहरण और क्या होसकता है ?" भारत के विभिन्न नगरो में सभाएँ हुई जिनमे सरकार की निदा की गई। केन्द्रीय एसेम्बली मे 'काम रोको' प्रस्ताव रखेगए। विवश होकर भारत-सरकार को अपनी आज्ञा वापस लेनी पडी और आपको मुक्त कर दिया गया।

सुभाप बाबू मुक्त होकर फिर इग्लेड गए। आपका लदन मे शानदार स्वागत हुआ। आपने कई सभाओ मे भाषण दिए और पत्रो मे आपके लेख छपे। आपने ब्रिटिश लोकमत

को प्रभावित किया।

१९३८ का काग्रेस-अधिवेशन हरिपुरा मे होना था सुभाष बाबू उसके अध्यक्ष चुने गये। आप करॉची हवाई अड्डे पर आकर उतरे। वहाँ आपका अभूतपूर्व स्वागत हुआ। यह कॉग्रेस का ५१ वॉ अधिवेशन था। इसके ५१ फाटक थे और उन पर ५१ झंडे फहरारहे थे। ५१ बैलो की गाड़ी पर आपका जुलूस निकाला गया।

स्वास्थ ठीक न रहने पर भी काग्रेस-अध्यक्ष की हैसियत से सुभाष बाबू ने देश का दौरा किया। नया शासन विधान भारत पर लद चुका था। कॉग्रेस ने सूबो मे अपनी सरकारे भी बनाली थी परन्तु सुभाष बाबू की दृष्टि भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता पर ही थी। इन सुधारो से उन्हे कोई सतोष नही था। वह भारत मे शासन फासिस्ट और अर्थ व्यवस्था मार्क्सिस्ट रखना चाहते थे। परन्तु काग्रेस के अन्य नेता फासिज्म विरोधी थे इसलिये उनका सुभाष बाबू से विरोध स्वाभाविक ही था।

इसके अतिरिक्त महात्मा गॉधी का हर सग्राम समझौते से समाप्त हुआ। सुभाप बाबू समझौते को राष्ट्र की कमजोरी समझते थे। उनकी दृष्टि मे यह राष्ट्र का अपमान था। इस प्रकार सुभाप की नीति मे और महात्मा गॉधी की नीति म अन्तर आगया।

काग्रेस का बारहवा अधिवेशन त्रिपुरा मे होना निश्चित हुआ। इसके सभापति पद के लिए सुभाष चन्द्र बोस, अब्बुल

कलाम आजाद और पट्टर भाई सीतारमैया के नाम सामने आए। आजाद ने पट्टा भाई के पक्ष मे अपना नाम वापस लेलिया। दक्षिण पथी नेताओ ने पट्टा भाई के पक्ष मे वक्तव्य प्रकाशित किए परन्तु चुनाव मे सुभाष ही विजयी हुए।

सुभाष बाबू की विजय से दक्षिण पथी नेताओ को गहरी ठेस लगी। महात्मा गाँधी ने अपने वक्तव्य मे इसे अपनी हार माना। आपने पट्टा भाई के पक्ष मे सुभाष बाबू को अपना नाम वापस लेने को लिखा था परन्तु सुभाष ने उनकी बात नही मानी।

सुभाष बाबू महात्मा जी से मिले परन्तु कोई निश्चय न हुआ। महात्मा गाँधी के सकेत पर कार्य समिति के दक्षिण पंथी सदस्यो ने अपने इस्तीफे सुभाष बाबू के पास भेजदिये। जब ये इस्तीफे सुभाष बाबू के पास पहुँचे तो सुभाष बाबू अचेत थे। सचेत होने पर उन्हे बहुत दु ख हुआ।

गाँधी जी से सघर्ष के फलस्वरूप सुभाष बाबू ने अध्यक्ष-पद से इस्तीफा दे दिया। राजेन्द्र प्रसाद अध्यक्ष-चुनेगए।

अब सुभाष बाबू ने वाम-पक्षियो के 'फार्वड-ब्लाक' की स्थापना की। १९२७ मे मॉडले जेल से छूटने पर ही आपने 'फार्वर्ड ब्लाक' बनाने की बात सोची थी। सुभाप बाबू कॉग्रेस से प्रथक होगए।

: ३ :

द्वितीय महायुद्ध

सुभाष चन्द्र बोस को इस प्रकार काग्रेस से प्रथक करके ही दक्षिण पथी काग्रेसियो ने सतोष की श्वॉस नही ली। ये लोग पूँजीपतियो से मिले हुए थे। इसलिए सभी पत्र इनके हाथो की कठपुतली थे। उन पत्रो मे सुभाष चन्द्र बोस के शर्मनाक कार्टून छापकर इन लोगों ने उनका उपहास किया परन्तु सुभाष चन्द्र बोस पर उनका कोई प्रभाव नही पडा। फार्वर्ड-ब्लाक की स्थापना करके आप देश के दौरे पर निकले।

काग्रेस महासमिति ने अपने कार्यकर्त्ताओ को हिदायत करदी कि वे सुभाष के सत्कार-आयोजनो मे भाग न ले और उनके लिए कोई आयोजन न करे। कोई आदमी व्यक्तिगत रूप से भी उनमे शरीक न हो परन्तु काग्रेस कार्यकर्ताओ ने इस आज्ञा की अवज्ञा की। उन्होने नीचता की हद करदी। वे सुभाष बाबू के जलूसो मे उनपर आरोप लगाने, हुल्लड़ मचाने और सभा को भग करने के लिए आए। पटना मे आपके स्वागत के लिए जो फाटक बनाए गए उनमे आग लगादी। सुभाप बाबू पर जूते फेके गए और लाठी चली।

सुभाष बाबू इन हरकतो से भयभीत होनेवाले नही थे। आपने बम्बई मे डाक्टर अम्बेडकर और जिन्हा से बातचीत

की। आप काग्रेस हाई कमाड से मोर्चा लेने की तैयारी कर रहे थे। सुभाप बाव के उग्र आन्दोलन से हाई कमाड घवरा उठी। बगाल मे उन्हे पैर रखने का ठिकाना न रहा। ११ अगस्त की काग्रेस कार्य-समिति ने सुभाप वावू को तीन वर्ष के लिए कॉग्रेस से निकाल दिया। सुभाष वावू ने उसका स्वागत किया परन्तु ऐसी दशा मे भी बंगाल प्रान्तीय काग्रेस ने आपको अपना प्रधान चुना। इस अपराध के लिए प्रान्तीय काग्रेस-कमेटी को मुअत्तिल करदिया गया।

काग्रेस की इस कार्यवाही का देशव्यापी विरोध हुआ। इससे हाई कमाण्ड और भी घवरा उठी। डा० राजेन्द्र प्रसाद ने तीन आदमियो की एक जाँच-कमेटी नियुक्त की। कॉग्रेसी नेताओ ने सुभाष का राजनैतिक जीवन समाप्त करने की चेष्टा की परन्तु सफलता न मिली। आपने महात्मा गाँधी को पत्र लिखा, "यदि कॉग्रेस संघ-शासन का विरोध कर पूर्ण स्वतत्रता की माँग करे तो मै कॉग्रेस द्वारा दिएगए कठोरतम दण्ड को भुगतने के लिए उद्यत हूँ।"

उसी समय योरोप के वायु-मडल मे आपत्ति के बादल मडरा उठे। हिटलर ने पोलेड पर चढाई करदी। दूसरी ओर ब्रिटेन और फ्रास ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर-दी। सुभाप बावू ने इस अतर्राष्ट्रीय परिस्थिति मे सोचा कि भारत को कैसे लाभान्वित किया जाय। इस कार्य के लिए यदि उन्हे किसी विदेशी शक्ति से भी सहायता लेनी पडे तो वह उसके लिए तैयार थे। वह रूस से आशा करते थे कि

उन्हे सहायता मिलसकेगी।

सुभाष बाबू जब बिहार का दौरा कररहे थे तो स्वामी सहजानद से आपने इस विषय मे बाते की। सुभाष बाबू उसी समय भारत से भागजानें की तैयारी करनेलगे।

युद्ध छिड़ते ही कॉंग्रेस के मत्री-मडलो ने इस्तीफे देदिए महात्मा गाधी के रवैये से भी यह स्पष्ट होगया था कि वह उस सकट-काल मे ब्रिटेन-सरकार को परेशान करने पर तुले थे। परन्तु साथ ही ब्रिटेन के किसी आश्वासन पर वह उसकी सहायता भी कर सकते थे। महात्मा गाँधी समझौतावादी थे और समझौते के अवसर की फिराक मे थे।

६ सितम्बर को महात्मा गाधी की वायसराय से भेट हुई। लोगो ने समझा कि कॉंग्रेस का सरकार से कोई समझौता होजायेगा। जवाहरलाल और राजेन्द्रप्रसाद के वायसराय से मिलने पर यह आशका और भी निखरगई। ९ अक्टूबर को वर्धा मे अखिल भारतीय कॉंग्रेस की मीटिग हुई। उसमे पास हुआ, "काग्रेस ब्रिटिश सरकार को भारत के सम्बन्ध मे युद्ध तथा शान्ति का पूरा अवसर दिए बिना कोई निश्चय नही करेगी।"

इस प्रस्ताव पर सुभाष बाबू ने कहा, 'जो दल "ठहरो और देखो' की नीति पर चलता है वह स्वय मूर्ख सावित होता है।" आप इस नीति के शुरू से विरोधी थे। ब्रिटिश नौकरशाही के साथ कॉंग्रेस कोई समझौता करे, यह वह नही चाहते थे। रामगढ-काग्रेस-अधिवेशन पर समझौता विरोधी

सम्मेलन का सभापतित्व करते हुए सुभाष बाबू ने स्पष्ट शब्दों मे कहा, "इस सम्मेलन का उद्देश्य साम्राज्यवादी शक्तियो का विरोध करना है। कांग्रेस को स्पष्ट घोषणा करनी चाहिए क्योकि समझौते के सब द्वार बन्द होचुके है। हमे इस अवसर पर चूकना नही चाहिए।"

इस सम्मेलन के पश्चात सुभाष बाबू ने अपना ध्यान कलकत्ते के हालवेल मानूमेन्ट की ओर लगाया। वह भारत के मस्तक पर कलक था। आपने बगाल-सरकार को लिखा कि यदि तुमने ३ जौलाई सन १६४० तक यह मानूमेन्ट न हटाया तो इसके विरुद्ध सत्याग्रह कियाजाएगा।"

बगाल सरकार ने २ जौलाई को ही भारत-रक्षा-कानून के आधीन सुभाष बाबू को गिरफ्तार करलिया। ३ तारीख से सत्याग्रह आरम्भ हुआ, जिसके फलस्वरूप अन्त मे उसे सरकार ने हटा दिया परन्तु सुभाष को नही छोड़ा।

सुभाष बाबू ने अब अपने प्राणो की बाजी लगा कर २६ नवम्बर को आमरण अन्शन किया। सरकार ने सुभाष बाबू के इस निर्णय से घबराकर उन्हे मुक्त दिया।

सरकार का नियत्रण होने पर भी २६ जनवरी सन् १६४१ को सुभाष बाबू देश से बाहर चलेगए।

सुभाष बाबू का पलायन

२७ जनवरी सन १९४१ की सुबह देश के एक कोने से दूसरे कोने तक खबर फैलगई कि सुभाष बाबू २६ जनवरी की रात्रि को सरकारी पहरेदारो और गुप्तचरो की आँखो मे धूल झोककर लापता होगए। आपके लापता होने के विषय मे कई लोगो ने कई प्रकार के अनुमान लगाए। कुछ ने समझा कि वह योग-साधन के लिए जगलो मे चलेगए।

सुभाष चन्द्र बोस का विश्वास था कि ब्रिटिश साम्राज्य को भारत-भूमि से उखाड-फेकने के लिए शक्ति की आवश्यकता है। उन्होने सशस्त्र विद्रोह और बाहरी आक्रमण द्वारा भारत को मुक्त करने का यह सबसे उपयुक्त अवसर समझा जबकि अग्रेज खतरे मे थे और उनपर जर्मनी का भीषण आक्रमण होरहा था।

सुभाष बाबू के गुप्तचर टोकियो जाकर रूस तथा धुरीराष्ट्रो के प्रतिनिधियो से भेट कर आए थे। रूस पर जर्मनी का आक्रमण होने से पूर्व सुभाष बाबू रूस से ही सहायता प्राप्त करने का विचार कर रहे थे। उस समय जर्मनी ने रूस को भारत और ईरान की ओर बढने की छूट दीहुई थी। इसीलिए भारत से बाहर जाने मे कुछ कम्युनिस्टो ने सुभाष बाबू की सहायता का वचन दिया था।

सुभाष बाबू काफी दिन पूर्व मास्को जाना चाहते थे परन्तु उचित प्रबन्ध न होने के कारण जाने मे विलम्ब हुआ। दो मास पूर्व जब कुछ कम्युनिस्टो ने आपके निकलभागने का प्रबन्ध किया तो आप कलकत्ता कारपोरेशन के एक काम और दाढी पूरी न बढने के कारण न जासके।

कारपोरेशन का कार्य पूरा करके सुभाष बाबू ने घर से निकलना बन्द करदिया था। बीमारी का बहाना बनालिया और डाक्टर ने आपको पूर्ण विश्राम की सलाह दी। आवश्यक बाते केवल टेलीफोन पर करते थे। आपने अपने नौकर-चाकरो को भी अन्दर आने को मना कर दिया। वे भोजन भी बाहर से ही अन्दर रखजाते थे।

एक दिन जमनादास मेहता बम्बई से आये और शरद बाबू के घर ठहरे। दोपहर को शरदबाबू तथा जमनादास ने सुभाष के साथ भोजन किया। उसी बीच एक आदमी आया, जिसे देखकर सुभाष बाबू भोजन से उठकर बाहर चलेगए। उसी दिन रात्रि के आठ बजे आप एक मौलवी के वेश म घर से निकले। सडक पर मोटर खडी थी। उस मोटर पर आप सवार होगए।

वही मोटर आपको बर्दवान लेगई। बर्दवान से पजाब-मेल मे पेशावर के लिए सवार हुए। सीट पहले से रिजर्व थी। जब गाडी किसी स्टेशन पर पहुँचती थी तो आप सिर नीचा करके अखबार पढने लगते थे। अखबार से उनका चेहरा ढकजाता था।

२७ जनवरी को दिन के दो बजे आप पेशावर पहुँचे । उनके मित्र पहलेस्टेशन पर मौजूद थे । सुभाष बाबू मोटर में ही उनके डेरे पर चलेगए ।

पेशावर से काबुल जाने का प्रबन्ध दो दिन में हो पाया । इस लिए दो दिन तक पेशावर में ही ठहरना पड़ा । २९ जनवरी को पठान के वेश में वह भगतराम के साथ काबुल के लिए रवाना हुए । आपने अपना नाम जियाउद्दीन और भगतराम का रहमतखाँ रख लिया । उनके साथ दो अङ्ग-रक्षक भी थे ।

एक रात आपने गढ़ी गाव में बिताई । मोटर आगे नहीं जासकती थी, इसलिए उसे वहीं छोड़दिया । आगे पैदल जाना था । कोई उनसे कुछ पूछे नहीं इसलिए दोनों गूंगे और बहरे बनगए थे ।

अगले दिन वहाँ से विदा होते समय खान ने उन्हे एक पत्र देकर कहा, "अगर रास्ते मे कोई तुम्हे तंग करे तो यह पत्र दिखा देना। इस पत्र से तुम्हे अफगानिस्तान मे कोई तकलीफ न होगी।"

उस पत्र मे लिखा था, "जियाउद्दीन और रहमतखाँ आजाद कबीले के रहनेवाले है। मैं इन्हे जानता हूँ। ये लोग सखी साहब की जियारत को जारहे है।"

वहाँ से आगे चलकर आपके मार्ग मे एक नदी आई। उसे पार करने के लिए नाव नही थी। वह नदी आपने मशक पर बैठकर पार की।

नदी के पार अफगान-राज्य था। वहाँ हथियार लेकर कोई यात्रा नही करसकता था। इसलिए आपके शास्त्रधारी अगरक्षक वही से वापस लौटगए। अब आप और रहमतखाँ ही आगे बढे। जब आप ठाका चुगी पर पहुँचे तो आपका पासपोर्ट देखागया और सामान की तलाशी लीगई। उसमे कोई आपत्तिजनक चीज नही थी।

चुगी से आगे बढकर इन लोगो ने एक पेड के झुरमुट मे जाकर आराम किया। वही पर लारी ठहरती थी। वहाँ उन्हे सध्या को एक ट्रक मिला जिसपर वे सवार हुए। उस ट्रक से दूसरे दिन वे खाक पहुँचे। वहाँ भी पासपोर्ट देखा-गया और पूछ-ताँछ कीगई। सुभाष बाबू चुप रहे। रहमत-खाँ बोला, "यह मेरा बड़ा भाई है। यह बहरा और गूँगा है। मै इसे लखी साहव की जियारत के लिए लेजारहा हूँ।

हम लोग आजाद कवीले के रहनेवाले है।" यह कहकर उसने लालपुरा वाले खान का पत्र उन्हे दिखाया।

खाक से चलकर वे लोग चार वजे कावुल पहुँचे। वहाँ जाकर वे एक सराय मे गए। उसमे ऊपर की मजिल मे एक कमरा लिया। दो रुपये देकर दो खाट ली। ठड से दोनो सिकुडे जारहे थे। कुछ लकडियो का प्रवन्ध करके हाथ पैर सेके। फिर वाजार से कुछ मँगाकर दोनो ने पेट भरा और लेटरहे।

सुभाप वावू के गायव होने से भारत मे तहलका मच गया था। भारत-सरकार को जवरदस्त धक्का लगा था। सारे देश मे खोज होनेलगी। सुभाप की सूरत से मिलता-जुलता जो भी आदमी मिला, पकड लिया गया, परन्तु वाद मे छोड देना पडा। हरिद्वार मे वेचारा एक साधू ही पकड लिया गया। भारत-सरकार ने सीमा के सभी नगरो की पुलिस को सचेत किया और कावुल में भी तार द्वारा खवर भेजीगई। इस लिए कावुल मे भी सुभाप वावू की खोज का प्रवन्ध था।

कावुल मे सुभाप वावू पर एक अफगान सी० आई० डी० की दृष्टि पडी। वह आपको थाने लेजाने की धमकी देने लगा। रहमतखाँ ने उसे लालपुरा वाले खान का पत्र दिखाया परन्तु उसपर उसका कोई प्रभाव न हुआ। अन्त में रहमतखाँ ने उसे दस रुपये का नोट देकर विदा किया परन्तु वह नोट देना एक भयकर घटना होगई। अब वह वार-वार आकर

उनसे रुपया ऐंठने लगा ।

दूसरे दिन आप बडी कठिनाई से रूसी लीगेशन के निवास-स्थान पर पहुँचे तो वहाँ अफगान सतरी का पहरा था । उन्हे वापस लौटना पडा । अगले दिन सोचा कि वे लोग फाटक के बाहर ही बैठेंगे और जब उसकी मोटर बाहर निकलेगी तो उससे बाते करेंगे । वे दोनो सुरक्षित स्थान पर बैठकर प्रतिक्षा करनेलगे । संध्या को साडे चार बजे रूसी झडे की एक कार बाहर निकली । रहमतखाँ ने आगे बढकर हाथ के इशारे से मोटर रोकी । रहमतखा ने टूटी-फूटी भाषा मे उनसे सुभाष बाबू के बारे मे बाते की और उनकी ओर सकेत करके बताया ।

"क्या पहचान है कि वह सुभाष बोस है ?" उसने पूछा "मैं तो उन्हे पहचानता नही ।"

रहमतखाँ चुप होगया । इस बात का कोई उत्तर न दे सका । मोटर चलपडी ।

वे लोग निराश लौट आये । सुभाष बाबू ने फिर अपने मित्रो के पास पेशावर सवाद भेजा । साथ ही सोचा कि धुरी राष्ट्रो के किसी राजदूत से सम्पर्क स्थापित कियाजाय । उनसे उन्हे सहायता अवश्य मिलजायेगी । उन्होने सोचा कि बर्लिन अथवा रोम जाने का रास्ता मास्को से होकर है । मास्को उतरकर बर्लिन या रोम के लिगेशन से मिलकर मास्को से जाने का प्रवन्ध करलेगे या रोम पहुँचकर मास्को जाने की आज्ञा प्राप्त करलेगे ।

दूसरे दिन रहमत खाँ इटली के लिगेशन से मिले। उसके गेट के प्रहरी को चकमा देकर वह अन्दर घुसगए। सुभाष बाबू का समाचार पाकर राजदूत उछलपडा। वह बोला, "मै आज ही बर्लिन और रोम सवाद भेजूंगा और बहुत शीघ्र उनकी रवानगी का प्रबन्ध करदूगा। तुम चिता न करो। यहा आने मे तुम्हे कठिनाई होगी। हम लोग अब हरथामस के मकान पर मिला करेगे।"

हरथामस एक जर्मन व्यापारी था। वास्तव मे वह व्यापारी नही था, जर्मनी का गुप्तचर था। ये बाते करके जब रहमत खाॅ लौटने लगे तो राजदूत बोला, "उत्तर आने मे दो सप्ताह लगसकते है। आप तीसरे दिन थामस के मकान पर जाए। उनके यहाॅ आपको मेरा बन्द लिफाफा मिलेगा।"

यह सवाद प्राप्त कर सुभाष बाबू को कुछ सतोष हुआ। अधिक प्रसन्ता इसलिए नही हुई क्योकि वह बर्लिन या रोम न जाकर मास्को जानाचाहते थे परन्तु उस समय काबुल से निकलने का अन्य कोई मार्ग नही था। लाचार होकर उन्हे बर्लिन जाने का निश्चय लेना पडा था।

तीसरे दिन रहमतखाॅ थामस के घर पर गए। उन्हे एक बन्द लिफाफा मिला। उसमे लिखा था, "मैने रोम, बर्लिन संवाद भेजा है। हमारे अधिकारी वर्ग को आपके आने से बहुत प्रसन्नता हुई। उन्होने आपको बधाई दी है और मुझे आदेश दिया है कि मै आपकी हर प्रकार से सहायता करूँ। मै बहुत शीघ्र आपको बर्लिन भेजने का प्रवन्ध करूँगा।"

इसके उत्तर मे सुभाष बाबू ने लिखा, "आप इस व्यवस्था मे तनिक भी विलम्ब न करे क्योकि यहाँ मेरे चारो ओर खतरा-ही-खतरा है। मै आपका आभारी हूँगा।"

सुभाष बाबू अफगानी खुफिया-पुलिस के उस व्यक्ति से तग आगये थे जिसे पहले दिन उन्होने दस रुपए देकर टाला था और तब से वह कितने ही रुपये उनसे ऐठचुका था। उसकी हरकतो से वह तग आ चुके थे। उससे पीछा छुडाने के लिए सुभाष बाबू को अपनी घडी तक उसे दे देनी पडी परन्तु इतने पर भी वह बाज न आया। अन्त मे आपने उस सराय को छोडने का निश्चय किया।

सुभाष बाबू अफगानी खुफिया की आखो से बचकर उत्तामचन्द नामक एक रेडियो-व्यापारी के यहाँ चलेगए। उत्तमचन्द सन् तीस मे पेशावर में रहता था और कॉग्रेस मे जेल गया था। परन्तु यह स्थान भी सुरक्षित न निकला। उत्तमचन्द उस कमरे का ताला बन्द रखते थे, जिसमे सुभाष ठहरे थे। एक दिन लडके की असावधानी से चाय के समय दरवाजा खुला रहगया और उत्तमचन्द के साझीदार ने उन्हे देख ही नही लिया, वरन् पहचान भी लिया।

इससे सब लोग चितित होउठे। सुभाष बाबू बोले, "उत्तामचन्द ! मै अब यहाँ रहकर तुम्हे खतरे मे नही डाल सकता। तुम्हे आपत्ति मे डालने की अपेक्षा मैं कही अन्यत्र रहकर पकडाजाना अधिक पसन्द करूँगा।"

इटेलियन लिगेशन के यहाँ से निश्चित उत्तर आने तक

के लिए सुभाष बाबू ने कही अन्यत्र ठहरने का विचार किया। उत्तमचन्द ने अपने दोस्त हाजी से भेट की, जो सुभाष बाबू का प्रशसक और अग्रेजो का अपने को शत्रु कहता था, परन्तु उन्हे अपने मकान मे छिपाने का खतरा वह भी नही लेना चाहता था।

अन्त मे एक दूसरी सराय मे सुभाष बाबू जाकर रहे। वहाँ ठीक खाना न मिलने से आपको पेचिश होगई। यह एक नई मुसीबत सामने आई क्योकि ऐसी दशा मे किसी डाक्टर को भी उन्हे नही दिखासकते थे। रहमतखाँ ने उत्तमचन्द को सूचना दी तो उत्तमचन्द सुभाषबाबू को फिर अपने ही घर पर लेगए।

सुभाषबाबू को इटलियन राजदूत के भरसक प्रयत्न करने पर भी पासपोर्ट नही मिलरहा था। कारण यह था कि रास्ता मास्को होकर था और मास्को सरकार इसमे हिचक रही थी। वैसे उस समय तक जर्मनी और रूस के बीच अनाक्रमक सधि थी, परन्तु ब्रिटेन के राजनीतिक्ष उसमे तोड़-फोड़ कर-रहे थे। इसीलिए रूसी राजदूत ने सुभाषबाबू मे अधिक दिल-चस्पी नही ली थी।

रूस स्थिति इटालियन राजदूत जब पासपोर्ट लेने मे असफल होगया तो दूसरा मार्ग अपनाया गया। धुरी राष्ट्र सुभाष बाबू को बर्लिन लेजाने के बहुत इच्छुक थे परन्तु सुभाषबाबू मन मारकर ही उधर कदम बढा रहे थे। इसी बीच कई बार इटालियन राजदूत से भेट हुई परन्तु वह अभी

तक जाने का प्रबन्ध नही कर सका था और सुभाष बाबू घबरा उठे थे। दिन रात ताले के अन्दर बन्द पड़े रहकर उनकी दशा खराब होगई थी।

एक दिन आप निराश होकर उत्तमचन्द से बोले, "मैं अब रूस की सीमा मे प्रवेश करना चाहता हूँ। वहाँ पकडा-गया तो स्तालिन को सूचना मिलते ही वह मुझे मुक्त करा लेगा। यहाँ पकडागया तो जीवन भर उद्धार की आशा नही है।"

अफगानिस्तान और रूस के बीच मे हांगो नदी बहती है। उसे पार करते ही रूस की सीमा है। उत्तमचन्द ने एक ऐसे आदमी को खोजा जो सुभाष बाबू को सीमा पार करा-सके। वह मशक से नदी पार कराके उन्हे रूस की सीमा मे लेजाने को उद्यत होगया। इसके लिए उसने ६०० अफगानी सिक्के माँगे तो उत्तमचन्द ने देने स्वीकार कर लिये।

सुभाष बाबू ने रहमत खाँ से काबुल का नक्शा मँगाकर नदी तक जाने का मार्ग निश्चित किया। इस प्रकार चोरी से रूस की सीमा मे प्रवेश करने की तय्यारी होने लगी। रहमतखाँ ने उस आदमी से भेट करके उसे परखा और सब बाते ठीक थी। परन्तु दूसरे ही दिन पासा पलट गया। इटालियन राजदूत ने सूचना दी, "बडी कठिनाई के पश्चात हमारे रूस स्थित राजदूत ने पासपोर्ट प्राप्त कर लिया है। आपको लेने के लिए आनेवाला आदमी एक सप्ताह मे काबुल आजाएगा। आप परसो ग्यारह बजे दरबयान सडक

पर आजाएँ। वहाँ आपको १२ नम्बर की मोटर खड़ी मिलेगी। आप उसमे बैठ जाएँ। वह आपको फोटो खीचने के स्थान पर लेजाएगी। फोटो खिचजाने पर वह मोटर आपको वही छोडजाएगी।"

सुभाष बावू नियत समय पर वहाँ गए और फोटो खीच-ली गई। फोटो खिचवाकर आप लौट आए।

अन्त मे आपने इटालियन राजदूत के निमत्रण को ही स्वीकार करना उचित समझा। इसी बीच इटालियन राजदूत ने सूचना दी कि पासपोर्ट तय्यार होगया है। उन्हे लेनेवाला आदमी भी एक दो दिन मे आनेवाला है।

सुभाष बावू ने अब यात्रा की तैयारी की। उनके लिए कपड़े तैयार कराएगए और सामान का सूटकेस तैयार हो गया। १६ मार्च को वह आदमी भी आगया। उसी दिन तीसरे पहर सुभाष बावू अफगानिस्तान से रवाना हुए।

मार्ग मे सुभाष बावू ने स्टालिन से भेट की परन्तु स्टालिन ने उनमे कोई दिलचस्पी नही ली। इसका कारण यही था कि यो ऊपर से अभी रूस और जर्मनी मे युद्ध नही छिड़ा था परन्तु अन्दर-ही-अन्दर ठनाठनी आरम्भ होगई थी।

: ५ :

आजाद हिन्द सेना

सुभाष बाबू के अचानक गायब होजाने का समाचार तो देश और विदेशो मे फैल चुका था परन्तु अभी किसी को यह पता नही था कि वह कहाँ चलेगए। किसी का खयाल था कि वह रूस गए और कोई समझता था वह जापान गए। निश्चित पता किसी को कुछ नही था।

भारत-सरकार को शक था कि वह जापान चलेगए। इस सम्बन्ध मे सरकार ने लाला शकर लाल को गिरफ्तार किया क्योकि वह जापान होकर आए थे और फार्वर्ड-ब्लाक के कार्यकर्त्ता थे। तभी अचानक २६ अप्रैल सन् १९४२ को बर्लिन रेडियो से सुभाष बाबू का भाषण प्रसारित हुआ। तब लोगो को पता चला कि सुभाष बाबू जर्मनी पहुँचगए, परन्तु भारत-सरकार ने उसे तब भी सत्य न माना।

सुभाष बाबू ने अपने भाषण मे कहा, "भारत वासियो को अब समझ लेना चाहिए कि उनका विश्व मे केवल एक शत्रु है और वह है ब्रिटिश साम्राज्यवाद, जो सौ वर्ष से उनका रक्त चूसरहा है। भारत की आजादी ब्रिटेन की पराज्य मे निहित है। यदि युद्ध मे ब्रिटेन विजयी हुआ तो भारत गुलाम बनारहेगा।

ब्रिटेन के किराये के टट्टू मुझे धुरी राष्ट्रो का एजेन्ट कह-

सकते है परन्तु मेरे देश की जनता जानती है कि मै क्या हूँ। मुझे अपनी देश भक्ति का प्रमाण-पत्र देने की आवश्यकता नही है।

ब्रिटिश साम्राज्य का अत निकट है। ससार की कोई शक्ति उसे नही बचासकती। ब्रिटिश साम्राज्य के पतन मे ही भारत की आजादी निहित है। हमारा पहला आजादी का जग १८५६ मे लड़ागया था और अब १९४२ मे अतिम जग की तैयारी है। हिन्द के जवानो! युद्ध के लिए तैयार होजाओ।

मै बहुत सोच-समझकर इसी परिणाम पर पहुँचा हूँ कि दूसरे राष्ट्रो की सहायता के बिना हम भारत को आजाद नही करासकते। अमरीका ने फ्रास की सहायता से स्वतत्रता हासिल की थी। इसी आधार पर हमे भी जर्मनी और जापान से सहायता प्राप्त करनीचाहिए। हमारा जापान, जर्मनी और इटली की अन्दरूनी राजनीति से कोई सम्बन्ध नही है। अपने देश की आजादी के लिए उनसे सहायता लेने का यह मतलव कदापि नही है कि हमने उनकी अन्दरूनी नीति को स्वीकार करलिया है।

राजनीति मे दुश्मन का दुश्मन अपना मित्र है। इसी आधार पर हमे धुरी राष्ट्रो से सहायता लेनी चाहिए क्योकि ये अग्रेजो के शत्रु है। जब रूस अग्रेजो और अमरीका की सहायता लेकर भी कम्युनिस्ट रहसकता है तो हम धुरी राष्ट्रो से मित्रता रखकर अपनी नीति क्यो नही अपना सकते?

दूसरो से सहायता लेना कमजोरी नही है ।"

सुभाप बोस बर्लिन के शाही होटल मे हिटलर के विशेप मेहमान के रूप मे ठहरे। जब आप हिटलर से भेट करने गए तो हिटलर ने खड़े होकर आपका स्वागत किया और कहा, "योर एक्सीलेसी ! मै आपका स्वागत करता हूँ ।" उसी दिन सध्या को जर्मनी के विदेशी विभाग ने आपको डिप्टी फ्यूहर आफ इण्डिया की उपाधि प्रदान की ।

बर्लिन के पत्रो मे सुभाप बाबू का पूरा चित्र छापा गया और उसी के साथ हिटलर की मुलाकात का व्यौरा। कई पत्रो में आपकी जीवनी भी छापी गई और आपने भारतीय स्वतंत्रता के लिए जो कुछ किया था उसका पूर्ण व्यौरा प्रस्तुत किया गया ।

सुभाष बाबू तीसरे दिन हेमबर्ग गए। उनके वहाँ जाने का समाचार गुप्त रखागया था परन्तु फिर भी लोगो को जाने कैसे समाचार मिलगया। स्टेशन का प्लेटफार्म भीड से खचाखच भरा था। ट्रेन रुकते ही हेमबर्ग के मेयर ने आपको फूलो का गुलदस्ता भेट किया। फौजी सुरक्षा मे आपको मोटर तक लेजाया गया। तभी आपको नाजी पार्टी के मत्री ने सूचना दी कि उन्हे पार्टी की सभा मे भाषण देना था ।

सुभाप बाबू बोले, "मै आपके देश के सामने भारत की दशा प्रकट करूँगा परन्तु पार्टी की बैठक मे भाग नही ले सकता ।"

दूसरे दिन हेमबर्ग कारपरेशन की ओर से आपका शान-

दार स्वागत हुआ । मच पर तिरगा फहरा रहा था । अथाह भीड थी । सडको पर भी तिरगे फहरा रहे थे । भाषण आरम्भ होने से पूर्व वन्दे मातरम् गायागया । फिर मेयर ने मान-पत्र पढा । मेयर ने कहा, "वर्षो पूर्व मैने सुभाष बाबू को क्यानड मे देखा था । तब आप केवल सुभाष थे और आज 'डिप्टी फ्यूहरर आफ इण्डिया ।"

सुभाष बाबू अपने भाषण मे बोले, "मै आरम्भ से ही भारतीय स्वतत्रता का एक सैनिक रहा हूँ । मै आज भी वही हूँ ।"

दूसरे दिन सुभाष बाबू एक युद्ध विशेषज्ञ के साथ एक लडाई के मोर्चे का निरीक्षण करने गए ।

सुभाष बाबू ने आजाद हिन्द फौज का गठन किया । लीबिया तथा अन्य स्थानो पर जो भारतीय सैनिक जर्मनी ने बन्दी बनालिए थे, वे उसमे सम्मिलित होगए । डेसडेन नगर मे उसके आठ बटालियन तैयार किए गए । सुभाष बाबू के साथ हिटलर भी उसका निरीक्षण करने गया । वहाँ एक रेली मे हिटलर ने कहा, "स्वतत्र भारतीयो ! मै भारत की अस्थायी सरकार के प्रधान हिज हाईनेस सुभाष चन्द्र बोस का स्वागत करता हूँ । सुभाष बाबू उन स्वतत्र भारतीयों का नेतृत्व करने आये है जो अपने देश को आजाद करना चाहते है । मै उन्हे कोई सलाह नही दूँगा क्योकि वह स्वतंत्र सरकार के अध्यक्ष है । मेरे ऊपर केवल आठ करोड जर्मनों की सुरक्षा का भार है और यह ३५ करोड भारतीयों को

आजाद कराने के लिए अपनी जान पर इतना बडा खतरा मोल लेकर आये है।"

हिटलर ने जर्मन नेशन को आदेश जारी किया कि वे सुभाष बाबू का उतना ही सम्मान करे जितना वह उनका करते हैं। इस फौज का फील्ड मार्शल रोमेल ने भी निरीक्षण किया। सेना मे हिन्दू और मुसलमान दोनो ही शामिल थ। यह सेना जर्मन फौज के साथ मिलकर मित्र राष्ट्रो के विरुद्ध कई मोर्चो पर लडी।

जर्मनी मे सुभाष बाबू की यूरेशलम के मुफ्ती आजम से भेट हुई। अरब के लोग उनकी बहुत इज्जत करते थे। आप जर्मनी मे अग्रेजो और यहूदियो के विरुद्ध सहायता लेने आये थे। उनका और सुभाष बाबू का एक ही उद्देश्य था। दोनो मे मित्रता होगई। मुफ्ती ने कई बार जर्मन रेडियो पर बोलतेहुए भारतीय मुसलमानो के नाम सन्देश प्रसारित किया कि उन्हे अग्रेजो के विरुद्ध युद्ध करनाचाहिए।

जर्मन सरकार ने सुभाष बाबू को एक हवाई जहाज और एक ट्रासमीटर भेट किया। सुभाष बाबू उसी ट्रॉस-मीटर पर बोला करते थे। सुभाष बाबू को मित्र राष्ट्रो के ब्राडकास्ट भी सुनने की आज्ञा थी। आप बिना रोक-टोक के एशिया और योरोप के मोर्चो पर जासकते थे। आप स्टालिन-ग्रेड के मोर्चे पर भी गए थे। आपने रूस और जर्मन की सुलह कराने का बहुत प्रयास किया, परन्तु सफलता न मिली।

सुभाष बाबू कई बार इटली गए। आपने मुसोलनी और चेयान ो से भेट की। आपने इटली मे भी

आजाद हिन्द लीग की स्थापना की। वह आजाद हिन्द का प्रचार करती थी। उसने इटालियनों को भारतीय लोकमत का परिचय कराया।

जापान जाना

स्टालिनग्रेड के युद्ध से सुभाष बाबू को जर्मनी की विजय मे आशका होगई। उधर जापान से आपके पास बुलावा आरहा था। इसलिए जून सन् १९४३ मे आप एक जर्मन सबमेरीन के द्वारा जापान चले गए। एक दूसरे जापानी सबमेरीन मे उनके आठ सहकारी थे।

सबमेरीन का रास्ता साफ नही था। दिन भर उसे पानी मे डूबारहना होता था। केवल रात को यात्रा होती थी। एक दिन अचानक दिन मे ही सबमेरीन पानी से ऊपर आ-गई और शत्रु के एक पोत की उसपर दृष्टि पडगई। पोत ने उसका पीछा किया। बडी कठिनाई से सबमेरीन उस पोत से बाल-बाल बची।

इस यात्रा मे दो महीने लगगए। दो महीने बाद २० जून को सुभाष चन्द्र बोस टोकियो पहुँचे। टोकियो बन्दर-गाह पर जनरल तोजो ने आपका स्वागत किया। दूसरे दिन जापानी जनता ने आपको मान-पत्र भेट किया। गौतम बुद्ध का सदेश वायुमडल मे गूँज उठा।

टोकियो से सुभाषचन्द्र बोस ने एक सदेश प्रसारित किया, "गत महायुद्ध मे अग्रेजो ने भारतीयो को धोखा दिया। हमने तभी प्रतिज्ञा की थी कि अब हम इनके धोखे मे नही

आयेंगे । २० वर्ष से हम जिस दिन की प्रतिक्षा मे थे वह आगया है। हम इस अवसर पर चूकेंगे नही । अपना सब कुछ खोकर भी हम आजादी हासिल करेंगे । हमे ब्रिटिश साम्राज्य को ध्वस करना है ।"

२१ जून सन् १९४२ को आपने ब्राडकास्ट किया "आज अंग्रेज बुरी दशा के शिकार है । फिर भी वे भारत को नही छोडनाचाहते । हमारा भी पागलपन है जो हम उनसे आशा लगाए बैठे है। हमे अपने दिमाग से यह भ्रम निकाल देना चाहिए ।

अंग्रेज समझौते के द्वारा कभी भारत को पूर्ण स्वतंत्र नही करेंगे । ये समझौते के बहाने भारत को धोखा देंगे । हमे इनसे समझौता नही करना चाहिए । हमे आजादी की कीमत खून से चुकानी होगी । हमे भारत के अन्दर और बाहर, दोनो जगह भारतीय स्वतन्त्रता-सग्राम लडना है ।

समय आगया है जब भारत स्वतंत्र होगा ।"

सुभाष बाबू ने जापान-सरकार से बात-चीत की । जापान ने भारत को स्वतत्र कराने का वायदा किया । जापान राष्ट्र एक मित्र की तरह सुभाष बाबू को सहायता देगा ।

सिगापुर के पतन के बाद वहाँ आजाद हिन्द सेना की स्थापना होचुकी थी परन्तु जापान उसे सदेह की दृष्टि से देखरहा था । इसी शक मे कप्तान मोहनसिह को बन्दी बना लिया गया था । रासबिहारी के प्रयत्न से जापान सरकार का रूख कुछ बदला था परन्तु उस समय तक आजाद हिन्द सेना विश्रृखलित होगई थी ।

मलाया पर जापान का आक्रमण होने पर अग्रेजो ने वहा से अग्रेजो को बचाकर निकाल लिया। भारतवासी वही रह-गए । इससे उन भारतवासियो के मन मे अग्रेजो के प्रति बड़ा रोष था क्योकि उन्हे बहुत हानि सहन करनी पड़ी थी। अग्रेजो की रगभेद नीति से भारतीय सेना के अफसर भी उनसे असतुष्ट होगए थे ।

सिगापुर पर अधिकार करके जापानी मेजर फुचिहारा ने हिन्दुस्तानी अफसरो से कहा कि उन्हे भारतीय सघ की स्थापना करनी चाहिए। कैप्टेन मोहनसिह ने अपने साथियों से कहा, "अग्रेज हमे जापानियो के हाथो मे सौप गए। राशन की कठिनाई के कारण जापानी भी हमे बन्दी नही रखना चाहते। ऐसी दशा मे हमे आजाद हिन्द सेना का गठन करके भारत को स्वतत्र करने का प्रयास करना चाहिए।"

९ अगस्त को सिगापुर मे एक सभा हुई। तभी रास-बिहारी बोस ने मलाया और श्याम के प्रतिनिधियों को टोकियो मे आमन्त्रित किया। ९ अगस्त की बैठक मे मलाया और श्याम दोनो के प्रतिनिधि थे । उन्होने अपना एक शिष्ट-मडल टोकियो भेजा।

२८ से ३० मार्च सन १९४२ तक टोकियो मे रास-बिहारी घोष की अध्यक्षता मे एक सम्मेलन हुआ जिसमे मलाया और श्याम के शिष्ट-मडल ने भाग लिया। सम्मे-लन मे हाग-काग, शघाई और जापान के भी प्रतिनिधि थे। इस सम्मेलन मे पूर्वी एशिया मे भारतीय स्वतन्त्रता-आन्दोलन चलाने का निश्चय हुआ। साथ ही यह भी निश्चय कियागया

कि भारत के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही करने का अधिकार आजाद हिंद सेना को होगा।

आजाद हिन्द सघ का प्रधान कार्यालय सिगापुर मे बना। बैंकाक सम्मेलन से आज़ाद हिन्द-सघ की स्थापना हुई और रास बिहारी बोस उसके अध्यक्ष बने। इसकी एक केन्द्रीय कार्य-समिति बनाईगई। इस सघ की मलाया, वर्मा, श्याम, जापान, सुमात्रा, जावा और अण्डमन मे शाखाये खोलीगई।

इस कान्फ्रेस मे भारत को अखड मानागया। साम्प्रदायिक या धार्मिक आधार पर कोई निश्चय नही लिया गया। सघ का कार्य-क्रम इंडियन नेशनल काग्रेस के आधार पर निश्चित किया गया। इसी के अतर्गत आजाद हिन्द फौज के गठन का निर्णय हुआ। भारती युद्ध-बन्दी सेना मे भर्ती होनेलगे। कैप्टेन मोहनसिह उसके प्रधान सेनापति बने। जापान-सरकार से इस सेना को अपनी सेना के बराबर का अधिकार देने की माँग की गई। सेना का उपयोग केवल भारत को स्वतन्त्र करने के लिए होगा, यह निश्चय किया गया। कान्फ्रेस तिरगे झडे के नीचे हुई थी।

सघ की युद्ध परिपद मे ५ सदस्य थे। ये रासबिहारी बोस, श्री एन० राघवन, के० पी० के० मेनन, कैप्टेन मोहन सिह और कर्नल जी० के० गिलानी थे।

इस सेना मे लगभग पचास हजार सेनिक भर्ती होगए। इस सघ के एक लाख बीस हजार सदस्य बनगए। परन्तु इसी बीच जापान के इवाकोरू केकिन विभाग (जापानी सेना

का औरो से सम्बन्ध जोडने वाला विभाग) और आजाद हिंद की परिषद मे कुछ मन मुटाव हो गया। मन मुटाव यहाँ तक बढा कि केप्टेन मोहनसिह और कर्नल गिलानी को जापान ने ब्रिटिश गुप्तचर होने के सन्देह मे बन्दी बना लिया। इसका भारतीयो पर बहुत बुरा असर पडा। यदि जापान यह भूल न करता तो दिसम्बर १९४२ मे बगाल पर अधिकार कर लिया जाता। बात वास्तव मे यह थी कि जापान की नीयत साफ नही थी। वे भारतीय स्वतत्रता के नाम पर भारतीय सैनिको का उपयोग करना चाहते थे। कैप्टेन मोहनसिह उनकी नीयत को समझ गए थे और वह उनके जाल मे नही फँसना चाहते थे।

कैप्टेन मोहनसिह और गिलानी की गिरफतारी से आजाद हिन्द सेना शिथिल पडगई। तब रासबिहारी बोस जनरल तोजो से मिले। तभी सुभाष बाबू के वहा पहुँचने का समाचार फैला।

बैकाक मे आजाद हिन्द रेडियो की स्थापना हुई। २ जौलाई १९४३ को सुभाष बाबू सिगापुर पधारे। आपके स्वागत मे जो सभा हुई उसमे महात्मा गाँधी का चित्र रखा हुआ था। चारो ओर तिरगे झडे लगे थे। सम्मेलन मे सुभाष बाबू का शानदार स्वागत हुआ। रासबिहारी बोस ने अपना पद सुभाष बाबू को सौप दिया। साथ ही आपको आजाद हिन्द सेना का सुप्रीम कमाण्डर नियुक्त कियागया।

सुभाष बाबू ने कहा, "आज का दिन मेरे जीवन का सबसे गौरव का दिन है। यही सिगापुर एक दिन ब्रिटिश

सरकार का रक्षागार था । यह आज आजाद हिन्द फौज के हाथो मे है । यह सेना भारत को अग्रेजी की गुलामी से मुक्त करेगी ।

साथियो ! हमारा नारा है "दिल्ली चलो ।"

सुभाष बाबू के आते ही जापानी किकान भीगी विल्ली बन गया । आपने ६ जुलाई को आजाद हिन्द फौज को सलामी दी । सुभाष बाबू तोजो के निकट तिरगा झडा लिए खडे थे । सैनिको के दिल उछलरहे थे ।

६ जुलाई को सिगापुर मे विराट सभा हुई । सुभाप बोस ने घोपणा की, "वहनो और भाइयो !

आपके उत्साह और प्रेम का मै स्वागत करता हूँ । आज यह ब्रिटिश सेना का रक्षागार राष्ट्रीयता का रक्षागार है । हम लोग भारत पर बाहर से आक्रमण करके भारतभूमि पर चलनेवाले आन्दोलन के वीरो की सहायता करेगे । समय आगया है जब विश्व देखेगा कि भारत कैसे आजाद होता है ।"

सुभाष बाबू के भाषण ने जनता मे प्राण फूक दिए । २२ अक्टूबर सन १९४३ को सुभाप वाबू ने रानी झॉसी-रेजीमेन्ट की स्थापना की । इस रेजीमेन्ट की कैप्टेन डा० लक्ष्मी स्वामीनाथन को वनाया गया । यह स्त्रियो की सुसज्जित सेना थी ।

नेता जी ने 'वाल-सेना' का भी सगठन किया ।

अव जहॉ-जहॉ से अग्रेज सेना हटरही थी और जापानी सेना जीतरही थी वहॉ के भारतवासियो की सुरक्षा का भार

आजाद हिन्द सेना ने सँभाला। एक दिन सुभाष बाबू ने घोषणा की, "देश के नौनिहालो ! उठो जागो ! अब देर करने का समय नही रहा।"

२३ तारीख को जापान ने भारत की आजाद सरकार को स्वीकृति प्रदान की। इसके तीन दिन पश्चात जर्मन ने तार द्वारा मान्यता प्रदान की। इसी प्रकार स्वतत्र बर्मा, फिलिपाइन्स, टोकियो, इटली, चीन तथा मचूको ने भी मान्यता प्रदान की। आयरलैड के प्रजातन्त्रियो ने सुभाष बाबू को बधाई-पत्र भेजा।

नवम्बर मे वृहत्तर पूर्व एशियाई सम्मेलन मे जो टोकियो मे हुआ जनरल तोजो ने अण्डमन नीकोबार नवीन भारत-सरकार को सौपदिये।

सुभाष बाबू ने हर्ष प्रकट करते हुए अण्डमन नीकोबार को भारत का स्वतत्र प्रदेश माना। आजाद सरकार ने दोनो टापुओ पर अधिकार कर लिया और घोषणा की कि अब सम्पूर्ण भारत को स्वतन्त्र किया जाएगा।

सिगापुर की हिन्दुस्तानी बस्तियो मे अपूर्व हर्ष और उत्साह था। सुभाप वाबू का तुलादान हुआ। स्त्रियों ने अपने जेवर उतार-उतार कर पलडे पर चढा दिए। तभी एक स्त्री ने अपने जेवर चढाए तो डा० लक्ष्मी ने वताया कि उस स्त्री के पति युद्ध मे शहीद होचुके है। सुभाष वाबू ने टोपी उतार कर उसका स्वागत किया।

जिसके पास जो कुछ भी था वह उसने नेताजी पर न्यौछावर कर दिया। माताओ ने अपने लाल, पत्नियो ने

अपने पति, धनवानो ने धन, सबने सब कुछ दिया। जनता मे अपूर्व उत्साह था।

एक मुसलमान व्यापारी ने सुभाष बाबू को एक करोड का दान दिया। उससे आजाद हिन्द-बैक खोलागया। नेताजी ने उसे 'सेवा-ई-हिन्द' पदक प्रदान किया। इस वैक का नाम 'नेशनल बैक आफ आजाद हिन्द' रखा गया।

यह बैक मई १९४५ तक कार्य करता रहा। रगून के पतन के बाद १९ मई १४४५ को वैक पर अग्रेज सरकार का अधिकार होगया। उस समय उस मे ३५ लाख की पूँजी थी।

७ नवम्बर १९४४ को इस नई भारत-सरकार का मुख्य कार्यालय बर्मा मे आगया। इसका प्रधान कार्यालय रगून मे बना। सरकार का प्रवन्ध बहुत गठाहुआ था। कोई भी कर्मचारी मनमानी नही करसकता था।

१८ फरवरी सन १९४४ को आजाद हिन्द सेना ने वर्मा-सीमा पार की और भारत-भूमि पर प्रवेश किया। इम्फाल और कोहिमिया-क्षेत्रो मे अग्रेजी सेना से मोर्चा लिया। दर्जनो स्थानो पर मुठभेड हुई। जीत और हार दोनो मे आजाद-हिन्द सेना ने अपूर्व साहस दिखया। फरवरी से अप्रैल तक का समय इस सेना का युद्ध-काल का था। सुभाष, गाँधी और आजाद ब्रिगेड इम्फाल के मैदान मे थे। गाँधी-ब्रिगेड के सैनिक जब पलेल मे युद्ध कररहे थे तभी नेहरू और आजाद ब्रिगेड ने उनकी सहायता के लिए बढने का निश्चय किया था। लगभग ढाई कम्पनी अग्रेजी सेना से युद्ध कररही थी।

कोहिमिया रणक्षेत्र मे अजमेरसिह थे। यहाँ किकारी एजेसी के सेनिक भी थे। झासी रानी रेजीमेन्ट सेवा सुश्रुशा कार्य कर रही थी। शाहनवाजखॉ के आधीन भारतीय सेना थी। इसी सेना ने मार्च मे पोपा पहाडी पर तिरगा झडा फहराया था।

दिसम्बर के अतिम सप्ताह मे नेताजी शहीद टापू पर पधारे और पोर्ट ब्लेयर पर तिरगा झडा फहराया। शाहनवाज ने मनीपुर मे तिरगा झडा फहराया। इसके पश्चात इस सेना ने टामू, कोहिमा, पलेल और टिड्डिम पर अधिकार किया।

आजाद हिन्द सेना ने पेडो पर तख्ते लटकाए, जिनपर लिखा था "भारतवासियो हमारे साथ अओ और आजादी के लिए लडो।"

दूसरी ओर से भी तख्तियाँ लटकाईगई जिनपर लिखा था, "तुम जापान के गुलाम हो। रोटी के लिए मररहे हो। हमारी ओर आओ, तुम्हे खाना मिलेगा।"

आजाद हिन्द के सैनिको ने तक्ती लटकाई, "गुलामी के घी से आजादी की सूखी घास अच्छी है। हम नेता जी की आज्ञा से लड़रहे है।"

आजाद हिन्द फौज बढते-बढते ब्रह्मपुत्र तक पहुँच गई। आजाद हिन्द सेना की बढती शक्ति को देखकर जापानी मददगार तिलमिला उठे। उन्होने चालाकी से हवाई जहाजो की सहायता बन्द करदी और दूसरी ओर वर्षा आरम्भ होगई। सेना का आगे बढना कठिन होगया। सच यह था कि

युद्ध आरम्भ करने मे देर होगई थी।

बरसात समाप्त होने पर जनवरी १९४५ मे सुभाप बाबू के निरीक्षण मे दूसरा हमला कियागया।

इम्फाल-मोर्चे पर जापानी फौजो ने धोखा दिया। फिर भी आजाद हिन्द फौज जमीरही। उस समय सुभाप बाबू रगून मे थे। युद्ध की स्थिति बदलरही थी। हिरोशिमा और नागासाकी पर अमरीका ने एटमबम गिरादिया था। जापान हारचुका था। ऐसी दशा मे आजाद हिन्द फौज की आशाओ पर भी पानी फिरगया।

उस समय सुभाप चन्द्र बोस २४ अप्रैल को रगून से बैकाक के लिए रवाना हुए। वह विदाई का दृश्य बहुत ही रोमाचकारी था।

२३ अगस्त १९४५ को टोकियो रेडियो से समाचार प्रसारित हुआ कि सुभाप चन्द्र बोस १६ अगस्त १९४५ को टोकियो के लिए रवाना हुए थे। दिन के दो बजे उनका वायु-यान गिरपडा और उनके बहुत चोट आई। उन्हे हौसपिटल ले-जायागया। वहाँ रात्रि मे उनकी मृत्यु होगई।

महात्माजी उस समय पूना मे थे। उन्हे जैसे ही यह समाचार मिला तो उन्होने अपनी कुटिया पर लगे झडे को झुका दिया। देश के सब नेताओ ने इस दुर्घटना पर खेद प्रकट किया।

सुभाष बाबू की मृत्यु का वह सवाद आज तक भी रहस्य बना हुआ है। कुछ इस पर विश्वास करते है और कुछ नही।

पंडित जवाहरलाल

पंडित जवाहरलाल

: १ :

बालकाल

बच्चा सुन्दर और सुडौल था । सम्पन्न परिवार का बच्चा था इसलिए लालन-पालन भी बडे चाव से हुआ । जवाहरलाल की माता का नाम स्वरूपरानी था । माता-पिता दोनो ही उन्हे बहुत प्यार करते थे परन्तु पिता कुछ क्रोधी स्वभाव के थे इसलिए यह उनसे बहुत डरते थे। क्रोधी वह अवश्य थे परन्तु उनका क्रोध क्षणिक ही होता था ।

घर मे माता-पित्ता और जवाहरलाल के अतिरिक्त इनके एक बूढे मु शी थे। वह जवाहरलाल को बहुत लच्छेदार कहानिया सुनाया करते थे। जवाहरलाल उन कहानियो मे बहुत रस लेते थे। मु शी जी जवाहरलाल को १८५७ के गदर की कहानिया अधिक सुनाते थे। उन कहानियो ने आरम्भ से ही जवाहरलाल को अग्रेजो का विरोधी वना दिया था। उन्हे सुनते-सुनते कभी-कभी जवाहरलाल को क्रोध आ-जाता था।

जब जवाहरलाल कुछ बडें हुए तो प० मोतीलाल ने उनकी सवारी के लिए एक गोडा खरीदा। उसी पर जवाहरलाल ने घोडे पर चढना सीखा। अग्रेज घोड़े की सवारी को उच्च परिवारो की सभ्यता की निशानी समझते थे और इस अग्रेजी सभ्यता का प० मोतीलाल पर प्रभाव था। इसीलिए वह चाहते थे कि उनका बच्चा उसी सभ्यता मे पले।

जवाहरलाल को घुडसवारी का ऐसा शौक लगा कि वह अन्त तक बना रहा। जव आप लाहौर काग्रेस के प्रधान बने थे तो जुलूस मे आप घोड़े पर ही चढकर निकले थे । घोडे

पर चढने मे उन्हे विशेष आनन्द आता था।

जवाहरलाल का घोडा बडा चचल था। दोनो मे दोस्ती भी खूब होगई थी लेकिन एक दिन घोड़े पर आपने चाबुक जो मारा तो वह उछल पडा और जवाहरलाल नीचे गिर पडे। घोडा दौड़कर घर पहुँचा तो खाली पीठ था। सब लोगो को बडी चिन्ता हुई परन्तु जवाहर लाल को कोई चोट नही लगी थी और थोड़ी ही देर मे वह भी घर पहुँच गए। इस प्रकार गिरकर भी आपने घोडे की सवारी न छोडी। आप नित्य प्रात काल घोडे की सवारी करते थे।

जब जवाहर लाल की आयु दस वर्ष की हुई तो प० मोतीलाल ने 'आनद-भवन' नाम से एक कोठी बनवाई। यह बहुत शानदार कोठी थी, लगता था जैसे किसी राजा का महल है। कोठी के चारो ओर सुन्दर बागीचा था। एक तालाव भी आपने बनवाया। सध्या समय इसी तालाब के किनारे पर कुर्सियाँ पडती थी और प० मोती लाल के मित्र वहाँ आकर उनपर बैठते थे।

जवाहरलाल को इस तालाव मे स्नान करने का बहुत शौक था। वह घटो उसमे स्नान करते रहते थे।

प० जवाहर लाल का यज्ञोपवीत-संस्कार आनद भवन मे हुआ। भारतीय सभ्यता के अनुसार आपने यज्ञोपवीत धारण किया और व्रत लिए।

प० मोतीलाल नेहरू अपने समय के माने हुए रईस थे। रईसो के सभी गुण और दुर्गुण आपमे विद्यमान थे। शराब

आप खूब पीते थे और नित्य ही कोठी पर शराब का दौर चलता था। माता स्वरूपरानी ने आपकी इस वान को छुडाने का लाख प्रयास किया परन्तु प० मोतीलाल उसे न छोड सके। सच यह था कि उनके कुछ मित्र ऐसे थे जो उन्हे मजबूर करदेते थे। वह छोड देते थे और फिर पीने लगते थे। आपकी यह आदत महात्मा गाँधी के ससर्ग मे आकर छुटी।

एक दिन जवाहरलाल ने आपको शराब पीते देखा तो वह अपनी माता के पास जाकर बोले, "माताजी! पिताजी खून पीरहे है।"

यह सुनकर स्वरूपरानी ने हँसकर जवाहरलाल को गोद मे बिठाकर कहा, "पगले! खून नही, शर्बत है।"

जवाहरलाल ने केम्ब्रिज मे शिक्षा प्राप्त की। वहाँ भारतीय विद्यार्थियो ने एक सभा बनाई हुई थी जिसे 'मजलिस' कहते थे। इस 'मजलिस' मे भारतीय नरमदल के नेता, श्री गोखले ने व्याख्यान दिया। जवाहरलाल ने उसे बडे ध्यान से सुना। फिर दूसरा व्याख्यान लाला लाजपतराय का हुआ। लाला लाजपतराय गर्म दल के नेता थे। जवाहर लाल पर गोखले की अपेक्षा लाला लाजपतराय का अधिक प्रभाव हुआ। आप गरम दल के विचारो से अधिक प्रभावित हुए।

जवाहरलाल को घूमने फिरने का बहुत शौक था। इग्लेड के शिक्षा-काल मे ही आप छुट्टियो मे स्विटजरलेड गए। तालाब और नदी मे नहाने का शौक भी आपका बचपन का

था । एक दिन आप नार्वे की एक तीव्रगामी नदी मे स्थान करने गए । भगवान् की दया ही हुई कि बचगए वरना बहने मे कसर बाकी नही रही थी ।

इसी बीच मे एकबार आप बर्लिन गए । उस समय वहाँ कौटजेपलिन अपने हवाई जहाज का प्रदर्शन कररहा था । अपार भीड़ थी । बर्लिन के शाह कैसर जेपलिन का स्वागत कररहे थे । उस समय जेपलिन का त्रित्र बाँटा गया था । वह चित्र जवाहरलाल ने भी लिया और उसे इतना सुरक्षित रखा कि अत समय तक उनके पास रहा ।

जवाहरलाल ने १६१२ मे बैरिस्ट्री पास की । बैरिस्ट्री पास करके आप भारत लौटे ।

आपके विद्यार्थी-काल मे ही आपके अन्दर स्वदेश-प्रेम के अंकुर उगने लगे थे । आपके मन मे इग्लैड वासियो के स्वतत्र रहन-सहन को देखकर अपने देशवासियों को स्वतंत्र कराने की भावना पैदा होचुकी थी ।

इस समय आपकी आयु केवल २३ वर्ष की थी । २३ वर्ष की आयु मे ही आप बेरिस्टर बन गए थे ।

: २ :

शिक्षा के बाद

सन् १६१२ ई० मे प० जवाहरलाल बैरिस्ट्री पास करके इग्लैड से भारत लौटे। बम्बई मे जहाज से उतरकर आप पहले सीधे मंसूरी गए। उन दिनो उनके माता-पिता गर्मियो मे मसूरी मे ही गए हुए थे। पडित मोतीलाल गर्मियो की छुट्टियो मे आमतौर पर मसूरी चलेजाते थे।

जिन दिनो जवाहरलाल इग्लैड मे थे उन्ही दिनो उनके घर मे उनकी एक बहन ने जन्म लिया था। मसूरी पहुँचकर पडित जी ने अपनी बहन को देखा। उसका नाम 'कृष्णा' था। उसकी आयु उस समय पाँच वर्ष की थी। देखा तो उसने कभी था ही नही जवाहरलाल को, पहचानती भी कैसे? वह उनसे बोली भी नही। उल्टा झगडा करनेलगी। बाद में जब पहचान गई तो फिर उनके बिना उसे चैन ही नहीं पडती थी।

इस समय तक मोतीलाल नेहरू ने राजनीति मे भाग लेना आरम्भ कर दिया था। आपकी गिनती नर्म दल के काग्रेसी प्रमुख नेताओ मे होने लगी थी।

पडित जवाहरलाल नेहरू अपने पिता के नर्म दली होने से सतुष्ट नही थे। आपके विचार क्रातिकारी थे और आप गर्म दल के नेताओ की नीति मे सहमति रखते थे। उन्हे जब

विलायत मे लाला लाजपतराय का व्याख्यान सुनने का अवसर मिला था तभी आपके विचार गर्म दलीय नेताओ के अनुकूल हो गए थे ।

पडित मोतीलाल नेहरू ने बगाल के उन क्रातिकारियो के विरोध मे कुछ कहा था जिन्होने बगाल के विभाजन का विरोध किया था। पडित जवाहरलाल ने आपके इन शब्दो का विरोध किया । आपने कहा, "आपके ये शब्द सरकार को अत्याचार करने के लिए प्रोत्साहित करते है ।"

प० मोतीलाल जवाहरलाल की अपने विचारो की, आलोचना से बहुत क्रुद्ध हुए परन्तु पडित जवाहरलाल ने अपने विचारो मे परिवर्तन न किया । वह अपने विचारो पर दृढ बनेरहे ।

पडित जवाहरलाल की इच्छा थी कि वह देश की जनता को स्वतन्त्रता के लिये तैयार करे परन्तु अभी उचित परिस्थिति नही थी इसलिए आपने वकालत आरम्भ करदी । परतु वकालत मे मन नही लगा । उनका मन कुछ उदास सा रहने लगा । वह प्रयास करने पर भी वकालत मे मन न लगा- सके ।

पडित जवाहरलाल मन लगाने के लिए पर्वत पर शिकार खेलने के लिए चलेगए। उन्हे पर्वतो पर घूमने मे बहुत आनन्द आता था । एक दिन शिकार खेलते समय उनकी गोली से एक हिरनी का बच्चा घायल होगया । इसका उनके मन पर ऐसा प्रभाव पडा कि उन्होने फिर कभी शिकार खेलने

के लिए बन्दूक नही उठाई । हिरनी के बच्चे की दशा देखकर उनकी आँखो मे आँसू आगए ।

उस दिन के पश्चात जवाहरलाल ने बन्दूक नही उठाई । उन्ही दिनो महायुद्ध आरम्भ हुआ । ब्रिटेन ने उस युद्ध मे मुख्य भाग लिया । भारतीय जवानो ने भी उस युद्ध मे खून बहाया ।

भारतीय नेताओ ने अग्रेजो से युद्ध मे भारतीय सहयोग के बदले भारत की आजादी माँगी तो अग्रेजो ने इस माँग करनेवालो को गोली का निशाना बनाया ।

लोकमान्य तिलक ने 'होम-रूल'-आन्दोलन आरम्भ किया । इलाहबाद मे होम-रूल के पक्ष मे बहुत बडी सभा हुई । पडित जवाहरलाल ने इस सभा मे खुलकर भाषण दिया । श्रीमती एनीबेसेन्ट ने 'होम-रूल-लीग' की स्थापना की थी । पडित जवाहरलाल के कहने से प० मोतीलाल नेहरू भी लीग मे भाग लेनेलगे ।

पंडित मोतीलाल नेहरू होम-रूल लीग के सदस्य बनकर गर्म-दल से मिलगए । जवाहरलाल नेहरू ने राजनीति मे सक्रिय भाग लिया । इससेपूर्व जवाहरलाल ने सार्वजनिक सभा मे कभी भापण नही दिया था । यह पहला अवसर था इतनी बडी सभा मे भाषण देने का । आपने प्रेस-एक्ट के विरुद्ध जोरदार भाषण दिया । यह व्याख्यान इतना प्रभावशाली था कि सर सप्रू ने जवाहरलाल की प्रशसा की ।

उन्ही दिनो पडित जवाहरलाल नेहरू का विवाह हुआ ।

आपका विवाह बसतपचमी के दिन हुआ। आपकी पत्नी का नाम कमला था। उनके पिता दिल्ली-निवासी थे। मोतीलाल जी शानदार बारात लेकर दिल्ली आये थे और बारात के ठहरने के लिए जो स्थान बना था उसका नाम नेहरू-नगर रखा गया था। बारात इलाहबाद से दिल्ली स्पेशल ट्रेन से आई थी।

विवाह के पश्चात जवाहरलाल जी अपनी पत्नी के साथ काश्मीर गए। काश्मीर के प्राकृतिक सौदर्य को देखने के लिए आप अपनी पत्नी के साथ कुछ दिन काश्मीर ठहरे।

काश्मीर से इलाहबाद लौटने पर जवाहरलाल जी की महात्मा गाँधी से भेट हुई। उनसे भेट करके आपने महात्मा गाँधी की देश को आजाद कराने की प्रणाली मे विश्वास प्रकट किया। देश को आजाद कराने की उमग आपके मन मे थी ही। मार्ग-दर्शक मिलते ही आप कार्य-क्षेत्र मे कूदपड़े।

स्वतन्त्रता-युद्ध का बिगुल महात्मा गाँधी ने बजा दिया था। नौजवानो का खून खौल रहा था। महायुद्ध मे भारतीय सहयोग का पुरस्कार अग्रेजी सरकार ने अपनी दमन-नीति से दिया था। उससे भारतीय जनता क्रुद्ध होचुकी थी।

उसी समय महात्मा गाँधी ने असहयोग का नारा लगाया। यह राजनीति मे एक नया हथियार था, जिसका सर्वप्रथम महात्मा गाँधी ने प्रयोग किया। भारतीय नौजवान इस अस्त्र को लेकर स्वतन्त्रता-सग्राम मे कूदपड़े। असहयोग और सत्याग्रह की नीति को लेकर जवाहरलाल ने भी सग्राम मे भाग लिया। आपने तुरन्त जेल जाने की तैयारी की।

काश्मीर की विवाह-यात्रा समाप्त होचुकी थी । अब जेल-यात्रा का पथ सामने उन्मुक्त था ।

पडित मोतीलाल नेहरू को जवाहरलाल का यह इरादा ज्ञात हुआ तो वह बहुत चितित हुए । उन्होने महात्का गाँधी से कहकर जवाहरलाल को जेल जाने से रोकने का प्रयास किया । प० मोतीलाल की अनुमति न जानकर महात्मा गाँधी ने भी जवाहरलाल को उस समय जेल जाने की अनुमति नही दी । परन्तु यह प्रतिबन्ध कब तक चलसकता था । जवाहर-लाल के हृदय मे भारत को स्वतन्त्र कराने की जो ज्वाला प्रज्वलित होचुकी थी, उसे इस तरह शात नही किया जा-सकता था ।

सत्याग्रह का युद्ध आरम्भ हुआ । भारत के विभिन्न नगरो मे मोर्चे लगाए गए । अग्रेज सरकार भी गोला-बारुद से लैस होकर निहत्थे असहयोगी सत्याग्रहियो और निरीह जनता पर आग बरसाने के लिए उद्यत हुई । युद्ध ठनगया । अमृतसर, अहमदाबाद, दिल्ली आदि नगरो मे भयकर काण्ड हुए । शाति के साथ होनेवाली काग्रेस की असहयोग-सभाओ पर अग्रेज सरकार ने आखे बन्द करके गोलिया बरसाई और हजारो आदमियो को चने के दानो की तरह भूनदिया ।

जवाहरलाल नेहरू ने पत्रो मे इन घटनाओ के विवरण पढे तो उनके रोगटे खडे होगए । इन घटनाओ को प० मोतीलाल जी भी सहन न करसके । वह स्वय भी सग्राम

मे कूद पडे। पिता के सग्राम मे कूदने पर पडित जवाहरलाल को रोकनेवाला कौन था।

अब प० जवाहरलाल ने राजनीति मे सक्रिय भाग लेना आरम्भ कर दिया। देशबन्धु दास की सहायता का कार्य आपने अपने हाथ मे लिया। उसी समय पडित जी के घर एक पुत्री ने जन्म लिया। उसफा नाम इन्दिरा रखागया।

उस समय पडित जी की पत्नी कमला का स्वास्थ्य ठीक नही था। इसलिए माता स्वरूपरानी कमला को साथ लेकर मसूरी चली गई। उन दिनो मसूरी मे अफगानिस्तान के कुछ प्रसिद्ध व्यक्ति आएहुए थे। पडित जवाहरलाल मसूरी पहुँचे तो सरकार ने उन्हे आज्ञा दी कि वह अफगानिस्तानियो से भेट न करे। यदि वह उनसे भेट करने का इरादा करेगे तो उन्हे मसूरी छोड़नी होगी। पंडित जवाहरलाल ने उनसे भेट करने का इरादा न बदला तो सरकार ने आपको मसूरी छोड़ने की आज्ञा दी। जवाहरलाल को मसूरी से चलाजाना पड़ा।

कुछ दिन पश्चात् जब सरकार ने जवाहरलाल से यह पाबन्दी उठाली तो वह मसूरी गये और उन्होने उन अफगानिस्तानियो से भेट की।

मसूरी से इलाहबाद लौटकर पडित जवाहरलाल राजनीति मे पूरी तरह घुसगए। प्रतापगढ के किसान नेता बाबा रामचन्द्र ने दो सौ किसानो के साथ आकर पडित जवाहरलाल से भेट की। यह राजनीति मे आपका प्रथम प्रवेश

माना जाना चाहिए । बाबा रामचन्द्र ने आपको अपने देहात मे आमन्त्रित किया तो आपने पैदल उन गाँवो की यात्रा की ।

सयुक्तप्रान्त मे किसानो का आन्दोलन चलरहा था। आन्दोलन को पडित जवाहरलाल का नेतृत्व मिला तो आन्दोलन जोर पकड गया । सरकार ने आन्दोलन को दबाने के लिए कई जगह गोलियो की बौछार की । कमला मसूरी मे बीमार पडी थी और पडित जवाहरलाल किसान-आदोलन का गोलियो की बौछारो के बीच नेतृत्व कर रहे थे ।

पडित जवाहरलाल पर महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व का बहुत गहरा प्रभाव पडा था । आपके पिता पडित मोतीलाल जी भी गाँधीजी से बहुत प्रभावित थे ।

भारतीय जनता अग्रेजो की दमन-नीति का जमकर मुकाबिला कररही थी । नौजवानो ने गाँधीजी की एक आवाज पर गोलियो के सामने अपने सीने खोल लिए थे । उसी समय एडवर्ड अष्टम के भारत आने की सूचना गाँधीजी को मिली । महात्मा गांधी ने तुरन्त युवराज का बहिष्कार करने की घोषणा करदी । निश्चय किया गया कि युवराज भारत के जिस नगर मे भी आएँ वही पर उनका काले झडो और 'गो-बेक' के नारो से स्वागत किया जाए ।

इलाहाबाद मे इस स्वागत का भार पडित मोतीलाल को सौपा गया । अग्रेजो की दृष्टि मे यह महान् अपराध था । इस अपराध मे पिता, पुत्र दोनो को वन्दी बना लिया गया । इसमे पडित मोतीलाल को छै महीने और जवाहरलाल को

तीन महीने की सज़ा हुई। दोनो को लखनऊ-जेल मे भेजा गया।

लखनऊ-जेल मे इन कैदियो को दैनिक पत्र पढने की स्वतन्त्रता थी। नित्यप्रति दोनो अखबारो मे सत्याग्रह के समाचार पढते थे। एक दिन उन्होने पढा कि महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह स्थगित कर दिया। सयुक्त प्रान्त के चौरी चौरा स्थान पर जनता ने उत्तेजित होकर पुलिस-चौकी को आग लगादी। उसमे कई सिपाही जलकर भस्म होगए। यह कार्य गाँधीजी के अहिसा-सिद्धान्त के विपरीत हुआ। इसलिए आपने सत्याग्रह वापस ले लिया।

गाँधीजी के सत्याग्रह वापस लेने से देश-भक्तो को बहुत निराशा हुई। विशेष रूप से जो लोग जेलो मे पड यातना सहन कररहे थे उन्हे बहुत दु.ख हुआ। जवाहरलाल जी को भी महात्मा गाँधी का यह कार्य पसन्द न आया।

जिस समय पडित जवाहरलाल जेल से छूटकर बाहर आए उससे पूर्व ही महात्मा गाँधी को अग्रेज सरकार ने छै वर्ष के लिए जेल भेज दिया था। यह घोर निराशा-काल था। जनता उदास और निराश थी। सरकारी षड्यन्त्रो के फल-स्वरूप स्थान-स्थान पर हिन्दू और मुसलमानो के झगड़े कराए जारहे थे। काँग्रेस मे दलबन्दी का बोल बाला था।

पंडित जवाहरलाल ने देश को सगठित करने का बीड़ा उठाया। उसी समय आप इलाहाबाद नगरपालिका के अध्यक्ष बने। आपने इलाहाबाद की नगरपालिका का प्रबन्ध बहुत

कुशलतापूर्वक किया। इस समय जहाँ एक ओर आप नगर-पालिका के अध्यक्ष थे वहाँ दूसरी ओर आपने काग्रेस का प्रधानमत्री-पद सँभाल लिया था।

पडित जवाहरलाल का जीवन अब देश के कामो मे पूरी तरह से व्यस्त होगया था। वकालत का काम छूट गया। यहाँ तक कि कमला और इन्दिरा की भी सुधि नरही। अब केवल देश-सेवा की लगन थी। चौबीसो घटे उसी का ध्यान रहता था और उसी काम मे रत रहते थे। आपने काग्रेस मे नव-जीवन का सचार किया।

कमला अब पहले से भी दुर्बल होगई थी। जवाहरलाल जी के जेल जाने का उनपर गम्भीर आघात हुआ। चिंता और रोग दोनो ने उन्हे बहुत ही दुर्बल बना दिया था। फिर भी वह कभी पडितजी के देश-सेवा-कार्य मे बाधक नही बनी। वह अपने पति के मस्तक पर अपने दुर्बल हाथो से तिलक करके उन्हे देश के स्वतन्त्रता-युद्ध मे भेजती थी।

कमला का जीवन अब अकेलेपन में कटरहा था। साहस की उनमे कमी नही थी परन्तु स्वास्थ्य साथ नही देरहा था। स्वास्थ्य साथ देता तो वह भी अपने पति के साथ स्वतन्त्रता-सग्राम मे भाग लेती।

जवाहरलाल जब जेल मे होते थे तो कमला उनसे भेट करने के लिए जायाकरती थी। उनका जीवन उदासी का जीवन बनगया था। जब भेट करने जाती तो कुछ उदासी कम होती परन्तु विदा होते समय फिर आँखो के सामने अध-

कार छाजाता। पडितजी को भी कमला को विदा करके वहुत कष्ट होता था। आपने लिखा है, "कभी-कभी मैं जेल में वहुत ही अकेलापन महसूस करता था। मेरा मन अधकार से भरा हुआ रहता था। जब मुझे पता चलता था कि भेट का दिन निकट आरहा है तो लगता था जैसे उस अधकार मे प्रकाश की किरण फूटनेवाली है। फिर कमला मुझसे भेट करने के लिए आती थी। उससे मुझे सुख मिलता था और मेरी अकेलेपन की भावना नष्ट होजाती थी। तभी मै महसूस करता था कि चाहे कितने ही हम दूर-दूर क्यो न रहे परन्तु है हम दोनों के जीवनसाथी। कमला मेरी जीवन-सगिनी न होती तो मेरे मन के अकेलेपन और अधकार को एक क्षण मे यह कैसे भगापाती।"

कमला भी कुछ क्षण के लिए अपने आपको प्रसन्न समझने लगती थी परन्तु विदा होकर फिर निराशा छाजाती थी। कमला अपने मन को प्रसन्न रखने का वहुत प्रयत्न करती थी परन्तु वदन चिता और रोग से कृश होती जारहा था। कमला का रोग दिन-प्रतिदिन वढता जारहा था। अत मे उन्हे हास्पिटल जाना पडा। रोग इतना वढगया था कि डाक्टरो ने कहा कि आपको इलाज के लिए स्विटजरलेड ले-जाना चाहिए। आखिर सन् १६२६ मार्च मास में जवाहरलाल को उन्हे स्विटजरलेड लेजाना पडा। इस यात्रा पर जाते समय पडित जवाहरलाल नेहरू की वहिन विजयलक्ष्मी पडित भी उनके साथ गई। वाद मे एक मुकदमे के लिए पडित मोती-

लाल नेहरू ने भी योरुप की यात्रा की ।

इसी यात्रा के दौरान पडित मोतीलाल और जवाहरलाल ने सोवियत सरकार की दसवी वर्षगाँठ के अवसर पर उसमे भाग लिया। वहाँ जाकर आपको गत महायुद्ध के पश्चात् सोवियत राजनीति मे आनेवाले परिवर्तन को समझने का अवसर मिला। उन्ही दिनो ब्रुसेल्स मे साम्राज्यवाद विरोधी सघ की स्थापना हुई। पडित जवाहरलाल ने उस सघ मे भाग लिया और अपने विचार प्रकट किए ।

इस यात्रा के फलस्वरूप कमला के स्वास्थ्य मे काफी सुधार हुआ परन्तु यह स्वास्थ्य-लाभ स्थायी न रहसका। भारत लौटने पर पडित जवाहरलाल तो राजनीति मे फँस गए और कमला को फिर अकेलेपन की उदासी और रोग ने दबालिया। पडित जवाहरलाल उस ओर ध्यान न देसके और रोग बराबर बढता गया।

: ३ :

पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव

योरोप से भारत आने पर पंडित जवाहरलाल नेहरू ने मद्रास के कांग्रेस-अधिवेशन मे भाग लिया। ब्रसेल्स मे साम्राज्यवाद-विरोधी आपकी जो भावना बनी थी और रूस मे जाकर वहाँ की विचारधारा का आप पर जो प्रभाव पड़ा था, उसका स्पष्ट प्रभाव मद्रास-कांग्रेस के अवसर पर आपके भाषणो मे स्पष्ट हुआ। इस समय आपके विचारो पर साम्यवाद की स्पष्ट छाप थी।

भारतीय नौजवानो और जनता ने जवाहरलाल के विचारो का हार्दिक स्वागत किया। भारतीय युवको ने जवाहरलाल को सच्चे मन से अपना नेता मान लिया। भारत के विभिन्न नगरो मे 'नौजवान भारत सभा' के दफ्तर खुले और उनके विशाल अधिवेशन हुए। मजदूरो ने भी अपने संघ बनाए। देश मे एक नवीन जाग्रति का संचार हुआ। आम जनता मे साम्यवादी विचारधारा का प्रसार हुआ। जवाहरलाल भारतीय जनता के हृदयो पर छाते चलेगए। उनके विचारो मे भारतीय जनता को अपने उज्ज्वल भविष्य की झाँकी देखने को मिली। जनता ने जवाहर को अपना बेताज का बादशाह मान लिया।

उस समय यदि पंडित जवाहरलाल का दिशा-दर्शन करने वाले महात्मा गांधी न होते तो जवाहरलाल पूर्णरूपेण साम्यवादी होजाते। महात्मा गाँधी को समझने मे देर न लगी

कि भारत का युवक-समाज जवाहरलाल को अपना नेता मान चुका है। इसीलिए महात्मा गाँधी ने लाहौर-कॉंग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए पडित जवाहरलाल का नाम सामने रखा। पुराने-पुराने नेता अध्यक्ष वनने की ताक मे थे परन्तु महात्मा गाँधी के प्रभाव ने उन सबको अपने नीचे दबा लिया और आल-इडिया कॉंग्रेस कमेटी मे जवाहरलाल के पक्ष में प्रस्ताव पास होगया।

कॉंग्रेस कमेटी के इस निश्चय का भारत की जनता ने स्वागत किया। देश के नवयुवको ने इसे अपनी महान् विजय माना। पुराने रूढिवादी नर्म दल के नेताओ का जनता पर से प्रभाव उठचुका था। सभी लोग एक साहसी नेता की खोज मे थे और वह उन्हे जवाहरलाल के रूप मे प्राप्त हुआ। युवक स्वतन्त्रता के पथ पर तीव्रगति से आगे बढना चाहते थे। उन्हे पुराने नेताओ की घिस-घिसबाजी पसन्द नही थी।

पडित जवाहरलाल अभी तक कॉंग्रेस के जितने भी अध्यक्ष बने थे उन सबमे सबसे थोडी आयु के थे। लाहौर-अधिवेशन के अवसर पर पडित जवाहरलाल का भव्य स्वागत हुआ। मीलो लबा जलूस निकला। पडितजी सफेद घोडे पर चढकर जुलूस मे निकले। जनता उत्साह से पूर्ण थी। स्थान-स्थान पर उनके गले मे पुष्प-मालाएँ डाली गईं और पुष्पो की वर्षा हुई।

पडित जवाहरलाल की इस सफलता पर पडित मोती-लाल नेहरू और स्वरूपरानी को अपूर्व हर्ष की प्राप्ति हुई। माता स्वरूपरानी उसी मार्ग पर, जिस मार्ग पर से जुलूस

निकल रहा था, एक मकान मे ठहरीहुई थी। जब जुलूस उस मकान के नीचे आया तो माता स्वरूपरानी ने रुपयो की वर्षा की। उनके आनन्द का पारावार नही रहा था।

यही वह कांग्रेस का अधिवेशन था जिसमे कांग्रेस ने अपना लक्ष्य भारत को पूर्ण स्वतन्त्र करना घोषित किया। इससे पूर्व कांग्रेस डोमेनियम स्टेट्स के लिए संघर्ष कर रही थी। पडित जवाहरलाल ने भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता का नारा लगाया। ३१ दिसम्बर की रात्रि को अधिवेशन मे जब यह प्रस्ताव पास होगया तब पडित जवाहरलाल को चैन मिला।

पडित जवाहरलाल नेहरू ने कलकत्ता-कांग्रेस के अधिवेशन मे भी पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव रखा था परन्तु फिर महात्मा गाँधी के कहने से उन्होने वह प्रस्ताव उस समय वापस लेलिया था। कलकत्ता-कॉंग्रेस के अधिवेशन पर प्रस्ताव वापस लेकर पडित जवाहरलाल ने सरकार को चेतावनी देते हुए कहा था, "यदि सरकार ने एक वर्ष के अन्दर भारत को डोमेनियन स्टेट न दिया तो कांग्रेस पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पास करने पर मजबूर होगी।"

यह एक वर्ष ३१ दिसम्बर को समाप्त होना था। उस समय तक सरकार की प्रतीक्षा करने के पश्चात् लाहौर अधिवेशन पर यह प्रस्ताव पास होजाने के वाद भारतीय युवको की पडित जवाहरलाल मे आस्था और भी दृढ होगई।

लाहौर अधिवेशन पर कांग्रेस के अध्यक्ष बनकर पंडित जवाहरलाल ने अपने जीवन का क्षण-क्षण राष्ट्र-सेवा के लिए

समर्पित करदिया। अब उनका मन, विचार, लक्ष्य, समय और शरीर सब राष्ट्र के लिए थे। राष्ट्रके अतिरिक्त आपको अन्य किसी चीज की चिन्ता नही थी। अब वह उठते, बैठते, सोते, जागते राष्ट्र के ही विषय मे सोचते और कार्य करते थे।

पडित जवाहरलाल के बढते हुए प्रभाव को देखकर अग्रेज सरकार थर्रा उठी। उसने उनके सामने चमत्कारिक प्रस्ताव रखे। इलाहबाद के जज सर ग्रिमवुड ने कहा, "जवाहरलाल! तुम्हारी योग्यता से सरकार बहुत प्रभावित है। यदि तुम चाहो तो मै गर्वनर से तुम्हे उत्तरप्रदेश का मिनिस्टर बनने की बात चलाऊँ।"

सर ग्रिमवुड की बात सुनकर पडित जवाहरलाल हँसकर बोले, 'सर ग्रिमवुड! क्या आपके विचार से एक गुलाम देश का मत्री बनने का कोई महत्व है? गुलाम देश का मत्री बनना, गुलाम देश की गुलामी को सुदृढ बनाना नही तो और क्या है?"

उस समय पंडित जवाहरलाल के पास आय का कोई भी साधन नही था। पंडित जी कई बार आयके अभाव से चितित हुए परन्तु उनके पिता ने उन्हे चिंता से मुक्त ही रखा। पडित मोतीलाल ने परिवार के खर्च का भार कभी पडित जवाहरलाल पर नही पडने दिया और उनकी आवश्यकताओ का भी वह ध्यान रखते थे।

अब पडित जवाहरलाल के पास राजनीति के अतिरिक्त अन्य कोई कार्य नही था। आप पूरी तरह से स्वतन्त्रता-

सग्राम मे कूदपडे थे। काग्रेस ने सत्याग्रह के सचालन का भार महात्मा गाँधी पर छोड दिया था। अन्य सब नेता उनकी आज्ञा का पालन मात्र कररहे थे।

महात्मा गाँधी ने सरकार को नमक-कानून तोड़ने की चेतावनी देकर डाँडी-यात्रा आरम्भ की। सविनय कानून भग करने का महात्मा गाँधी ने श्रीगणेश किया। भारत के सब नगरो मे नमक बनाकर सरकार के नमक-कानून की अवज्ञा की गई। यह कार्य इलाहाबाद मे भी हुआ। इस सिलसिले मे १४ अप्रैल को पडित जवाहरलाल को गिरफ्तार किया गया और छै महीने के लिए जेल भेज दिया गया।

पडित जवाहरलाल जेल जाते समय काग्रेस अध्यक्ष का कार्य अपने पिता को सौप गए। पुत्र ने पिता की नियुक्ति की। ऐसा कही कोई उदाहरण विश्व के इतिहास मे नही मिलेगा।

छै महीने पश्चात् जेल से मुक्त होने पर भी पडित जवाहरलाल शान्त बैठने वाले नही थे। सविनय अवज्ञा आन्दोलन पूरे जोरो पर था। भीषण सग्राम चलरहा था। काँग्रेस के नित्य नए जत्थे आते और बन्दी बनाए जाते थे। आन्दोलन का जोश शहरो से देहातो की ओर बढचुका था। सत्याग्रहियो की सख्या दिन-प्रति-दिन बढती जारही थी।

सरकार पडित जवाहरलाल की गतिविधियो पर दृष्टि रख रही थी। पुलिस आपका वारट लिए आपके पीछे-पीछे थी। ११ अक्टूबर को आप जेल से बाहर आए और १९ अक्टूबर को फिर गिरफ्तार कर लिये गए। इस वार सरकार

ने आपको दो वर्ष पाच महीने के लिए जेल भेज दिया ।

इस बीच मे ही महात्मा गाँधी से सरकार की सुलह की बातचीत छिड जाने के फलस्वरूप आपको बीच मे ही मुक्त कर दिया गया । परन्तु यह मुक्ति देर तक स्थायी न रह सकी ।

महात्मा गाँधी गोलमेज़ कानफ्रेस मे इग्लेड गए परन्तु वहाँ कोई सुलह न होसकी । परिणामस्वरूप उन्हे निराश ही भारत लौटना पडा । उनके भारत पहुँचने से पूर्व ही पडित जवाहरलाल नेहरू को फिर से बन्दी बना लिया गया । इस वार फिर आपको दो वर्ष की सजा हुई ।

महात्मा गाँधी का सघर्ष बराबर चलता ही रहा । अन्त मे सरकार ने परेशान होकर फिर सुलह की बातचीत चलाई और राजनीतिक बन्दियो को मुक्त कर दिया । इसलिए पडित जवाहरलाल भी सजा पूरी होने से पूर्व ही फिर दुबारा मुक्त कर दिए गए परन्तु जेल से बाहर आते ही आपको फिर बन्दी बना लिया गया । बिहार मे बहुत जबरदस्त भूकम्प आया था । पडित जवाहरलाल भूकम्प पीडितो का निरीक्षण करके वापस लौट रहे थे कि इलाहबाद पहुँचते ही पुलिस ने आपको गिरफ्तार कर लिया । आपने कलकत्ते मे कोई व्याख्यान दिया था । उसी के आधार पर आपका वारन्ट जारी हुआ था और इलाहबाद पहुँचने पर आपको बन्दी बना लिया गया । इस वार फिर आपको दो वर्ष की सजा हुई ।

: ४ :

कमला की मृत्यु

गत दो तीन वर्ष मे पंडित जवाहरलाल नेहरू को या तो जेलो मे रहना पडा या कठिन परिश्रम करना पडा। आपका जीवन बहुत अस्त-व्यस्त रहा। आपकी इन परेशानियो का रोगिणी कमला के स्वास्थ्य पर गम्भीर प्रभाव पडा। कमला का जीवन निरन्तर चिताग्रस्त रहने लगा। उन्हे हर समय पडित जी की चिन्ता बनी रहती थी। उनके जीवन का एक क्षण भी शाति से व्यतीत नही होता था।

पडित जवाहरलाल को शादी किए अठारह वर्ष व्यतीत होचुके थे। इन अठारह वर्षों का अधिकॉश समय जेलो की कोठरियो मे या स्वतत्रता-सग्राम मे व्यतीत हुआ था। कमला को रोग ने कुछ ऐसा घेरा था और चिताओ ने इस कदर दबाया था कि वह उनसे उभर ही न पाई। उनके ये अठारह-के-अठारह वर्ष या तो हस्पतालो मे व्यतीत हुए या शय्या पर पडे हुए डाक्ट्रो की औषधियॉ पीते। स्वस्थ जीवन उनके भाग्य मे ही नही लिखा था। इस अवस्था मे नित्य की चिता उन्हे काल बनकर हर समय ग्रसने के लिए सामने खडी रहती थी।

कमला के मन मे अपने पति के दिखाए मार्ग पर चलने की उत्कट इच्छा थी परन्तु उनके स्वास्थ्य ने आपका साथ नही दिया। कभी-कभी आपको अपनी बीमारी पर भी बडी

झु झलाहट आती थी परन्तु इस झु झलाने से काम नही चलता था। एक बार रोगिणी होने पर भी आपने सत्याग्रह मे भाग लिया और आपको गिरफ्तार किया गया। आपको गिरफ्तार होकर अपार हर्ष हुआ।

स्वास्थ्य खराब होने के कारण सरकार ने आपको मुक्त कर दिया। कमला का स्वास्थ्य बराबर गिरता ही जारहा था। उसमे सुधार के कोई लक्षण दिखाई नही देते थे। गृहस्थ के सुख का तो उन्होने एक प्रकार से दर्शन ही नही किया था, हाँ वियोग का कष्ट अवश्य सहन किया था। फिर भी उन्हे सतोष था कि वह एक ऐसे पुरुष की पत्नी थी जिसे देश का बच्चा-बच्चा प्यार करता था और अपना नेता मानता था, जिसने ब्रिटिश साम्राज्य के दाँत खट्टे किये हुए थे, जिसकी निर्भीकता का अग्रेज सरकार लोहा मानती थी।

कमला का स्वास्थ्य बिगडरहा था। पडित जवाहरलाल जेल मे थे। सरकार ने पडित जी से कहा, "यदि आप राज-नीति मे भाग न लेने का वचन दे तो आपको मुक्त किया जा-सकता है।"

उस वीर भारतीय नारी को जब सरकार की इस बात का पता चला तो वह रोग-ग्रस्ता पडित जी से भेट करने गई और कहा, "मेरे लिए आप सरकार को कोई वचन न दे प्राणनाथ! मेरे मोह मे फँसकर आपको सरकार से नीचा देखना पडे, इसे मेरी आत्मा सहन नही कर सकती। आपकी दृढता ही मेरा गौरव है।"

कमला का स्वास्थ्य निरन्तर गिरता जारहा था।

डाक्टरो ने उन्हे सलाह दी कि उन्हे योरोप जानाचाहिए ।

उस समय पडित जी जेल मे थे । इसलिए कमला देवी अपनी पुत्री इन्दिरा को साथ लेकर अकेली ही योरोप-यात्रा पर गई । योरोप जाकर आपने इलाज कराया परन्तु स्वास्थ्य लाभ न होसका । उनका स्वास्थ्य बराबर गिरता ही जारहा था ।

भारत-सरकार के पास भी कमला की चिंताजनक स्थिति के समाचार पहुँच रहे थे । उसे जब विश्वस्त सूत्र से ज्ञात हुआ कि कमलादेवी की दशा अत्यन्त खराब होगई है तो उसने पडित जवाहरलाल को एक दिन अचानक ही मुक्त कर दिया ।

पडित जवाहरलाल हवाई जहाज से योरोप पहुँचे । वह कमला के पास पहुँचे तो कमला का मुर्झाया हुआ मुख-कमल एक क्षण के लिए खिलउठा परन्तु वह बहुत ही दुर्बल होगई थी उस समय । उनकी जीवन-यात्रा लगभग पूर्ण होचुकी थी । उनके शरीर में कुछ भी शेष नही रहगया था ।

२८ फरवरी सन् १९३६ का वह दिन आ ही गया जब वह देवी अपने प्रियतम और राष्ट्र के दुलारे को राष्ट्र की सेवा के लिए बन्धन-मुक्त करके इस असार ससार को छोड़ गई । कमला की जीवन-लीला समाप्त हुई ।

पडित जवाहरलाल पर पत्नी के स्वर्गवास का गम्भीर आघात हुआ । आपने अपनी आत्म-कथा मे लिखा है, "मैं सोचता था कि अब जबकि मुझे उसकी सबसे अधिक आवश्यकता है, वह मुझे छोड़ तो नही जाएगी । मेरे मन मे जो भय

था, वही सामने आया। २८ फरवरी का वह भयानक दिन आया जो वह मुझे छोडकर स्वर्ग सिधार गई। मैं उस समय उसके पास था। कमला के साथ मेरे जीवन का एक अध्याय समाप्त होगया। मेरे जीवन की अमूल्य वस्तु खोगई जो मेरे जीवन का एक अभिन्न अग बन गई थी। मुझे लगा कि जैसे मैं अधूरा रहगया, मेरा कुछ कटकर मुझसे अलग होगया।"

पडित जवाहरलाल न कमला से विवाह अवश्य किया था परन्तु गृहस्थ का सुख न तो कमला के ही भाग्य मे बदा था और न पडित जवाहरलाल के। केवल एक सन्तान थी इन्दिरा और उसी के जन्म के समय कमला को रोग ने पकड़ लिया था। उसके पश्चात् अठारह वर्ष एक प्रकार से दोनो ने ही तपस्यापूर्ण जीवन व्यतीत किया। गृहस्थ होते हुए भी दोनो का जीवन सन्यासी-जीवन था। पडित जवाहरलाल जेलो मे रहकर तपस्या करते थे तो कमला हस्पताल मे रहकर।

दोनो प्राणियो का गारहस्थिक सम्बन्ध होने की अपेक्षा आध्यात्मिक सम्बन्ध था। इसीलिए तो कमला की मृत्यु पर पडित जी ने अनुभव किया कि जैसे उनके अग का कोई भाग कटकर गिर पडा।

पडित जी के पास अब कमला नही रही, उसकी पावन स्मृति के रूप मे उसकी पुत्री इन्दिरा रह गई, जिसने पडित जी के जीवन के अतिम काल तक उनकी सेवा पूर्ण सलग्नता के साथ की।

पारिवारिक सुख की दिशा मे यही एक प्रकाश-किरण था, जिसे देखकर पडित जी की आत्मा को शाति मिलती थी।

तूफानी दौरा

कमला स्वर्ग सिधार गई । उन्हे हसपताली जीवन से मुक्ति मिली परन्तु पडितजी ने देश-सेवा का जो कठोर व्रत लिया था उसका परित्याग वह नहीं कर सकते थे । इधर कमला अंतिम श्वॉस गिन रही थी और उधर पंडित जी के पास तार पहुँचा कि उन्हे दुबारा लखनऊ मे उसी वर्ष होने-वाले काग्रेस-अधिवेशन का अध्यक्ष चुन लिया गया है ।

पडित जवाहर लाल के कॉग्रेस मे प्रवेश करने से पूर्व कॉग्रेस जनता की सस्था नही मानी जाती थी । यह ऊँचे या मध्यवर्ग के लोगो की जमायत समझी जाती थी । मजदूरो और किसानो के लिए न तो उसमे स्थान ही था और न ही उनके लिए इस संस्था ने कोई कार्य किया था । इस सस्था के नेता बहुत धीमी गति से स्वतन्त्रता की राह पर आगे बढ़ रहे थे ।

पडित जवाहरलाल ने कॉग्रेस मे प्रवेश कर इस सस्था की गति मे विद्युत की शक्ति पैदा की । आपने किसानो और मजदूरो को साथ लिया और काग्रेस को उनके हितो पर विचार करने के लिए मजबूर किया । इससे काग्रेस का कार्य-क्षेत्र व्यापक होगया । पडित जी ने काग्रेस की मदगति को तूफानी चाल मे वदल दिया । इसके लिए आपने भारत का

तूफानी दौरा किया।

कांग्रेस का लखनऊ अधिवेशन कई दृष्टि से वहुत महत्व-पूर्ण था। इसमे पंडित जी का जनता ने अभूतपूर्व स्वागत किया। सारा नगर पंडित जी के स्वागत के लिए सजाया गया था। जुलूस पैदल ही निकला परन्तु बाद मे जव भीड़ वहुत अधिक होगई तो पंडित जी घोडे पर सवार होगए।

इस अधिवेशन मे कुछ ऐसे निर्णय लेडाले कि जिनसे पंडितजी सहमत नही थे। परन्तु उनसे पंडितजी विचलित नही हुए। पंडित जी मे एक विशेप गुण यह था कि आप अपने मत को प्रकट करने के पश्चात सर्वदा जनता की आवाज के सामने सिर झुका लेते थे। पंडितजी ने वहुमत को स्वी-कार किया और उसे कामयाब बनाने के लिए अपनी पूर्ण शक्ति लगाई।

पंडितजी ने अधिवेशन का संचालन निहायत खूबी के साथ किया। सभा की नियामकता को आपने कभी भंग नही होने दिया। आपको अपने हाथ से कोई कार्य करने में कभी संकोच नही होता था। यहाँ तक कि आप स्टेज पर रखे माइक्रोफोन को अपने हाथ से उठाकर उचित स्थान पर रख देते थे। इसके लिए आप सेवक की प्रतीक्षा नही करते थे।

इस अधिवेशन के पश्चात आपने सारे देश का एक तूफानी दौरा करके देश की जनता को जाग्रत करने का कार्य-क्रम निश्चित किया। इस दौरे मे आपने अनथक परिश्रम

किया और साथ ही अपनें आपको इतना सलग्न किया कि जिससे व्यस्त रहने के कारण आप अपनी पत्नी की मृत्यु के शोक को भूले रहसके। आपने अपने जीवन के क्षण-क्षण को व्यस्त बना लिया। आपका दौरा काग्रेस के इतिहास मे भी तूफानी दौरे के ही नाम से प्रसिद्ध है। इस दौरे मे आपनें एक-एक दिन मे बीस-बीस सभाओ मे व्याख्यान दिए। यह एक असाधारण घटना थी, ईश्वरीय प्रेरणा वरना, एक दिन मे इतनें व्याख्यान देना कोई सरल कार्य नही था।

कांग्रेस नें चुनाव मे भाग लेनें का निश्चय किया था। काग्रेस के पास धन का अभाव था। प्रचार के साधन भी पर्याप्त नही थे। पुराना इस दिशा का कोई अनुभव भी नही था। ऐसी दशा मे केवल एक नेंता था काग्रेस के पास, पडित जवाहरलाल नेंहरू। उसी के दम पर काग्रेस चुनाव लडनें को खडी हुई थी। इसीलिए भारत के हर काग्रेसी उम्मीदवार का चुनाव पडितजी को ही लडना था और हर जगह जाकर उन्ही को काग्रेस कादृष्टि कोण समझना था।

इस तूफानी दौरे मे पडितजी ने लगभग एक लाख मील से अधिक लम्बी यात्रा की। कही रेल से, कही मोटर से, कही इक्के और साइकिल से, कही घोडे या ऊंट से और कही कही पैदल भी जाना पडा। पडितजी को जहां जो साधन मिला वही उसी का उपयोग किया। पडित जी नें काग्रेस के उम्मीदवारो के लिए कार्य किया और स्वय कोई चुनाव नही

लडा ।

इस तूफानी दौरे पर आप प्रात काल सात बजे रवाना हो जाते थे। यदि नाश्ते मे देर होजाती थी तो विना नाश्ता किए ही चल पडते थे। नाश्ता कराने वालो को नाश्ता कराने की चिन्ता रहती थी, आपको नाश्ता करने की नही । सवारी तक की आप प्रतीक्षा नही करते थे । जो कुछ समय पर उपलब्ध होजाता उसी का प्रयोग कर लेते थे, अन्यथा पैदल ही चल पडते थे ।

यदि इस दौरे से दौरान कुछ लोग उनके मार्ग मे आजाते थे तो उन्हे बहुत क्रोध आता था । कभी-कभी तो वह उन्हे धक्का देकर आगे निकल जाते थे । एक दिन एक दर्शनार्थी उनकी गाडी के सामने लेटगया । यह उनसे सहन न हुआ । आपने उसे उठाकर एक ओर फेक दिया । अपने कार्य मे बाधा डालने वाले के प्रति उन्हे बहुत चिढ थी ।

पडितजी केवल दोपहर को दो घटे विश्राम करते थे । तीन बजे फिर दौरा आरम्भ कर देते थे । यह दौरा रात के दस बजे तक चलता था । अतिम सभा किसी वडे शहर मे होती थी । एक वर्ष मे आपने इस दौरे मे एक लाख दस हजार मील का सफर किया ।

सन १९३७ से सन १९३९ तक काग्रेस का सम्पूर्ण कार्यक्रम आपके ही द्वारा सचालित हुआ । आपने इस बीच मे काग्रेस को एक क्रातिकारी सस्था बना दिया । आपकी सगठन की योग्यता की देश के सभी नेताओ ने सराहना की । इस

संगठन की सरकार ने भी प्रशसा की ।

पडित जी के स्वस्थ रहने का राज यही था कि आप सर्वदा किसी-न-किसी कार्य मे व्यस्त रहते थे । बिना काम के एक क्षण भी काटना आपको कठिन था । यहाँ तक कि आप जेल मे भी खाली नही रह सकते थे। आपने जितना भी लेखन-कार्य किया वह जेलो मे ही किया । जेल से बाहर रहकर तो आपको लिखने के लिए अवकाश ही नही मिलता था। अपनी आत्मकथा, छै सौ सत्तर पृष्ठ की पुस्तक आपने जेलो मे ही लिखी । 'विश्व के इतिहास' का लेखन भी जेल मे ही हुआ । यह पद्रह सौ उन्हत्तर पृष्ठो का ग्रन्थ है ।

पडित जवाहरलाल मे काम करने की असीम क्षमता थी । आप शारीरिक और मानसिक दोनो ही प्रकार के काम करने की असीम क्षमता रखते थे । दोनो ही कामो को आप समान दत्तचित्तता से करते थे । आप जिस कार्य को अपने समक्ष देखते थे उसपर जुटजाते थे ।

पंडित जवाहरलाल नेहरू के तूफानी दौरे के फलस्वरूप काग्रेस ने सब सूबो मे अपनी सरकारे बनाई और शासन-सत्ता अपने हाथो मे सँभालली । कॉग्रेसी सरकारो ने शासन का भार बहुत योग्यता के साथ सँभाला ।

उसी समय द्वितीय महायुद्ध छिड गया । जर्मनी और अग्रेज एक दूसरे के आमने सामने थे । अग्रेज सरकार ने भारतीय नेताओ से परामर्श किए विना ही इस महायुद्ध मे भारत की ओर से भी जर्मनी से युद्ध घोषित कर दिया ।

अग्रेज-सरकार के इस कार्य को पडित जवाहरलाल सहन न करसके । सरकार के इस कार्य की काग्रेस के अधिवेशन मे निन्दा की गई और उस पर एक प्रस्ताव पास किया गया । गोरखपुर के जिला-मजिस्ट्रेट ने आपके इस आशय का भाषण देने पर आपका वारन्ट जारी कर दिया और अन्त मे आपको चार वर्ष की सजा दीगई । परन्तु युद्ध की दशा दिन-प्रति-दिन खराब होती जारही थी । पूर्व मे जापान भी युद्ध-क्षेत्र मे कूद पडा था । विश्व-युद्ध भारत की सीमाओ के निकट आ-गया । इससे अग्रेज़-सरकार भयभीत होउठी । मलाया, बर्मा, जावा इत्यादि देशो मे जापानी सेनाएँ छागई । ऐसी दशा मे भारतीय नेताओ से फैसला करने के लिए उन्हे पडित जवाहर लाल को मुक्त करनापडा ।

ब्रिटेनने अपने प्रतिनिधि के रूप मे क्रिप्स को भारत भेजा । क्रिप्स से बाते करने मे पडित जवाहर लाल ने विशेष भाग लिया । कई दिन तक बाते चलती रही । पडित जी को क्रिप्स की बाते निराधार प्रतीत हुई । इसलिए किसी विशेष निष्कर्ष पर न पहुँच सके ।

अन्त मे कोई निर्णय न हो सका । क्रिप्स को अपने प्रस्तावो को ज्यो-का-त्यो लेकर वापस विलायत को लौट जाना पडा । अ ग्रेजी-कमाण्डर वेवल और पडितजी मे तनातनी हो होगई क्योकि वेवल फौजी मामलो मे भारत को स्वतंत्रता नही देना चाहते थे । इससे कम के प्रश्न पर वह किसी प्रकार भी सहमत होने को तैयार नही थे ।

चर्चिल ने क्रिप्स को वापस बुलालिया और भारत-सरकार को कड़ाई के साथ भारतीय नेताओ को दबाने का आदेश जारी किया।

चर्चिल के इस व्यवहार से भारतीय नेता और भी क्रुद्ध होउठे। उन्होने अंग्रेजो के विरुद्ध आन्दोलन करने का दृढ निश्चय कर लिया।

: ६ :

स्वाधीनता-संग्राम

क्रिप्स के इग्लेंड लौटने पर स्थिति गम्भीर होगई। ऐसी गम्भीर स्थिति मे देश की बागडोरो को अपने हाथो मे सँभालना कोई सरल कार्य नही था। इसलिए सब नेताओ ने मिलकर फिर से कॉग्रेस का नेतृत्व महात्मा गॉधी के हाथो मे सौपा क्योकि उस समय किसी को भी यह नही सूझरहा था कि क्या करना चाहिए और किस प्रकार अग्रेजो के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ करना चाहिए।

महात्मा गॉधी के नेतृत्व मे आठ अगस्त सन् १९४२ को कॉग्रेस महासभा ने "भारत छोडो" का प्रस्ताव पास किया। सरकार ने सभा मे भाग लेनेवाले सब नेताओ को बन्दी बनाकर अहमदाबाद जेल मे बन्द करदिया। पडित जवाहर लाल नेहरू भी उन्ही मे थे।

कॉग्रेस के नेताओ का पकडाजाना था कि देश का युवक-वर्ग भयंकर रूप से भडकउठा। देश के प्राय. सभी नगरो मे उत्पात मच गया। थाने जला दिये गये। सरकारी दफ्तरो को आग लगा दी गई। सरकार ने भी अपना दमन-चक्र चलाया और लाखो नवयुवको को गोलियो से भूनदिया।

सन् १९४५ मे तीन वर्ष की कैद के पश्चात् पडित जवाहरलाल नेहरू जेल से मुक्त हुए। इस बीच मे द्वितीय

महायुद्ध समाप्त होचुका था। फासिस्टो की पराजय और मित्र-राष्ट्रों की विजय घोषित होचुकी थी। जापान भी हथियार डाल चुका था परन्तु विश्व की राजनीति ने ऐसा पलटा खाया था कि अ ग्रेज मजबूर होकर भारत छोड़ जाने को उद्यत थे।

नेताओ के जेल से मुक्त होने के पश्चात शिमला में कानफ्रेंस की। इस कानफ्रेन्स से लौटकर पडित जवाहरलाल कुछ दिन विश्राम के लिए काश्मीर चले गए। उस समय मौलाना अब्बुल कलाम आजाद भी आपके साथ थे। काश्मीर की जनता ने आपका शानदार स्वागत किया।

काश्मीर से वापस लौटकर पडित जवाहर नेहरू ने आजाद हिन्द फौज के बन्दियो के लिए सघर्ष किया। २५ अगस्त को लाहौर मे लगभग दो लाख की भीड के समक्ष आपने भाषण देते हुए कहा, "मै इन स्वतत्रता के सैनिको को मुक्त कराने का भरसक प्रयत्न करूँगा।"

पडित जवाहरलाल ने एक बार फिर अपने जीवन में बैरिस्टर का चोगा पहनकर लाल किले मे आजाद हिन्द फौज के बन्दियो की वकालत की। आपके प्रयत्नो के फलस्वरूप वे सब बन्दी मुक्त हुए। आपने मुक्त कठ से सुभाषचन्द्र बोस के प्रति सम्मान प्रकट किया। इससे भारत के नवयुवको में आपका सम्मान और भी बढगया।

पडित जवाहर लाल ने उन सब शहीदो के प्रति भी श्रद्धाजलि अर्पित की जो सन् १९४२ के क्रातिकारी आन्दोलन

मे शहीद हुए थे।

राजनीतिक वार्तालाप जारी था। चर्चिल की सरकार का तख्ता पलट गया था। नई सरकार ने भारत को स्वतन्त्र करने का विचार प्रकट कर दिया था। अब प्रश्न यह था कि शासन-सत्ता किसके हाथो मे सौपी जाए। अंग्रेज लोग जाते-जाते भी अपनी राजनीतिक चाल को नही छोडरहे थे। साम्प्रदायिक दगो का सहारा लेकर हिन्दू और मुसलमानो को एक दूसरे के विरुद्ध भडकाया जा रहा था। पंडित जवाहर लाल इस साम्प्रदायिकता से जूझरहे थे।

इस सघर्ष-काल मे आपका कार्यक्रम फिर एक बार तूफानी होउठा। आपको फिर देश का दौरा करना पडा। कलकत्ते मे आपको जनता ने एक लाख की थैली भट की। असम के गॉव-गॉव का आपने दौरा किया। चार दिन मे एक हजार मील से अधिक यात्रा की। वहॉ से आप कलकत्ते जाकर शातिनिकेतन गए।

फिर आप उत्तर प्रदेश मे आगए। इलाहबाद मे भापण देकर आप उदयपुर मे 'देशी राज्य लोक परिषद' के सभापति बनकर राजस्थान गए। राजस्थान के बाद सिध का दौरा किया। वहॉ से दिल्ली आए। दिल्ली मे आपने ब्रिटिश डेलीगेशन से बाते की। इतने व्यस्त कार्यक्रम को इस आयु मे पूरा करना कोई सरल कार्य नही था।

काग्रेस ने फिर चुनाव लडा और सफलता प्राप्त की। इस सफलता का श्रेय पडित जवाहरलाल को जाता है।

आखिर अग्रेज सरकार ने शासन कॉग्रेस के हाथो मे सौपने का निश्चय कर लिया।

अन्तरिम सरकार की स्थापना हुई। वायसराय का उत्तरदायी मन्त्रि-मडल बना और पडित जवाहरलाल नेहरू उसके प्रधान बने।

इस प्रकार पडित जवाहरलाल नेहरू ने भारत का प्रधान-मन्त्री पद सँभाला, जो मृत्यु-पर्यन्त उन्ही के पास बनारहा।

देश स्वतन्त्र अवश्य हुआ परन्तु अग्रेजो की चाल सफल हुई। भारत का विभाजन होगया। पाकिस्तान की स्थापना हुई, जिसके फलस्वरूप भारतीय राजनीति ने एक नया रूप धारण कर लिया। कॉग्रेस के उन नेताओ को जो अखड भारत के लिए सघर्ष कररहे थे बहुत निराशा हुई।

फिर भी देश स्वतन्त्र हुआ और स्वतन्त्र भारत की अपनी सरकार बनी, जिसकी बागडोरे पडित जवाहरलाल नेहरू ने सँभाली।

: ७ :

स्वतन्त्रता के बाद

१५ अगस्त सन् १९४७ को भारत स्वतत्र हुआ । पडित जवाहरलाल नेहरू ने लाल किले पर स्वतत्र भारत का झडा फहराया। लाखो की भीड़ ने करतल ध्वनि की परन्तु पडित जवाहरलाल नेहरू के दिल मे भारत के विभाजन का दर्द था और उन निरपराध भारतीयो का दर्द था, जो साम्प्रदायिकता की भेट चढरहे थे ।

स्वतन्त्रता के बाद साम्प्रदायिकता का वह नगा नॉच भारत और पाकिस्तान मे हुआ कि मानव दानव बनगया। भारत पाकिस्तान की सीमाओ पर दानवता का जो नगा नाच हुआ उसका वर्णन नही किया जासकता । लाखो व्यक्ति बेघर-बार होगए, लाखो मौत के घाट उतारे गए । लाखो औरतो की आबरू लूटी गई । लाखो अनजान शिशु पैर पर पैर रखकर चीर दिये गये । साम्प्रदायिकता की आग जलउठी ।

इस ज्वाला को बुझाने के लिए पडित जवाहरलाल ने अपने प्राणो का मोह त्यागकर अपने आपको उस आग मे झोक दिया । आपने अद्भुत साहस से काम लिया और अन्त मे आपको सफलता मिली । इस कार्य को करने मे आपको रात-दिन एक करदेना पडा । आपको उस समय न रात को चैन थी, न दिन को ।

प्रधान-मंत्री-पद प्राप्त कर आपने भारत का सम्मान विदेशो मे बढाने का प्रयास किया । विदेश-मत्री-पद आपने स्वय सँभाला । विश्व के प्राय सभी देशो मे आपने अपने राजदूत नियुक्त किए और उनके राजदूतो को भारत मे आमन्त्रित किया । आपका विश्वास था कि यह युग सहअस्तित्व का है । इसीलिए आपने सहअस्तित्व पर विशेष बल दिया । आपने जहाँ से भी भारत के विकास के लिए जो सहयोग प्राप्त होसकता था, प्राप्त किया और जिस देश को भी आप जो सहयोग देसकते थे, दिया ।

अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे पडित जवाहरलाल को विशेप ख्याति प्राप्त हुई । आपको एशिया का नेता माना जाने लगा । आपने एशियाई देशो की एक कानफ्रेस वुलाई और सव देशो की ओर मित्रता का हाथ वढाया । हिन्देशिया की स्वतत्रता के लिए आपने राष्ट्र-सघ मे डच लोगो के विरुद्ध आवाज़ उठाई ।

लार्ड माउन्टवेटन से आपकी घनिष्ट मित्रता थी । आपकी प्रेरणा के फलस्वरूप लेडी माउण्ट वेटन ने भारत के 'रिलीफ-वर्क' मे सक्रिय भाग लिया ।

इग्लेट के भूतपूर्व प्रधान मत्री एटली और मैके मिलन, अमरीका के प्रेजोडेन्ट कैनेडी, रूस के प्रधान मत्री ख्रुश्चेव, फ्रास के दिगाल, मिश्र के प्रधान नासिर इत्यादि आपके व्यक्तित्व से वहुत प्रभावित थे और आपसे मित्रता निभाकर उन्होने भारत की विशेप सहायता दी ।

राष्ट्र-सघ के अध्यक्ष ने आपको सघ के सदस्यो के सामने अपने विचार प्रकट करने के लिए विशेप रूप से निमत्रित किया। आपने राष्ट्र-सघ मे भापण करते हुए कहा, "भारत शान्तिप्रिय देश है। उसने अहिसात्मक सत्याग्रह से स्वतन्त्रता प्राप्त की है और अब भी उसकी नीति शान्ति और सह-अस्तित्व की है। वह घृणा और हिसा का विरोधी है।

आपने विदेशो मे भारत का मान बढाया। सभी देशो के प्रधान मत्री और प्रेजीडेन्ट भारत आए और पडित जवाहर लाल उन देशो मे गए। आपने सभी से मित्रता बनाने का प्रयास किया।

द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् विश्व दो गुटो मे बँट गया था, एक पूँजीवादी और दूसरा साम्यवादी। एक का नेता अमेरिका था और दूसरे का रूस। पडित जवाहरलाल नेहरू ने तटस्थता की नीति को अपनाया। आरम्भ में देनों गुटो ने इस नीति को सदेह की दृष्टि से देखा परन्तु फिर सबको विश्वास होगया। जिस समय चीन ने भारत के साथ विश्वास-घात करके भारत की उत्तर-सीमा पर आक्रमण किया, वह समय पडित जवाहरलाल की तटस्थता की नीति की परीक्षा का समय था। कुछ राजनीतिज्ञो का विश्वास था कि भारत अपनी तटस्थता की नीति को छोडकर अमेरिका के साथ मिल जाएगा परन्तु पडित जी अपनी नीति पर अडिग रहे।

पडित जवाहरलाल ने तीसरे महायुद्ध के तनाव को दूर करने की दिशा मे जबरदस्त प्रयास किया। आपने अटमबम

न वनाने की घोषणा की। आपका ध्यान देश की गरीबी दू करने की ओर रहा। इसीलिए आपने देश मे पचवर्षी योजन का सचालन कर देश का औद्योगिक विकास करने की दिश मे विशेप ध्यान दिया।

आपके प्रधान मन्त्रित्व काल मे भारत ने हर दिशा उन्नति की। खेती का विकास हुआ। नई नहरे बनी। बाँध बनाकर बिजली की व्यवस्था की गई जिससे कल-कारखान की उन्नति हुई। देश मे भारी उद्योगो का विकास हुआ इग्लैड, जर्मनी और रूस की सहायता से स्वत के कारखा लगाए गये। खाद के कारखाने, रेल के कारखाने, हवा जहाजो के कारखाने, पानी के जहाज के कारखाने, इजीनिय रिग के सामान के कारखाने, दवाइयो के कारखाने, कागज कपडा, जूट इत्यादि की मिले, फौजी सामान बनाने के कारखाने, खेती के औजार बनाने के कारखाने बने। सडको का विकास हुआ, नई रेल-लाइने बनी, मोटर ट्रासपोर्ट को बढावा मिला, विदेशी व्यापार बढा। शिक्षा के प्रसार मे आपने महत्वपूर्ण योग-दान दिया, टेकनीकल इस्टीट्यूट खोले और भारतीय विद्यार्थियो को विदेशो मे विशेप योग्यता के लिए जाने का प्रोत्साहन दिया तथा विदेशो के विशेषज्ञो को भारत आने का बढावा दिया।

पडित जवाहरलाल ने भारत की काया पलट दी। गाँव-गाँव मे बिजली पहुँचादी, सडकें पहुँचादी और उन्हे लघु उद्योगो का केन्द्र बनादिया। इससे देश की महान् उन्नति

हुई ।

आपके प्रधान मन्त्रित्व-काल मे राष्ट्र का सगठन हुआ । सरदार पटेल के कुशल नेतृत्व मे भारतीय रियासतो का झझट समाप्त होगया और राष्ट्रीय एकता कायम हुई ।

पडित जवाहरलाल को अपने प्रधान मन्त्रित्व-काल मे निम्न कठिनाइयो का सामना करनापडा । सर्व प्रथम साम्प्रदायिक दगो का । देश की निर्धनता का काश्मीर समस्या और चीन का विश्वासघात, तथा पाकिस्तान की साम्प्रदायिक नीति । पडित जी ने इन सभी का सामना किया । काश्मीर मे उनके पुराने मित्र शेख अब्दुला ने विश्वासघात किया और चीन मे वहाँ के प्रधान-मत्री ने । पडित जी ने जीवन मे अनेको मित्र बनाए । उनमे जहाँ आपको एटली, मेकसिलन, कैनेडी, खुश्चोव, नासिर जैसे विश्वासपात्र मित्र मिले वहाँ चाऊ एन लाई और शेख अब्दुल्ला जैसे विश्वासघाती भी मिले, जिन्होने पडित जी की प्रतिष्ठा को धक्का पहुँचाया ।

भारतीय जनता का पडित जवाहरलाल मे अटूट विश्वास था । वह उन्हे श्रद्धा की दृष्टि से देखती थी । वह उनके हर गुण को अपना गुण और हर भूल को अपनी भूल मानती थी ।

पडित जवाहरलाल को जहाँ विदेश-नीति मे तटस्थता जैसी नई नीति सफलता पूर्वक सचालित करने का गौरव प्राप्त है वहाँ काश्मीर और चीन सम्बन्धी आपकी नीतियाँ असफल सिद्ध हुई । इनसे भारत की प्रतिष्ठा को धक्का लगा ।

पडित जवाररलाल की भाषा सम्बन्धी नीति भी बहुत लचर रही । यदि आरम्भ मे ही आप मौलाना आजाद के प्रभाव मे न आकर प्रजातत्र के नियमो के आधार पर हिन्दी को लागू करदेते तो यह समस्या राष्ट्र के बदन मे फोडा बनकर न रहजाती । इसी तरह यदि आपने अन्य रियासतो की तरह काश्मीर का मामला भी सरदार पटेल को सौपदिया होता तो भारत का अरबो रुपया खर्च होने और अनेको भारतीय जवानो की भेट चढजाने पर भी काश्मीर की समस्या समस्या न बनीरहती ।

पडित जवाहरलाल अपने जीवन के अतिम श्वास तक भारत की सेवा करते रहे । जिस समय आपका देहान्त हुआ उस समय काश्मीर की ही समस्या उनके मस्तिष्क मे घूमरही थी । यदि सच पूछो तो यह सच है कि इसी समस्या ने हमारे नेता को खालिया ।

२९ मई सन् १९६४ का वह भयानक दिन आया, जिसने भारतीय जनता के प्राणप्यारे नेता को उससे छीन लिया । पंडितजी की मृत्यु के समाचार ने बे तार के तार की तरह विश्व के वायु-मडल मे भरकर उसे स्तब्ध कर दिया । सारे विश्व मे शोर मचगया । भारत मे अन्धकार छागया । भारतवासी निढाल होगए ।

पडित जवाहरलाल की मृत्यु का समाचार भारतीय जनता पर अटम बम की तरह गिरा । भारतीय जनता की आँखो से आँसू बरस पडे । उसका प्यारा जवाहर उससे सर्वदा

के लिए विदा होगया। दूसरे दिन पत्रो के समाचारो से ज्ञात हुआ कि भारत मे आपकी मृत्यु का समाचार प्राप्त कर बहुत से लोगो की मृत्यु हुई। वे पडितजी की मृत्यु के अशुभ समाचार को सहन न करसके।

पडित जी की शव-यात्रा मे विश्व के जितने देशो के नेता और प्रतिनिधियो ने भाग लिया उतने नेताओ ने आज तक किसी देश के नेता की मृत्यु के अवसर पर भाग नही लिया।

राष्ट्रपिता महात्मागाँधी की बगल मे उनके सबसे प्यारे शिष्य का यमुना नदी के किनारे दाह-कर्म-संस्कार हुआ। चदन की चिता पर भारतीय रीति से वेद-मत्रो की तुमुल ध्वनि मे भारत के नेता का शव जलकर राख होगया परन्तु उसके काम और उसके आदर्श भारतवासियो के रक्त में आज भी प्रवाहित होरहे है।

पडित जवाहरलाल नेहरू एक युग के निर्माता थे। आपने भारतीय राष्ट्र के लिए ही युग का निमाण नही किया वरन् विश्व की राजनीति को एक नवीन दिशा दी। आपकी तटस्थता की नीति ने विश्व के तनाव को कम करके तीसरे महायुद्ध की सम्भावना को कम किया।

पडित जवाहरलाल नेहरू ने जब से होश सँभाला, पराधीनता और गरीबी से सघर्ष किया। आपने अपने व्यक्तिगत तथा पारिवारिक सुख को राष्ट्र-हित की भेट चढादिया। निरन्तर जेल की यातनाएँ सहकर तपस्या से अपने जीवन को

मॉजकर पवित्र किया और उसी पवित्र आत्मा से राष्ट्र की अंतिम श्वॉस तक सेवा की।

पडित जवाहरलाल का व्यक्तित्व बहुत महान् था। आपका बदन सुन्दर और प्रभाव शाली था। मानसिक और शारीरिक श्रम करने मे आपने कभी थकान का अनुभव नही किया।

आप राष्ट्र के हर काम मे दिल चस्पी लेते थे। खेल आपको बहुत प्रिय थे। खिलाडियो का आप सम्मान करते थे। कला से भी आपको बहुत प्रेम था। कलाकारो को आप प्रोत्साहन देते थे। आप अपने समय के एक महान् लेखक थे और लेखको के प्रति सहानुभूति रखते थे।

पडित जवाहरलाल के चेहरे पर हर समय तेज दमदमाता रहता था। अमरीकी पत्रकारों ने आपको 'जलता हुआ ज्वाला-पिण्ड' कहा था। आप प्रगतिशील विचार रखते थे, अध विश्वासी नही थे।

आपके चरित्र पर महात्मागॉधी का प्रभाव था। आपको झूठ से सख्त घृणा थी। आपके स्वभाव मे कुछ उग्रता थी। गॉधीजी मे और पडितजी मे अकसर विचार-भेद होजाता था, परन्तु आपस में प्रेम बहुत था।

पडित जवाहरलाल मे त्याग, प्रेम, सादगी और स्वाभिमान की प्रचुरता थी। वह समुद्र के समान गहरे थे और बालक के समान भोले। उनमे प्राकृतिक झरने जैसी उदारता और सरलता थी। किसी को भी कष्ट में देखकर उनकी आत्मा हिल उठती थी।

पडित जवाहरलाल साहस के पुतले थे। आपत्ति से टकराने मे उन्हे आनद आता था। कबीलो मे गोलियो की बौछारो के बीच जाना और काश्मीर मे फौजी बर्छियो के सामने छाती टिकादेना आपके साहस के ज्वलन्त उदाहरण है।

पडितजी सौन्दर्य के प्रेमी थे। गुलाब का फूल आपको बहुत पसन्द था। नृत्य, सगीत, प्रदर्शनी, खेल, तमाशे सभी का आपको शौक था।

आप हर धर्म को सम्मान की दृष्टि से देखते थे। गीता मे आपको श्रद्धा थी। रूढिवादिता आपको छू तक नही गई थी।

पडित जवाहरलाल सही मायने मे नए भारत के निर्माता थे। यदि भारत को स्वतन्त्र कराने का श्रेय महात्मा गाँधी को पहुँचता है तो स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् नए भारत का निर्माण करने का सेहरा पडित जवाहरलाल के सिर पर है।

पडित जवाहरलाल ने भारत को नव निर्माण की जो दिशाएँ प्रदान की है उनपर चलकर एक दिन राष्ट्र सशक्त और सम्पन्न बनेगा।